CMYK

दैनिक

जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

n वर्ष : 10 अंक : 227 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, बुधवार 10 सितम्बर, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 2 रुपए ■ पृष्ठ : 8+st

45 मिनट की विधायक दल की बैठक में छा गए भजन लाल

अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्र की रिपोर्ट प्रभारी जिला मंत्री को देने कि कहीं बात, आओ गांव चले और आओ शहर चले शिविर में भी उपस्थित रहने की की अपील

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मंगलवार को विधानसभा परिसर में भाजपा विधायक दल की बैठक ली यह बैठक करीब 45 मिनट तक चली इस बैठक की सबसे बड़ी खासियत यह रही कि यह बैठक बहुत ही अच्छे और खुशनुमा माहौल में आयोजित हुई बैठक में जहां मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की बातों को विधायकों ने बहुत ही गंभीरता से और ध्यानपूर्वक सुना तो विधायकों का व्यवहार भी भजन लाल शर्मा के प्रति पूरी तरह से सकारात्मक नजर आया जो यह दिखाता है कि भले ही भाजपा के दिल्ली दरबार ने विधायक दल के नेता के रूप में भजन लाल शर्मा को चुनाव हो लेकिन पार्टी के विधायक भी दिल और दिमाग से भजन लाल शर्मा के साथ कंधे से कंधा लगाकर खड़े हुए दिख रहे हैं भाजपा विधायकों में कहीं भी किसी भी तरह का आपस में ना तो मनमुटाव है और ना ही कोई गुटबाजी जैसी स्थिति अभी भाजपा विधायक दल की

बैठक में बनी हुई है कुल मिलाकर भजन लाल शर्मा को पार्टी के सभी विधायकों का पूरा समर्थन मिला हुआ है और भजनलाल शर्मा ने भी मंगलवार को विधानसभा परिसर में हुई बैठक में पार्टी के विधायकों को पूरा सम्मान दिया और उन्होंने प्रत्येक विधायक से खुश मिजाज से बातचीत की भजन लाल शर्मा का व्यवहार और उनकी बॉडी लैंग्वेज देखकर पार्टी के सभी विधायक काफी खुश नजर आए इस बैठक में भजनलाल शर्मा ने विधायकों से कहा की भारी बरसात की वजह से उनके निर्वाचन क्षेत्र में जो हालात बने हुए हैं जो नुकसान हुआ है उसकी संपूर्ण रिपोर्ट पार्टी के जिला प्रभारी मंत्री को दे, फसलों को कितना नुकसान हुआ कितनी पशु हानि हुई कितनी जनहानि हुई कितनी सड़के डैमेज हुई जो जो नुकसान जिस जिस क्षेत्र में हुआ है उसकी संपूर्ण रिपोर्ट जिला प्रभारी को दे ताकि पीड़ित परिवारों को मुआवजा देने में आसानी रहे मुख्यमंत्री शर्मा ने पार्टी के विधायकों से यह भी कहा कि आने वाले दिनों में आओ गांव चले और आओ शहर चले अभियानों में खुद भी मौजूद रहे और लोगों को ज्यादा से ज्यादा राहत देने का प्रयास करें मुख्यमंत्री शर्मा ने विधायकों से कहा कि अगर वे इन शिवरों में मौजूद रहेंगे तो अधिकारी और भी जिम्मेवारी से अपने काम को अंजाम तक पहुंचाएंगे इसलिए इन शिविरों में हर हाल में विधायक अपनी उपस्थिति दर्ज करवाए ताकि इन अभियानों में लोगों की समस्याओं का त्वरित गति से निस्तारण हो सके उन्होंने कहा राजस्थान विधानसभा में धर्मांतरण विरोधी बिल के संदर्भ में हो रही चर्चा में शामिल होने के लिए भी विधायकों से कहा और कहा कि इस बिल की चर्चा में विधायक खुलकर अपनी बात रखें जानकार लोगों का कहना है कि विधानसभा के चालू सत्र में ही नहीं बल्कि इससे पहले भी भजनलाल सरकार के शासनकाल में जो विधानसभा सत्र अब तक आयोजित हुए हैं उन सभी सत्रों में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा समय-समय पर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते रहे हैं और पार्टी के विधायकों से नियमित रूप से विधानसभा में भी मिलते रहे हैं शर्मा का यह व्यवहार सबको अच्छा भी लगता है ऐसा नहीं है कि विधानसभा परिसर में अपने कक्ष में भजनलाल शर्मा सिर्फ सत्ता पक्ष के विधायकों से ही मिलते हैं बल्कि कई विपक्ष के विधायक भी उनसे मुलाकात करते रहे हैं मंगलवार को भी कांग्रेस के विधायक मनोज मेघवाल अनिल शर्मा और कई अन्य विधायकों ने भजनलाल शर्मा से मुलाकात की ।

हंगामा और लंबी बहस के बाद धर्मांतरण प्रतिषेध बिल पास

गृहमंत्री जवाहर सिंह ने कहा कांग्रेस चर्चा से भाग रही है जबकि अलवर क्षेत्र में धर्मांतरण की घटनाएं बढ़ रही है

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। विधानसभा में मंगलवार को राजस्थान विधि विरुद्ध धर्म सम परिवर्तन प्रतिषेध विधायक 2025 पर लंबी बहस और भारी हंगामा के बीच आखिरकार बिल पारित कर दिया गया सदन में इस विधेयक पर चर्चा के दौरान अलग-अलग दलों और निर्दलीय विधायकों ने अपनी राय प्रकट की भारत आदिवासी पार्टी के विधायक थावरचंद ने कहा कि आदिवासी किसी भी वर्ण व्यवस्था में शामिल नहीं रहे हैं और उनका स्वतंत्र धर्म और संस्कृति है उन्होंने मांग की की आदिवासियों का अलग धर्म कोड होना चाहिए और जबरन धर्म परिवर्तन की स्थिति में उन्हें हिंदू के बजाय उनके मूल धर्म यानी आदिवासी धर्म में गिना जाना चाहिए निर्दलीय विधायक रविंद्र सिंह भाटी ने बिल का समर्थन करते हुए कहा कि धर्मांतरण के खिलाफ कठोर कानून जरूरी है ताकि भोले भाले लोगों और आदिवासियों को बचाया जा सके उन्होंने कहा कि इस बिल का इस्तेमाल राजनीतिक प्रताड़ना के लिए नहीं होना चाहिए लेकिन दूषित मानसिकता वाले लोगों को किसी भी हालत में नहीं बक्शा जाना चाहिए भाजपा विधायक चंद कृपलानी ने कहा कि कांग्रेस हमेशा धर्म विरोधी रही है जबकि सरकार धर्म की रक्षा के लिए गंभीर प्रयास कर रही है बिलाड़ा विधायक अर्जुन लाल ने कहा कि लाइव इन रिलेशनशिप और बेटियों को बहला फुसलाकर कर भागने के मामलों में भी कानून सख्त होना चाहिए ताकि परिवारों पर झूठे मुकदमे ना हो गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह ने कहा कि देश केज्यादातर राज्यों में ऐसे कानून पहले से ही लागू हैं राजस्थान में भी मिशनरीज द्वारा दलितों और पिछड़ों को निशाना बनाए जाने की घटनाएं होती रही हैं उन्होंने विपक्ष और नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली पर आरोप लगाया कि कांग्रेस चर्चा से भाग रही है जबकि अलवर क्षेत्र में धर्मांतरण की घटनाएं ज्यादा हो रही है बीजेपी विधायक बाल मुकुंद आचार्य ने कहा कि प्रदेश में लव जिहाद के जरिए मासूम बेटियों को निशाना बनाया जा रहा था उन्हें डराया धमकाकर और वीडियो बनाकर धर्म परिवर्तन करवाया जाता था यह कानून बेटियों को सुरक्षा देगा उन्होंने विपक्ष पर आरोप लगाया कि उसमें ऐसे लोग हैं जो लव जिहाद के समर्थक हैं और इसी वजह से संसद में हंगामा कर रहे हैं आखिरकार सदन में हंगामय और विरोध के बीच राजस्थान विधि विरुद्ध धर्म परिवर्तन प्रतिषेध बिल 2025 पास कर दिया गया सरकार का कहना है कि यह कानून जन भावनाओं के अनुरूप है और इसे जबरन या गुपचुप तरीके से होने वाले धर्मांतरण पर अंकुश लग सकेगा ।

प्रदेश में रेल संचालन के विस्तार को लेकर गंभीर और अलर्ट हैं भजनलाल शर्मा

कल जयपुर में रेल मंत्री अशिवनी वैष्णव से कर सकते हैं मुलाकात

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा प्रदेश में सड़क और हवाई सेवाओं के विस्तार के लिए ही सजग और चौकस नहीं है बल्कि प्रदेश में ट्रेनों का ज्यादा से ज्यादा संचालन हो और प्रदेश में हर कोने में रेल पटरी पहुंचे इसके लिए वे लगातार केंद्रीय रेल मंत्री से मुलाकात करते रहे हैं कल 11 सितंबर को रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव का जयपुर दौरा है जानकारी मिली

है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा अशिवनी वैष्णव से मुलाकात कर सकते हैं पिछले दिनों दिल्ली दौरे के दौरान भी भजन लाल शर्मा ने अश्वनी वैष्णव से मुलाकात की थी और प्रदेश में ज्यादा से ज्यादा रेल संचालन सुविधा के विस्तार और विकास के बारे में बातचीत की थी अब जिस तरह से रेल मंत्री जयपुर दौरे पर आ रहे हैं उसके बाद माना जा रहा है कि कहीं ना कहीं आने वाले दिनों में प्रदेश में कहीं और बड़े रेल प्रोजेक्ट नजर आ सकते हैं इससे पहले मंगलवार को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने डूंगरपुर रतलाम वाया बांसवाड़ा रेल परियोजना के क्रियान्वयन को लेकर संबंधित विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित की इस बैठक के आयोजन के पीछे भी यही कारण बताया जा रहा है कि कल 11 सितंबर को रेल मंत्री अशिवनी वैष्णव का जयपुर दौरे पर आ रहे हैं इसलिए इस महत्वपूर्ण रेल परियोजना को लेकर भी दोनों नेताओं के बीच बातचीत होना स्वाभाविक है इसलिए मंगलवार को भजनलाल शर्मा ने इस महत्वपूर्ण रेल परियोजना के लिए जमीन संबंधी विषय पर अधिकारियों से बातचीत की है इसके अलावा केंद्रीय भंडारण निगम की ओर से भरतपुर में रेलवे टर्मिनल स्थापना को लेकर भी मंगलवार को मुख्यमंत्री शर्मा ने संबंधित अधिकारियों से बातचीत की । इसमें कोई संदेह नहीं अन्य राज्यों की तुलना में राजस्थान ट्रेन संचालन में पीछे है हालांकि नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद राजस्थान में ट्रेन संचालन में अच्छा इजाफा हुआ है कई नई ट्रेन शुरू हुई है और नई रेलवे ट्रैक भी बने हैं लेकिन अभी भी कहीं ना कहीं अन्य राज्यों की तुलना में राजस्थान ट्रेन संचालन में पीछे है इसलिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा इसी कोशिश में जुटे हुए हैं कि राजस्थान भी अन्य राज्यों की तरह ट्रेन संचालन में अग्रणी भूमिका निभाई क्योंकि भजनलाल शर्मा राइजिंग राजस्थान के क्रियान्वयन को लेकर भी काफी गंभीर हैं वे जानते हैं कि जब राइजिंग राजस्थान से प्रदेश में उद्योगों का नया माहौल बनेगा तो जाहिर सी बात है आवागमन के साधनों में भी वृद्धि होना जरूरी है इसीलिए प्रदेश में ज्यादा से ज्यादा ट्रेन संचालन के विषय पर भजन लाल शर्मा पूरा फोकस रखे हुए हैं ।

सीपी राधाकृष्णन देश के नए उपराष्ट्रपति, उम्मीद से ज्यादा वोट मिले

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। देश के उपराष्ट्रपति पद पर एनडीए उम्मीदवार सीपी राधा कृष्ण मंगलवार को चुन लिए गए मंगलवार को हुए चुनाव में राधाकृष्णन को 452 और इंडिया गठबंधन के उम्मीदवार सुदर्शन रेड्डी को 300 मत मिले द्य टोटल 768 वोट डाले गए थे जिनमें 15 वोट अवैध पाए गए जिस तरह से सांसदों के 15 वोट अवैध पाए गए हैं वह कहीं ना कहीं चिंता का विषय जरूर है जब सांसद जैसे महत्वपूर्ण पद पर बैठा व्यक्ति वोट डालने की प्रक्रिया में कहीं ना कहीं कमी छोड़ दे तो फिर जाहिर तौर पर यह तो कहा जाएगा कि कहीं ना कहीं सांसदों को भी वोट डालने की प्रक्रिया को अभी बारीकी से समझाना जरूरी है एनडीए उम्मीदवार राधाकृष्णन को 452 वोट मिले हैं जो उम्मीद से ज्यादा बताई जा रहे हैं इसलिए जानकार लोगों का कहना है कि कहीं ना कहीं एनडीए गठबंधन के रणनीतिकारों को इंडिया गठबंधन के कुछ सांसदों का समर्थन हासिल करने में सफलता हासिल कर ली इसीलिए राधाकृष्णन को उम्मीद से ज्यादा मत मिले हालांकि ऐसा नहीं है कि उपराष्ट्रपति पद के चुनाव में पहली बार सांसदों के सांसदों के वोट अवैध घोषित हुए हो इससे पहले भी सांसदों के वोट अवैध घोषित हुए हैं लेकिन 15 सांसदों के वोट अवैध घोषित होना चिंता का विषय जरूर है अभी यह कहना काफी मुश्किल है कि जिन सांसदों के वोट अवैध पाए गए हैं वह इंडिया गठबंधन के सांसद थे या फिर एनडीए गठबंधन के या फिर इंडिया और एनडीए दोनों गठबंधन से जुड़े सांसद थे लेकिन किसी भी गठबंधन से जुड़े सांसदों का इस तरह से वोट डालने की प्रक्रिया में कमी छोड़ना कहीं ना कहीं चिंता का विषय जरूर है इससे पहले मंगलवार को सुबह उपराष्ट्रपति पद के लिए मतदान की प्रक्रिया शुरू हुई प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एनडीए गठबंधन की ओर से सबसे पहले वोट डाला इसके बाद में अन्य सांसदों ने मताधिकार का प्रयोग किया इंडिया गठबंधन की ओर से भी राहुल गांधी प्रियंका गांधी और अन्य सांसदों ने वोट डाले बाद में मंगलवार को शाम को वोटो की गिनती का काम पूरा हुआ इसमें एनडीए उम्मीदवार सीपी राधा कृष्ण ने बड़े मतों के अंतर से इंडिया गठबंधन के उम्मीदवार बी सुदर्शन रेड्डी को हरा दिया ।

नेपाल पर मिलिट्री का कब्जा, राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री का इस्तीफा, भारतीय सीमा पर हाई अलर्ट

भारत ने अपने नागरिकों से कहा यात्रा न करें, नेपाल में रह रहे भारतीयों को भी सड़कों पर नहीं निकलने की हिदायत, नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री झरनाथ की पत्नी जिंदा जली

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। नेपाल में मंगलवार को भी हिंसा का तांडव जारी रहा, नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा और राष्ट्रपति रामचंद्र पेंडल के इस्तीफा देने के बावजूद भी काठमांडू सहित नेपाल के कई शहरों में हजारों युवा सड़कों पर है मंगलवार को कई जगहों पर तोड़फोड़ और आगजनी की घटनाएं हुई संसद भवन और कई मंत्रियों के घरों पर आगजनी और तोड़फोड़ की घटनाएं हुई है कई जगहों पर हिंसा की गतिविधियों

के बीच जेल से कैदी भाग गए हैं भीषण आगजनी में नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री झरना खनाल की पत्नी रवि लक्ष्मी कि जिंदा जलने से मौत हो गई है प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे चुके केपी शर्मा नेपाल से भागने की तैयारी में है हालांकि युवाओं को शांत करने के लिए केपी शर्मा ने तुरंत बैठक भी बुलाई और सोशल मीडिया पर लगाया गया प्रतिबंध हटा भी दिया गया लेकिन इसके बावजूद भी युवाओं का गुस्सा जारी रहा और सांसदों और कई मंत्रियों के घरों पर प्रदर्शनकारियों ने हिंसक गतिविधियों को अंजाम दिया पूरा नेपाल हिंसा में जल रहा है इसलिए भारतीय सीमा पर भी हाई अलर्ट जारी कर दिया गया है और भारत की सरकार ने नेपाल में रह रहे भारतीयों को कहा है कि सड़कों पर नहीं निकले तथा भारत के नागरिकों को भी नेपाल नहीं जाने की अपील की है । नेपाल में चल रहे हिंसक प्रदर्शनों के कारण भारत नेपाल सीमा पर सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत कर दिया गया है भारत के सीमा सुरक्षा बल सशस्त्र सीमा बल ने निगरानी बढ़ा दी है ताकि नेपाल में चल रही अशांति का असर भारतीय क्षेत्र में नहीं हो पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले में पानी टंकी सीमा पर विशेष रूप से हाई अलर्ट जारी कर दिया गया है यह कदम नेपाल में सोशल मीडिया पर प्रतिबंध और सरकारी भ्रष्टाचार के खिलाफ शुरू हुए प्रदर्शनों के बाद उठाया गया है जिसके चलते नेपाल के प्रधानमंत्री के पी शर्मा ने मंगलवार को इस्तीफा दे दिया नेपाल के हालात को देखते हुए भारत सरकार ने अपने नागरिकों को यात्रा से बचने की सलाह जारी की है द्य जानकारी के अनुसार भारत और नेपाल के बीच 1751 किलोमीटर लंबी खुली सीमा है जो उत्तराखंड बिहार उत्तर प्रदेश पश्चिम बंगाल और सिक्किम राज्यों से होकर गुजरती है इस खुली सीमा के कारण दोनों देशों के नागरिक बिना किसी प्रतिबंध के आवागमन कर सकते हैं जिससे सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक संबंध मजबूत होते हैं हालांकि नेपाल में अशांति के दौरान इस खुली सीमा पर सुरक्षा बढ़ाना जरूरी हो जाता है ताकि कोई अवांछित गतिविधि भारतीय क्षेत्र में न फैले पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले में पानी टंकी सीमा पर पुलिस और अर्धसैनिक बलों की तैनाती बढ़ा दी गई है उत्तर प्रदेश और अन्य सीमावर्ती क्षेत्रों में भी इसी तरह के अलर्ट जारी किए गए हैं । भारत नेपाल सीमा पर पहले भी नेपाल में अशांति के दौरान अलर्ट जारी किए गए हैं 2015 में मधेश आंदोलन के दौरान भी सीमा पर हाई अलर्ट जारी किया गया था जिससे व्यापार और सीमा पर आवागमन को प्रभावित किया था हालांकि नेपाल की मिलिट्री ने मोर्चा संभाल लिया है और मिलिट्री प्रशासन हर तरह से नेपाल में शांति के प्रयासों में जुटा हुआ है लेकिन हालात बिगड़ते जा रहे हैं । प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के स्थिति के बाद भी युवाओं का गुस्सा शांत नहीं हो रहा ।

विधानसभा में कैमरा लगाने को लेकर विपक्ष का हंगामा, जोगेश्वर गर्ग ने कहा सदन कोई बेडरूम नहीं

टीकाराम जूली ने कहा विधानसभा में कैमरे लगाना सत्ता पक्ष और विपक्ष के सदस्यों की निजता का है हनन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान विधानसभा में मंगलवार को सदन में कैमरे लगाए जाने की बात को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष के सदस्यों के बीच तीखी बहस हुई विपक्ष के सदस्यों ने कैमरे लगाने का विरोध किया और कहा कि यह सदस्यों की निजता का हनन है तो दूसरी तरफ भाजपा विधायक दल के सचेतक जोगेश्वर गर्ग ने कहा राजस्थान विधानसभा एक पवित्र सदन है यह किसी का बेडरूम नहीं है सदन में सदन की

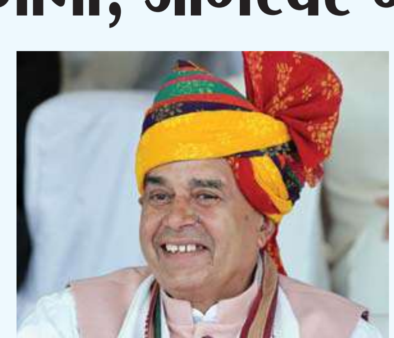

गरिमा के अनुरूप ही सदस्यों का आचरण और व्यवहार होना चाहिए जिस पर विपक्ष के सदस्यों ने सदन में को हल्ला मचाना शुरू कर दिया इस बीच विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने विपक्ष के सदस्यों को कहा कि वह बताएंगे कि क्यों कैमरे लगाने पड़े इसका जवाब वे खुद देंगे लेकिन विपक्ष के सदस्य नहीं माने और हंगामा मचाते रहे सदन में प्रतिपक्ष के नेता टीकाराम जूली ने कहा कि विधानसभा में पहले से ही कैमरे मौजूद हैं फिर विपक्ष के सदस्यों को ही टारगेट करके उनकी ओर कैमरे क्यों लगाए गए उन्होंने यह भी कहा कि आज हम इधर बैठे हैं कल उधर भी बैठ सकते हैं इसलिए कैमरे लगाना विपक्ष के सदस्यों की निजता का हनन ही नहीं है बल्कि सत्ता पक्ष के सदस्यों की निजता का हनन भी है इसलिए कैमरे हटाए जाएं जूली ने कहा कि सदन में ना तो विपक्ष को बोलने दिया जा रहा है ना ही किसी बिल पर विपक्ष की आवाज को सुना जा रहा है कभी माइक बंद किया जाता है और अब विपक्ष को टारगेट करके कैमरे लगाए गए हैं आखिर विपक्ष के सदस्यों की गतिविधियों पर सरकार इस तरह से क्यों नजर रख रही है आखिर सरकार को विपक्ष से इतनी असुरक्षा क्यों हो रही है कांग्रेस के वरिष्ठ सदस्य राजेंद्र पारीक ने भी कैमरे लगाने पर एतराज जताया और कहा कि यह परंपरा ठीक नहीं है कैमरे हटाने चाहिए जिस पर संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि उन्हें इस बात की जानकारी नहीं है कि यहां कैमरे लगाए गए हैं लेकिन विपक्ष सार्थक बहस करें सदन में अच्छी चर्चा हो सदन अच्छी तरह से चले यह सत्ता पक्ष भी चाहता है जोगाराम पटेल ने यह भी कहा कि आसान कभी यह प्रयास रहता है कि सदन ठीक तरह से चले लेकिन कई बार छोटी-मोटी बातों पर तनाव हो जाता है जिसे बातचीत के माध्यम से दूर भी किया जाता है ऐसा कोई पहली बार नहीं होता ऐसा सालों से सदन में होता आया है लेकिन सदन में अच्छी बहस हो विपक्ष सत्ता पक्ष को अपनी सलाह दे राय दे सत्ता पक्ष यह भी चाहता है लेकिन सदन में हंगामा और हो हल्ला नहीं होना चाहिए क्योंकि राजस्थान विधानसभा का यह इतिहास रहा है कि अन्य राज्यों की तुलना में राजस्थान विधानसभा का गौरव वाला इतिहास रहा है इसलिए सत्ता पक्ष आता है कि विपक्ष सदन चलाने में पूरा सहयोग करें और सार्थक बहस करें लेकिन विपक्ष के सदस्य कैमरा हटाने की मांग को लेकर हल्ला मचाते रहे इस दौरान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी बार-बार यह कहते हुए सुने गए कि कमरे क्यों लगाए इसका जवाब वे खुद देंगे लेकिन इसके बावजूद भी विपक्ष के सदस्य शांत नहीं हुए तब भाजपा विधायक दल के सचेतक जोगेश्वर गर्ग ने कहा कि सदन किसी का बेडरूम नहीं है यह पवित्र स्थान है यहां पर सदस्यों को अपना आचरण और व्यवहार शुद्ध रखना चाहिए यहां सदन में बैठकर कोई अपने मन से कुछ भी नहीं कर सकता यहां पर मर्यादा का ध्यान रखना पड़ता है जिस पर विपक्ष के सदस्य और उत्तेजित हो गए और नारेबाजी करने लगे विपक्ष के सदस्य नारेबाजी करते रहे हंगामा मचाते रहे और हंगामे के बीच ही धर्मांतरण विरोधी बिल पर सदस्य अपने विचार प्रकट करते रहे ।

CMYK

अलवर जयपुर टाइम्स

जयपुर, बुधवार
10 सितम्बर, 2025

छात्रावास में छात्रों से मारपीट व गाली-गलौज का मामला

कोतवाली थाने में मामला दर्ज, गेट पर की नारेबाजी

जयपुर टाइम्स

अलवर(नि.सं.)। कोतवाली थाना क्षेत्र स्थित शहर के रोड नंबर 2 स्थित मेव बोर्डिंग स्थित छात्रावास में रहने वाले बच्चों के साथ मारपीट का मामला सामने आया है जिसके बाद बच्चों ने कोतवाली थाने में मामला दर्ज कराया है छात्रों का कहना है कि परिवार से उनके परिवारजन उनसे मिलने आते हैं तो गेट पर ही रोक दिया जाता है और गाली गलौज की जाती है। जिसकी शिकायत सदर शेख मोहम्मद से की गई तो उनके द्वारा उनके साथ मारपीट और गाली गलौज की गई वहीं अन्य पदाधिकारी सफी मोहम्मद ने भी गाली गलौज की वही एक छात्र की शर्ट भी फाड़ दी ऐसा पहली बार नहीं हुआ है हर बार इसी तरह की वारदात होती है जिसको लेकर जब शिकायत करते हैं तो हमें ही बुरा भला कहा जाता है छात्रों ने कहा इसलिए कोतवाली थाने में मामला दर्ज कराने आए हैं। इस दौरान छात्रों ने कोतवाली गेट पर नारेबाजी कर प्रदर्शन किया।

एनसीसी भर्ती प्रकिया सम्पन्न

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(नि.सं.) कस्बे के राजकीय महाविद्यालय में 3 राज आर्ल्ड स्काड्रन एन.सी.सी की भर्ती परीक्षा मंगलवार को महाविद्यालय के खेल परिसर में आयोजित हुई भर्ती परीक्षा में महाविद्यालय के प्रथम वर्ष के 200 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। भर्ती प्रक्रिया हेतु कमान अधिकारी कार्यालय अलवर के सी.ओ राहुल शर्मा के निर्देशन में दौड परीक्षण पुस-अप, सिट-अप परीक्षण लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के माध्यम से एन.सी.सी कैडेटस का चयन किया गया। प्राचार्य डॉ. के.एल. मीना ने बताया कि एन.सी.सी. केडेट्स की भर्ती परीक्षा हेतु विद्यार्थी प्रातः 08 बजे ही महाविद्यालय खेल परिसर में उपस्थित हो गये थे। कमान अधिकारी कार्यालय से भर्ती के दौरान नूर अहमद, सूबेदार, महेश चन्द, ईस्लाम भी मौजूद रहे। भर्ती प्रक्रिया के पश्चात एन.सी.सी. कार्यालय का उद्घाटन किया गया। इस दौरान एन.सी.सी. अधिकारी डॉ. रतिराम जाटय, डॉ. आंचल मीना, डॉ. जगत सिंह, डॉ. पी.एम. मीना, डॉ. अशोक काकोडिया आदि संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

69 वीं जिला स्तरीय (14 वर्षीय छात्र/छात्रा) क्रीडा प्रतियोगिता आज से

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(नि.सं.) 69 वीं जिला स्तरीय (14 वर्षीय छात्र/छात्रा) क्रीडा प्रतियोगिता (सॉफ्ट बॉल, कुश्ती) का शुभारंभ आज प्रातः 9 बजे राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय नं. 2 राजगढ़ में किया जाएगा। कार्यक्रम संयोजक नरेश कुमार सैनी ने बताया कि कार्यक्रम की मुख्य अतिथि उपखंड अधिकारी सीमा मीना रहेंगी वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी लीलावती मीना करेंगी। कार्यक्रम के अति विशिष्ट अतिथि पुलिस उपाधीक्षक मनीषा मीना, तहसीलदार कल्याण सहाय मीना, नगरपालिका अध्यक्ष सतीश दुहारिया, भामाशाह तरूण कुमार पाण्डेय, पुष्पा विरमानी, लुपिन के स्टेट हेड अनिल गुप्ता तथा राजस्थान शिक्षक संघ प्रगतिशील के हरिकिशन यादव होंगे वहीं कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि पूर्व मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी रामेश्वर दयाल मीना, राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक प्रहलाद राय सैनी, राज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित नंदलाल बैरवा, स्वामी अमन भारती महाराज, पूर्व पार्षद उमेश कुमार मण्डावरा तथा पार्षद मांगेलाल सैनी होंगे। उन्होंने बताया कि प्रतियोगिता में 54 टीमों ने रजिस्ट्रेशन करवाया है।

शहर में बढ़ रही चोरी की वारदाते

सुने मकान को बनाया निशाना

जयपुर टाइम्स

अलवर(नि.सं.)। कोतवाली थाना क्षेत्र चकला गुंदी मोहल्ले में बैंक कर्मचारी के सुने मकान को चोरों ने निशाना बना लिया चोर छत से नीचे उतरे और गेट तोड़कर मकान घुसे और कमरों का ताला तोड़कर पीतल के बर्तन गिफ्ट आइटम चोरी कर ले गए इस मामले की सूचना मिलने ही स्थानीय लोगों ने मकान मालिक सुरेंद्र आर्य को सूचना दी उसके बाद मौके पर मकान मालिक पहुंचा तो मकान का ताला टूटा हुआ था और अंदर कमरे के भी ताले टूटे हुए मिले कमरे में अंदर जाकर देखा तो पीतल के बर्तन सहित गिफ्ट आइटम चोरी मिला इसके बाद मकान मालिक बैंक कर्मचारी सुरेंद्र आर्य ने इस मामले की सूचना कोतवाली थाना पुलिस को दी पुलिस ने मौके पर पहुंचकर घटना का जायजा लिया और मामला दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है मकान मालिक सुरेंद्र आर्य ने बताया कि करीब तीस से पैंतीस हजार रुपए की चोरी का मामला है उनकी मां की तबियत खराब होने पर वह अपनी मां को दूसरे घर ले गए और पीछे से मकान सुना था ऐसे में चोरों ने मौका देखकर चोरी की वारदात को अंजाम दिया।

वोट चोरी के मुद्दे पर कांग्रेस जिला कमेटी की बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

अलवर(नि.सं.)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गाँधी द्वारा देश में हो रही वोट चोरी का खुलासा किया गया है। देश में लोकतंत्र एवं प्रजातंत्र की रक्षा करने तथा भाजपा द्वारा लोकतंत्र पर वोट चोरी कर किये जा रहे प्रहार के विरुद्ध देशव्यापी अभियान चलाया जा रहा है, इसी संदर्भ में मंगलवार को अलवर शहर विधानसभा क्षेत्र के ब्लॉक अध्यक्षों एवं मंडल अध्यक्षों की एक आवश्यक मीटिंग कांग्रेस जिलाध्यक्ष की अध्यक्षता में एवं एआईसीसी पदाधिकारी केके शास्त्री के मुख्य आतिथ्य में मौजपुर हाउस पर आयोजित की गई। तथा वोट चोरी रोकने की रणनीति तय की गई कांग्रेस प्रवक्ता रिपु दमन गुप्ता ने बताया कि मौजपुर हाउस पर एआईसीसी पदाधिकारी केके शास्त्री का कांग्रेस जिलाध्यक्ष व कांग्रेसजनों ने साफा व माला पहनाकर स्वागत किया। मीटिंग में अलवर शहर विधानसभा क्षेत्र के ब्लॉक अध्यक्षों एवं मंडल अध्यक्षों से संगठन की मजबूती और स्टॉप वॉच चोरी पर विस्तृत रूप से चर्चा की गई कांग्रेस जिलध्यक्ष ने कहा कि अखिल भारतीय कॉग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकाअर्जुन खडगे तथा नेता प्रतिपक्ष राहुल गाँधी की अध्यक्षता में महासचिवों एवं प्रदेश प्रभारियों की बैठक में लिये निर्णयानुसार अलवर में भी 14 अगस्त 2025 को 'वोट चोर, गद्दी छोड' अभियान के तहत अलवर में भंवर जितेन्द्र सिंह के नेतृत्व में कैण्डल मार्च निकाला गया तथा 27 अगस्त 2025 को अलवर में 'स्टॉप वोट चोरी' अभियान की शुरूआत कर वाहनों पर 'स्टॉप वोट चोरी' के स्टीकर लगाये गये थे एआईसीसी पदाधिकारी केके शास्त्री ने कहा कि 'स्टॉप वोट चोरी' के स्टीकर अधिक से अधिक संख्या में आमजन तथा कॉंग्रेसजनों के वाहनो पर लगाकर इस अभियान को जन जागृति अभियान बनाने की दिशा में सार्थक प्रयास करने पड़ेंगे मीटिंग में जिला अध्यक्ष, के. के. शास्त्री, रिपु दमन गुप्ता, जे. डी. आर्यन, प्रीतम मेहंदीरत्ता, शोभा साहू, संजय शुक्ला, मुकेश शर्मा, बिजेंद्र सैन, राजेश सैनी, सुदर्शन अरोड़ा, मनोज आहूजा, रिंकू वर्मा, जुबेर खान, जमशेद खान, राम प्रकाश शर्मा, मनीष कोली, योगेश मीणा आदि मौजूद रहे।

18 सितम्बर से जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित होगा 'गांव चलो अभियान'

अभियान के तहत आमजन के मौके पर ही होंगे मूलभूत कार्य

जयपुर टाइम्स

अलवर(नि.सं.)। जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला के निर्देशन में 18 सितम्बर से 'गांव चलो अभियान' जिले में ग्राम पंचायत स्तर पर प्रारम्भ होगा। अभियान के दौरान सप्ताह के प्रत्येक गुरूवार, शुक्रवार एवं शनिवार को प्रत्येक दिवस दो ग्राम पंचायतों में शिविर आयोजित होगा। जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सालुखे गौरव रवीन्द्र ने बताया कि अभियान के दौरान स्वामित्व कार्ड तैयार कर शिविर में संबंधित लाभार्थी को भौतिक रूप से वितरित किए जाएंगे, हरियालो राजस्थान अभियान के तहत वृक्षारोपण कराया जाएगा, स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता संबंधी कार्य कराए जाएंगे। इसी प्रकार आईएचएचएल के लिए आवेदन प्राप्त करने व स्वीकृति जारी करने, नवीन स्वीकृत सामुदायिक शौचालयों की स्वीकृतियां जारी, पूर्व में बने सामुदायिक शौचालयों को क्रियाशील करने, सोक पिट, मैजिक पिट, लीच पिट की स्वीकृतियां जारी करने, घर-घर कचरा संग्रहण व्यवस्था का भौतिक निरीक्षण तथा आरआरसी केंद्र हेतु भूमि आवंटन करने आदि कार्य किए जाएंगे।

आर.एफ.सी. ने शुरू की गैर निष्पादित खातों के निस्तारण हेतु एक मुश्त निपटारा योजना

जयपुर टाइम्स

भिवाड़ी(नि.सं.)। राजस्थान वित्त निगम (आर.एफ.सी.) ने वित्तीय व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए गैर निष्पादित खातों के निस्तारण हेतु विशेष एक मुश्त निपटारा योजना 2025-26 की शुरुआत की है। आर.एफ.सी. भिवाड़ी शाखा के शाखा प्रबंधक प्रकाश सिंह ने बताया कि इस योजना के तहत व्यवसायिक इकाइयाँ अपने पुराने और लंबित खातों का समाधान आसानी से कर सकती हैं। इस योजना के तहत, इच्छुक इकाई को रू. 11,800 पंजीयन शुल्क जमा कराना होगा तथा बकाया मूलधन का कम से कम 10 प्रतिशत अग्रिम राशि के रूप में जमा करना आवश्यक है। इसके बाद खातों का निस्तारण कम से कम 20 प्रतिशत से अधिकतम 70 प्रतिशत मूलधन राशि प्राप्त कर पूरा ब्याज माफ करते हुए किया जाएगा। इस योजना का लाभ उठाकर व्यवसायिक इकाइयाँ अपने लम्बित ऋण को समाप्त कर सकते हैं, जिससे उनकी वित्तीय स्थिति सुदृढ़ होगी। यह एक मुश्त निपटारा योजना 31 मार्च 2026 तक लागू रहेगी। योजना से संबंधित विस्तृत जानकारी एवं पंजीयन हेतु राजस्थान वित्त निगम (आर.एफ.सी.), भिवाड़ी शाखा कार्यालय में संपर्क किया जा सकता है।

पूर्व सदर पर छात्रों से मारपीट का आरोप, कोतवाली थाने के सामने धरना

जयपुर टाइम्स

अलवर,(नि.सं.) अलवर शहर के रोड नंबर दो स्थित मेव बोर्डिंग हॉस्टल में मंगलवार को छात्रों और पूर्व सदर शेर मोहम्मद के बीच विवाद बढ़ गया। छात्रों ने पूर्व सदर पर मारपीट और गाली-गलौज करने का आरोप लगाया। इसके विरोध में सभी छात्र कोतवाली थाने के सामने धरने पर बैठ गए और कार्रवाई की मांग की। घटना की शुरुआत सोमवार को हुई, जब एक छात्र के परिजन हॉस्टल में मिलने पहुंचे। छात्रों का आरोप है कि उस समय कोषाध्यक्ष शफी मोहम्मद ने अभिभावकों से अभद्रता की। इस बात से नाराज होकर मंगलवार दोपहर छात्र पूर्व सदर से शिकायत करने ऑफिस पहुंचे। वहां गर्मागर्मी हो गई और शेर मोहम्मद छात्रों पर भड़क गए। इस दौरान कुछ छात्रों ने मारपीट का आरोप लगाया, वहीं एक छात्र की शर्ट भी फट गई। इसके बाद सभी छात्र एकजुट होकर कोतवाली थाने पहुंचे और पूर्व सदर शेर मोहम्मद, कोषाध्यक्ष शफी मोहम्मद और शौकीन के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराने की मांग की। तुरंत कार्रवाई न होने पर छात्रों ने थाने के मुख्य गेट पर धरना-प्रदर्शन शुरू कर दिया। छात्रों का कहना है कि जब तक दोषियों पर कार्रवाई नहीं होती, वे अपना विरोध जारी रखेंगे। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

नकली सोने की ईंट देकर 6 लाख की ठगी, चार साल बाद आरोपी गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

अलवर,(नि.सं.) अलवर के एनईबी थाना पुलिस ने चार साल पुराने ठगी के मामले में बड़ी कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी ने अपने साथी के साथ मिलकर मुंबई निवासी युवक को नकली सोने की ईंट देकर 6 लाख रुपये की ठगी की थी। घटना वर्ष 2021 की है, जब आरोपियों ने खुद को सोना बेचने वाला बताकर पीड़ित को जाल में फंसाया था। पुलिस के अनुसार, मुंबई के काशी मीरा निवासी इकबाल पुत्र अब्दुल रज्जाक से आरोपियों ने संपर्क किया और बताया कि मकान की खुदाई में सोने की ईंट मिली है। विश्वास दिलाने के लिए पहले आधा तोला असली सोने का सैंपल भेजा। इस पर भरोसा कर इकबाल 6 लाख रुपये लेकर अलवर पहुंचा। आरोपियों ने उसे नकली सोने की ईंट थमा दी। जब इकबाल ने घर जाकर जांच कराई तो पता चला कि ईंट नकली है। इसके बाद उसने 27 फरवरी 2021 को एनईबी थाने में मुकदमा दर्ज कराया। थाना प्रभारी दिनेश चंद मीणा ने बताया कि आरोपी पिछले चार साल से फरार थे। सोमवार को मुखबिर की सूचना पर मंडी मोड़ से सहाबुद्दीन (35) निवासी गाजूका पहाड़ी को गिरफ्तार कर लिया गया। उसका साथी अभी फरार है, जिसकी तलाश जारी है। पुलिस ने सहाबुद्दीन को न्यायालय में पेश करने की कार्रवाई शुरू कर दी है।

खैरथल-तिजारा में पहली बार मामा सुपारी के सैंपल लिए, 3500 पाउच जब्त

जयपुर टाइम्स

अलवर,(नि.सं.) खाद्य सुरक्षा मुख्यालय जयपुर की ओर से चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत खैरथल-तिजारा जिले में पहली बार मामा सुपारी के सैंपल लिए गए। इस दौरान खाद्य विभाग की टीम ने करीब 3500 पाउच मौके पर ही जब्त किए। इसके अलावा मास्टरजी ब्रांड गुलाब शरबत, लाल मिर्च पाउडर, पनीर और बूंदी रायता सहित कई खाद्य पदार्थों के भी सैंपल लिए गए। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अरविंद गेट ने बताया कि यह कार्रवाई विभिन्न दुकानों और प्रतिष्ठानों पर की गई। तिजारा में जगदीश किराना स्टोर से 250 किलो लाल मिर्च पाउडर, रोशन लाल ब्रदर्स से गुलाब शरबत (मास्टरजी ब्रांड), कपूर प्रोविजनल किराना स्टोर से मामा सुपारी तथा राजपाल ढाबा से पनीर और बूंदी रायता के सैंपल लिए गए। फूड इंस्पेक्टर हेमंत कुमार ने बताया कि मामा सुपारी के 3500 पैकेट और लाल मिर्च पाउडर को मौके पर ही जब्त किया गया। सभी कारोबारियों को साफ-सफाई बनाए रखने और खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2006 की पालना सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। कार्रवाई के दौरान टीम में महिपाल सिंह और सुभाष यादव भी मौजूद रहे। स्थानीय व्यापारियों ने आरोप लगाया कि सुपारी बेचने वाली कंपनियां लंबे समय से बिना बिल के माल बेचती हैं। अलवर जिले में करोड़ों रुपए का सुपारी रोजाना खपता है, लेकिन उसका अधिकांश हिस्सा दो नंबर के कारोबार से जुड़ा होता है। यदि इस पर सख्त कार्रवाई हो तो सरकार को भारी राजस्व प्राप्त हो सकता है।

रामगढ़ के युवाओं ने दिखाई मिसाल, पंजाब बाढ़ पीड़ितों के लिए जुटाए 6 लाख रुपए

जयपुर टाइम्स

रामगढ़(नि.सं.) (अलवर), पंजाब में आई भीषण बाढ़ से प्रभावित परिवारों की मदद के लिए रामगढ़ कस्बे के युवा आगे आए हैं। 'पंजाब सहायता' नाम से बनाए गए सोशल मीडिया ग्रुप के माध्यम से चलाए गए इस अभियान में महज सात दिनों में 6 लाख रुपये से अधिक नकद राशि, सैकड़ों राशन किट, कपड़े, बिस्तर और दवाइयां एकत्र की गईं। इस मुहिम की शुरुआत कस्बा निवासी राजन सिंह के आह्वान पर हुई। उनकी पहल पर एडवोकेट लाखन शर्मा, जयराम मीणा, समीर खान, रिंकू रामगढ़िया, संदीप जैन, तरुण शर्मा समेत कई युवाओं ने मिलकर सेवा का बीड़ा उठाया। खास बात यह रही कि इस अभियान में केवल युवा ही नहीं, बल्कि व्यापारी, कर्मचारी और अधिकारी वर्ग भी शामिल हुए। धीरे-धीरे यह प्रयास नगर पालिका क्षेत्र के सैकड़ों परिवारों तक पहुंच गया और लोगों ने दिल खोलकर सहयोग किया। समिति के सदस्यों ने बताया कि इस हफ्ते ही सहायता दल पंजाब रवाना होगा। वहां दो अलग-अलग टीमें राहत कार्य संभालेंगी। एक टीम सामग्री का वितरण करेगी, जबकि दूसरी मेडिकल टीम के साथ मिलकर बीमार और घायल पीड़ितों को प्राथमिक उपचार देगी। राहत सामग्री में राशन किट, आटा, दाल, तेल, नमक, बच्चों के लिए दूध पाउडर, सेनेटरी पैड, गर्म कपड़े, बिस्तर और आवश्यक दवाइयां शामिल की गई हैं। अभियान से जुड़े लक्की कुकरेजा, छगन सैन, विजय शेखावत, गजेंद्र शर्मा, सौकत खान, गौरव सोनी, सचिन, मुकेश यादव, काके सासन और असलम करौली ने कहा कि पंजाब के बाढ़ग्रस्त इलाकों की स्थिति बेहद खराब है और ऐसे समय में इंसानियत सबसे बड़ा धर्म है।

स्वच्छ वायु सर्वेक्षण 2025 में अलवर तीसरे स्थान पर

जयपुर टाइम्स

अलवर(नि.सं.) शहर ने स्वच्छ वायु सर्वेक्षण-2025 में शानदार उपलब्धि हासिल करते हुए देशभर में अपनी श्रेणी में तीसरा स्थान प्राप्त किया है। नई दिल्ली स्थित इंदिरा पर्यावरण भवन के गंगा ऑडिटोरियम में आयोजित सम्मान समारोह में केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेन्द्र यादव ने अलवर जिला कलक्टर एवं नगर निगम प्रशासक डॉ. आर्तिका शुक्ला और नगर निगम आयुक्त जितेन्द्र सिंह नरूका को 25 लाख रुपये की इनामी राशि, प्रमाण पत्र और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। केंद्रीय मंत्री यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री के मिशन लाइफ का उद्देश्य पर्यावरण हितैषी जीवनशैली को बढ़ावा देना है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनकेप) से 130 शहरों में सामूहिक प्रयासों से प्रदूषण में कमी लाई जा रही है। अलवर शहर के प्रदर्शन पर खुशी जताते हुए उन्होंने कहा कि अब हमारी सामूहिक जिम्मेदारी और बढ़ गई है कि अलवर को उत्तर भारत का सबसे स्वच्छ और रमणीय शहर बनाया जाए। जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने कहा कि यह उपलब्धि शासन-प्रशासन और नागरिकों के समन्वित प्रयासों का परिणाम है। अलवर को एनकेप के तहत 24.32 करोड़ रुपये मिले, जिसमें से 90' राशि का उपयोग सड़क मरम्मत, टाइल वर्क, पौधारोपण, मैकेनिकल स्वीपिंग और कचरा निस्तारण जैसे कार्यों पर किया गया। नगर निगम आयुक्त नरूका ने बताया कि इस वर्ष 130 शहरों की तीन श्रेणियों में रैंकिंग की गई, जिसमें 3-10 लाख आबादी वाली श्रेणी में अलवर ने 197.6 अंक अर्जित कर तीसरा स्थान पाया। इस अवसर पर राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग के अध्यक्ष राजेश वर्मा, मंत्रालय के सचिव तन्मय कुमार और अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

समाज कल्याण सप्ताह 1 से 7 अक्टूबर तक प्रदेशभर में

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग आगामी 1 से 7 अक्टूबर तक पूरे प्रदेश में समाज कल्याण सप्ताह मनाएगा। विभागीय मंत्री अविनाश गहलोत ने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशानुसार इस सप्ताह का उद्देश्य अनुसूचित जाति, जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक, विशेष योग्यजन, महिलाओं एवं बच्चों के कल्याणकारी कार्यक्रमों का लाभ पहुंचाना और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जनचेतना जगाना है। सप्ताह के कार्यक्रमों को दिवसवार विभाजित किया गया है। 1 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस, 2 को अनुसूचित जाति कल्याण दिवस, 3 को अपराधी सुधार दिवस, 4 को बाल दिवस, 5 को महिला एवं बालिका कल्याण दिवस, 6 को जनचेतना दिवस और 7 अक्टूबर को विशेष योग्यजन कल्याण दिवस मनाया जाएगा। अतिरिक्त मुख्य सचिव अपर्णा अरोड़ा ने जिला कलक्टरों को निर्देश दिए हैं कि सभी कार्यक्रमों में स्थानीय जनप्रतिनिधियों, स्वयंसेवी संस्थाओं, शिक्षा, श्रम एवं उद्योग विभागों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए। इसके साथ ही मुख्यमंत्री पुनर्वास गृह, बाल कल्याण समिति, नारी निकेतन, छात्रावासों और दिव्यांग गृहों को भी कार्यक्रमों में शामिल किया जाएगा।

राज्यपाल की उपराष्ट्रपति चुनाव में विजयी होने पर राधाकृष्णन को बधाई और शुभकामनाएं

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने सी.पी. राधाकृष्णन को उपराष्ट्रपति चुनाव में विजयी होने पर बधाई और शुभकामनाएं दी है। उन्होंने कहा कि राधाकृष्णन का जीवन राष्ट्र के प्रति समर्पित अनुकरणीय है। उनके नेतृत्व में भारत संवैधानिक मूल्यों और संसदीय परम्पराओं में और सुदृढ होगा।

राज्य स्तरीय हिन्दी दिवस समारोह 14 सितम्बर को- आठ विधाओं के दस लेखकों को मिलेगा हिन्दी सेवा पुरस्कार-2025

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.), भाषा एवं पुस्तकालय विभाग द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार और हिन्दी उन्नयन के लिए दिया जाने वाला 'हिन्दी सेवा पुरस्कार' इस वर्ष आठ विधाओं हिन्दी साहित्य (कथा); हिन्दी साहित्य (कथेतर); संविधान एवं विधि; विज्ञान, तकनीकी एवं अभियांत्रिकी; चिकित्सा विज्ञान एवं स्वास्थ्य (भारतीय चिकित्सा पद्धति सहित); कला, संस्कृति एवं पर्यटन; दर्शन, योग एवं अध्यात्म तथा जनसंचार, पत्रकारिता एवं सिनेमा में प्रदान किये जाएंगे। स्कूल शिक्षा, भाषा एवं पुस्तकालय विभाग के शासन सचिव कृष्ण कुणाल ने बताया कि यह पुरस्कार 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर सवाई मानसिंह चिकित्सा महाविद्यालय के मुख्य सभागार में आयोजित होने वाले राज्य स्तरीय समारोह में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा प्रदान किये जायेंगे। उन्होंने बताया कि इस वर्ष डॉ. कृष्ण कुमार कुमावत को उनके उपन्यास 'लक्ष्य', डॉ. मूलचन्द बोहरा को उनके शैक्षिक निबन्ध संग्रह 'समझ गए ना', डॉ. अनुपम चतुर्वेदी एवं डॉ. दीप्ति चतुर्वेदी को संयुक्त रूप से उनकी पुस्तक 'भारतीय राजनीतिक व्यवस्था', डॉ. पूर्णेन्दु घोष को 'वैज्ञानिक विचार द्वीपों के बीच सामाजिक काव्य पुलों का निर्माण', डॉ. हिमांशु भाटिया को 'सेरेब्रल पाल्सी व्यथा, कथा एवं कानून', डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी को उनके यात्रा वृतान्त 'ओकुहेपा', डॉ. मनोज कुमार गट्टानी को उनकी पुस्तक 'मन सनातन' एवं विजय प्रकाश शर्मा विप्लवी व डॉ. कुंजन आचार्य को संयुक्त रूप से लिखी उनकी पुस्तक 'पत्रकार दीनदयाल उपाध्याय' के लिए सम्मानित किया जाएगा। शासन सचिव ने बताया कि प्रत्येक विधा में लेखक को पुरस्कार स्वरूप पचास हजार रूपये की नकद राशि दी जाएगी।

जोधपुर में पाकिस्तानी नमक की बिक्री बंद, हिमाचल के सेंधा नमक की मांग बढ़ी

जयपुर टाइम्स

जोधपुर(निसं.) कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले और उसके बाद पाकिस्तान से सभी तरह के आयात पर लगे प्रतिबंध का असर अब जोधपुर के बाजारों में साफ दिखाई दे रहा है। पहले यहां पाकिस्तानी गुलाबी नमक धड़ल्ले से बिकता था, लेकिन अब लोगों ने इसे खरीदना बंद कर दिया है। इसके स्थान पर हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले से आने वाला सफेद सेंधा नमक लोकप्रिय हो गया है। पाली रोड पर नमक बेचने वाले परिवारों का कहना है कि वे लंबे समय से यह व्यवसाय कर रहे हैं। सूखचैन राम, जो पंजाब के भटिंडा के रहने वाले हैं, बताते हैं कि जोधपुर में करीब 20 परिवार नमक बेचने का काम करते हैं। पहले वे पंजाब प्रांत और पाकिस्तान के सिंध से आने वाले नमक की बिक्री करते थे, लेकिन तनाव और प्रतिबंधों के कारण अब हिमाचल से नमक लाकर बेच रहे हैं। खरीदारों का भी रुझान हिमाचल के सेंधा नमक की ओर बढ़ा है। स्थानीय महिला पिंकी ने बताया कि वह पाकिस्तान का नमक नहीं खरीदना चाहतीं। हिमाचल का नमक भले ही 10 से 15 रुपये किलो महंगा है, लेकिन यह पाचन क्रिया बेहतर करने के साथ बीपी और शुगर मरीजों के लिए लाभकारी है। साथ ही इसे व्रत में भी इस्तेमाल किया जाता है। गौरतलब है कि पाकिस्तान के झेलम जिले की खेवड़ा खदान से गुलाबी नमक निकलता है, जो दुनिया की सबसे बड़ी और पुरानी खदानों में से एक है। कभी भारत में 99 प्रतिशत से अधिक सेंधा नमक पाकिस्तान से आयात होता था, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में तनाव बढ़ने के बाद भारत ने अफगानिस्तान, ईरान, मलेशिया, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया और तुर्की जैसे देशों से आयात शुरू कर दिया।

पाली में रेप के आरोपी को 20 साल की सजा, ईंट के भट्टे पर किया दुष्कर्म

पाली(निसं.) पाली में पोक्सो कोर्ट संख्या 1 ने 7वीं कक्षा में पढ़ने वाली 16 साल की नाबालिग को बहला-फुसलाकर भगाकर ले जाने और उसके साथ रेप करने के मामले में फैसला सुनाया। जज निहालचंद ने आरोपी घनश्याम सिंह को नाबालिग से रेप और किडनैप का दोषी मानते हुए 20 साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई। कोर्ट की वशिष्ठ लोक अभियोजक उपमा रावल ने बताया कि ब्यावर जिले के सेंदड़ा थाने में नाबालिग के पिता ने इसी साल 14 जनवरी को रिपोर्ट दी। जिसमें बताया कि 13 जनवरी की शाम को उसकी 7वीं कक्षा में पढ़ने वाली 16 साल की नाबालिग बेटी खेत में किसी काम से गई थी लेकिन काफी देर बाद भी नहीं लौटी। ऐसे में उसकी तलाश और घर में आकर देखा तो घर में रखे 50 हजार और सोने-चांदी के गहने गायब मिले और फोन पर आरोपी घनश्याम सिंह के कॉल हुए थे। रिपोर्ट में बताया कि घनश्याम सिंह उनकी नाबालिग बेटी को बहला फुसला कर भगाकर ले गया। पुलिस ने मामला दर्जकर जांच शुरू की। नाबालिग को दस्तयाब किया और आरोपी को पकड़कर कोर्ट में पेश किया। मामले में 8 सितम्बर को पाली के पोक्सो कोर्ट संख्या 1 के जज निहालचंद ने दोनों पक्षों के वकीलों की बहस सुनने के बाद ब्यावर जिला निवासी अभियुक्त घनश्यामसिंह (21) को नाबालिग से रेप और किडनैप का दोषी मानते हुए 20 साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई।

सभी पीएम श्री स्कूलों की प्री प्राइमरी कक्षाओं में बच्चों का प्रवेश करें सुनिश्चित- सीडीईओ

सीडीईओ महेंद्र शर्मा की अध्यक्षता में हुई जिला निष्पादन समिति की बैठक

'नोखा, बीकानेर, बज्जू और लूणकरणसर ब्लॉक में बढाएं नामांकन''

'' शिक्षा में जिले की 20 वीं रैंकिंग, टॉप 5 जिलों में आएं''

"प्रथम, द्वितीय और तृतीय फेज की आईसीटी लैब सामग्री की करें नीलामी"

जयपुर टाइम्स

बीकानेर,(नि.सं.) जिला निष्पादन समिति की बैठक मंगलवार को जिला कलेक्ट्रेट सभागार में सीडीईओ महेंद्र शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में सीडीईओ ने कहा कि जिले में कुल 17 पीएम श्री स्कूल हैं। लेकिन कुछ पीएम श्री स्कूलों में प्री प्राइमरी कक्षाओं में बच्चों का प्रवेश नहीं लिया गया है। लिहाजा इन स्कूलों में बच्चों का प्रवेश सुनिश्चित करें। साथ ही कहा कि प्रत्येक सीबीईओ महीने में 2 पीएम श्री स्कूलों का निरीक्षण करेंगे। उन्होंने बताया कि इन स्कूलों को बजट अगले सप्ताह तक मिल जाएगा। उससे पहले उपलब्ध बजट को नियमानुसार व्यय किया जाना सुनिश्चित करें। बैठक में सीडीईओ ने स्कूलों में नए सत्र में बच्चों के प्रवेश को लेकर नामांकन गत वर्ष से 0.5 फीसदी कम रहने पर नोखा, बीकानेर, बज्जू और लूणकरणसर ब्लॉक में नामांकन बढ़ाने को लेकर विशेष प्रयास करने के निर्देश दिए। एनीमिया निवारण को लेकर कहा कि इसको लेकर फीडिंग हर ब्लॉक की 90 फीसदी से ऊपर हो। अभी केवल पांचू, पूगल और हदां ब्लॉक की 90 फीसदी से ऊपर है। सीडीईओ ने पांच फेज में चल रही आईसीटी लैब को निर्देशित किया कि आईसीटी लैब के प्रथम, द्वितीय और तृतीय फेज की सामग्री की नीमाली कराएं। ब्लॉक वाइज स्कूलों की लिस्ट एवं प्रक्रिया जिला मुख्यालय से उपलब्ध करवाई जाएगी। सीडीईओ ने बताया कि अगस्त माह की जिले की रैंकिंग 20 वीं है। इसमें सुधार कर टॉप 5 रैंक में आने का प्रयास करें। साथ ही कहा कि हिंदी में पठन पाठन धाराप्रवाह करने को लेकर प्रखर राजस्थान कार्यक्रम के तीनों आदेश सभी सीबीईओ नीचे शिक्षकों तक पहुंच सुनिश्चित करें। व्यावसायिक शिक्षा सुचारू रूप से संचालित करने को लेकर संस्था प्रधानों को निर्देशित किया कि जब तक जिला स्तर से वोकेशनल ट्रेनर (वीटी) उपलब्ध नहीं होते हैं तब तक स्वयं के स्तर पर ही इनकी व्यवस्था कर व्यावसायिक शिक्षा की देना जारी रखें। विदित है कि अभी तक 44 स्कूलों में ही वीटी कार्यरत है। बैठक में एडीपीसी कृष्ण कुमार बिश्नोई, एडीईओ प्रारंभिक पदमा टिलवानी, डाइट प्रिंसिपल प्रवीण खत्री, सहायक अभियंता राजाराम सोनी, जिले के सभी सीबीईओ, एडीपीसी कार्यालय से एपीसी कैलाश धवल, पीओ नरेन्द्र अग्रवाल इत्यादि उपस्थित रहे।

स्प्रिंगफील्ड स्कूल और महर्षि अरविंद स्कूल में बम की सूचना, अभिभावकों में दहशत

जयपुर टाइम्स

जयपुर ,(कासं.) राजधानी जयपुर में स्कूलों में बम होने की झूठी धमकी के मामले पिछले कुछ महीनो से एक तरफ जहां जयपुर पुलिस के अधिकारियों के लिए बड़ी चुनौती बने हुए हैं तो दूसरी तरफ अभिभावकों में भी हमेशा इस तरह की सूचनाओं से डर छाया रहता है हालांकि अब तक जो भी धमकी मिली है वह सब धमकी झूठी साबित हुई लेकिन प्रिंट इलेक्ट्रानिक मीडिया में जैसे ही स्कूलों में बम होने की सूचना प्रसारित होती है अभिभावकों के चेहरों पर चिंता की लकीरें छा जाती है मंगलवार को राजधानी जयपुर के मानसरोवर में स्प्रिंगफील्ड स्कूल में ईमेल के माध्यम से बम होने की सूचना दी गई इससे पहले भी स्कूल को बम से उड़ने की धमकी मिली थी मंगलवार को फिर धमकी मिली तो स्कूल प्रशासन ने तुरंत पुलिस को सूचित किया सूचना मिलने के बाद पुलिस के आला अधिकारी मौके पर पहुंचे खोजी कुत्ते और बम निरोधक दस्ते को भी बुलाया गया काफी देर तक स्कूल और स्कूल के आसपास छानबीन करने के बाद पुलिस ने साफ कहा कि बम होने की सूचना झूठी है तब जाकर स्कूल प्रशासन से जुड़े लोगों को राहत मिली मानसरोवर में ही महर्षि अरविंद स्कूल को भी बम से उड़ने की धमकी मिली यहां भी ईमेल के माध्यम से सूचना दी गई की स्कूल में 14 जगह पर आरडीएक्स रखा हुआ है जिसकी वजह से शाम 3.30 धमाके होंगे पहले उनको खाली करवा लो जिस पर स्कूल प्रशासन ने तुरंत तुरंत मौके पर निरोधक दस्ता बुलाया खोजी कुत्ते बुलाए काफी देर तक कॉलेज और कॉलेज के आसपास के इलाके में सगन जांच पड़ताल की गई लेकिन जांच पड़ताल में पुलिस को कुछ भी संदिग्ध वस्तु नहीं मिली उल्लेखनीय है कि जयपुर में शिक्षण संस्थानों में ही नहीं बल्कि मुख्यमंत्री आवास को भी बम से उड़ने की धमकी कई बार पूर्व मिल चुकी है हालांकि पुलिस धमकी देने वाले शख्स तक भी कई बार पहुंच जाती है लेकिन इस तरह के अपराध में दोषी को जल्दी ही जमानत मिल जाती है और सजा भी ज्यादा कठिन नहीं होती इसलिए जानकार लोगों का कहना है कि इस तरह की सूचनाओं के लिए कहीं ना कहीं सजा के प्रावधान में कठोरता लानी होगी ताकि इस तरह की झूठी धमकी देने वाले लोगों के दिल में डर पैदा हो क्योंकि इस तरह की झूठी अफवाह से एक तरफ जहां पुलिस का काफी समय बर्बाद होता है तो दूसरी तरफ छात्रों के अभिभावकों में भी हमेशा चिंता बनी रहती है।

शहर चलो अभियान प्रभावी कार्ययोजना पर जोर

जयपुर टाइम्स

जयपुर,(कासं.) मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के मार्गदर्शन और मंत्री झाबर सिंह खर्रा के नेतृत्व में आमजन को सुगम जीवन प्रदान करने के उद्देश्य से चलाए जा रहे शहर चलो अभियान की तैयारियों को लेकर मंगलवार को स्वायत्त शासन विभाग में राज्य स्तरीय समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता नगरीय विकास विभाग के प्रमुख शासन सचिव देबाशीष पृष्टि और शासन सचिव रवि जैन ने की। पृष्टि ने सभी नगरीय विकास न्यास सचिवों को निर्देश दिया कि अभियान की सफलता के लिए समयबद्ध कार्ययोजना तैयार कर रोड, सीवरेज व लो-लेइंग क्षेत्रों का निरीक्षण कर जलभराव की समस्या का समाधान किया जाए। वहीं, आवश्यक मरम्मत व निर्माण कार्य तुरंत शुरू करने पर बल दिया। शासन सचिव रवि जैन ने कहा कि अंत्योदय की संकल्पना को साकार करने में यह अभियान मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने व्यापक प्रचार-प्रसार, जनप्रतिनिधियों से संवाद और कैम्प स्थलों पर सफाई व्यवस्था, डस्टबिन व वृक्षारोपण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। अभियान के तहत सफाई व्यवस्था सुधार, स्ट्रीट लाइट, आवारा पशु नियंत्रण, जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र, सड़कों की मरम्मत, पीएम/सीएम स्वनिधि ऋण वितरण, पीएम सूर्यघर योजना आवेदन, स्कूल-आंगनबाड़ी मरम्मत, पट्टे व लीज मुक्ति प्रमाण पत्र जारी करने जैसे कार्य प्राथमिकता से होंगे। साथ ही अटल पेंशन, विधवा व विकलांग पेंशन जैसे लाभ भी आमजन को उपलब्ध कराए जाएंगे। शहर चलो अभियान से जनोपयोगी कार्यों को नई गति मिलने की उम्मीद जताई गई है।

मणिपाल यूनिवर्सिटी हॉस्टल में इंजीनियरिंग छात्रा ने की आत्महत्या, पुलिस जांच में जुटी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजधानी के बगरू थाना क्षेत्र स्थित मणपाल यूनविर्सिटी के हॉस्टल में सोमवार को एक सनसनीखेज घटना सामने आई। सेकंड ईयर की इंजीनियरिंग छात्रा ने अपने कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। छात्रा बिहार की रहने वाली बताई जा रही है। घटना के बाद यूनिवर्सिटी परिसर में हड़कंप मच गया। सूचना पर बगरू एसीपी हेमेंद्र शर्मा और थानाधिकारी मोतीलाल शर्मा टीम सहित मौके पर पहुंचे। पुलिस ने छात्रा को पंखे से लटका हुआ पाया। तुरंत शव को फंदे से उतारकर एसएमएस हॉस्पिटल की मोर्च्युरी में रखवाया गया। फिलहाल छात्रा के परिजनों को घटना की सूचना दे दी गई है। उनके जयपुर पहुंचने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि अभी तक आत्महत्या के कारणों का पता नहीं चल पाया है। छात्रा के कमरे से मोबाइल फोन, लैपटॉप, डायरी और अन्य निजी सामान जब्त किए गए हैं। इन सभी की गहन जांच के बाद ही यह स्पष्ट हो पाएगा कि उसने आत्महत्या जैसा कदम क्यों उठाया। परिजनों के बयान भी जांच का महत्वपूर्ण हिस्सा होंगे। पुलिस का कहना है कि प्राथमिक जांच में किसी तरह का सुसाइड नोट नहीं मिला है। छात्रा ने किस परिस्थिति में आत्महत्या की, इसकी सच्चाई परिजनों से पूछताछ और इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्यों की जांच के बाद सामने आएगी।

"अधिवक्ताओं का संवैधानिक मूल्यों के संरक्षण में अग्रणी भूमिका आवश्यक- न्यायमूर्ति अशोक कुमार जैन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद का 34वां स्थापना दिवस मंगलवार को राजस्थान उच्च न्यायालय परिसर स्थित सतीश चंद्र सभागार में मनाया गया। कार्यक्रम का मुख्य विषय "संवैधानिक मूल्यों का संरक्षण" रहा, जिस पर न्यायविदों एवं अधिवक्ताओं ने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि माननीय न्यायाधिपति अशोक कुमार जैन ने अपने उद्बोधन में कहा कि संवैधानिक सिद्धांत न केवल न्यायपालिका की नींव हैं, बल्कि वे समाज में न्याय, समानता और स्वतंत्रता सुनिश्चित करने का आधार भी हैं। उन्होंने अधिवक्ताओं और संगठनों से संवैधानिक मान्यताओं की रक्षा हेतु सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया और अनुच्छेद 21 से जुड़े महत्वपूर्ण न्यायिक दृष्टांतों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता परिषद के प्रांत अध्यक्ष प्यारे लाल ने की अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि संवैधानिक मूल्यों के प्रति जागरूकता ही देश की प्रगति की नींव है। अधिवक्ताओं को जनमानस में न्यायपालिका के प्रति विश्वास बनाए रखने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। विशिष्ट अतिथि एवं परिषद के क्षेत्रीय मंत्री कमल परसवाल ने अधिवक्ताओं से आह्वान किया कि वे संवैधानिक मूल्यों की रक्षा को सर्वोपरि दायित्व मानें और सामाजिक न्याय की दिशा में अग्रणी भूमिका निभाएं। कार्यक्रम में प्रांत महामंत्री अभिषेक सिंह भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। मंच संचालन उच्च न्यायालय इकाई के महामंत्री धर्मेंद्र बराला ने किया। अतिथि परिचय स्टडी सर्किल प्रमुख नितिन जैन ने दिया, विषय परिचय गजेन्द्र सिंह राठौड़ ने और संगठन परिचय संजीव सोगरवाल ने रखा। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रगीत से हुई, जिसका संचालन इकाई मंत्री मीनल भार्गव और गुंजन चावला ने किया, जबकि राष्ट्रगान शुभम जैन और राजाराम चौधरी ने करवाया। मंच पर परिषद की उपाध्यक्ष सोनिया शांडिल्य भी उपस्थित रहीं। समारोह के मुख्य अतिथि का इकाई संरक्षक जगमोहन सक्सेना और नीरज भट्ट ने स्मृति चिन्ह प्रदान कर किया। इकाई अध्यक्ष धर्मेंद्र जैन ने सभी अतिथियों एवं उपस्थित अधिवक्ता समुदाय का आभार व्यक्त किया।

एसएमएस हॉस्पिटल में सर्वर खराब, मरीजों को दवा और बिल काउंटर पर घंटों इंतजार

जयपुर,(कासं.) राजधानी के सवाई मानसिंह (एसएमएस) हॉस्पिटल में सर्वर की तकनीकी खराबी ने मरीजों और परिजनों की परेशानी बढ़ा दी है। सोमवार से जारी यह समस्या मंगलवार को भी बनी रही, जिसके कारण ओपीडी पर्ची, दवाई काउंटर और जांचों के बिलिंग कार्यों में बाधा आई। धनवंती ओपीडी में डीसीसी काउंटर पर दवा लेने पहुंचे मरीजों को लंबी कतारों में खड़ा होना पड़ा। सामान्यत दोपहर 2 बजे तक दवाइयां वितरित कर दी जाती हैं, लेकिन सर्वर की धीमी गति के कारण मंगलवार को 3-30 बजे तक काउंटर खोलकर मरीजों को दवाइयां देनी पड़ीं। काउंटर पर काम कर रहे ऑपरेटरों ने बताया कि सर्वर बार-बार हैंग हो रहा है और डाटा एंट्री में समय लग रहा है। ओपीडी पर्ची बनाने, जांचों के बिल काटने और दवाइयों की एंट्री करने में काफी देर लग रही है। कई मरीजों को दवा लेने के लिए आधा से एक घंटे तक इंतजार करना पड़ा।

आईआईटी जोधपुर ने जेनएआई शोध से दिखाई नई राह, ट्रैफिक जाम, सड़क हादसों और दिमागी बीमारियों का मिलेगा समाधान

जयपुर टाइम्स

जोधपुर(निसं.) भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) जोधपुर ने जेनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (जेनएआई) के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है। कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉक्टर देबासिस दास के नेतृत्व में चल रहे इस शोध ने परिवहन, स्वास्थ्य सेवाओं, कानून व्यवस्था और भूमि अभिलेख प्रबंधन जैसे अनेक क्षेत्रों में क्रांतिकारी समाधान प्रस्तुत किए हैं। डॉ. दास ने कहा कि हमारा उद्देश्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता को केवल प्रयोगशाला तक सीमित न रखकर जन-जीवन में उपयोगी बनाना है। शोध टीम तीन मुख्य क्षेत्रों पर कार्य कर रही है–वाहन नेटवर्क के लिए जेनएआई, स्मार्ट स्वास्थ्य सेवा के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता और कानून व्यवस्था व भूमि अभिलेख प्रबंधन के लिए जेनएआई तथा ब्लॉक श्रृंखला (ब्लॉकचेन) तकनीक। इन क्षेत्रों में समन्वित प्रयास आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को मजबूत करने के साथ ही सुरक्षित, स्वस्थ और पारदर्शी भविष्य की दिशा में मार्ग प्रशस्त करेंगे।

ट्रैफिक जाम और सड़क हादसों पर नियंत्रण

भारत में ट्रैफिक जाम और सड़क दुर्घटनाएं गंभीर समस्या हैं। आईआईटी जोधपुर की टीम ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित वाहन प्रणाली विकसित की है, जो यातायात पैटर्न की सटीक भविष्यवाणी कर सकती है तथा संभावित दुर्घटनाओं का अनुमान भी लगा सकती है। जेनएआई आधारित सिमुलेशन वास्तविक परिस्थितियों का विश्लेषण करके प्रशासन और शहरी नियोजकों को यातायात प्रबंधन व सड़क सुरक्षा में मदद करेगा। इस तकनीक से न केवल हादसे कम होंगे, बल्कि समय और ईंधन की भी बचत होगी।

स्वास्थ्य सेवाओं में नई दिशा

न्यूरोलॉजी के क्षेत्र में टीम ने ऐसे धारणीय उपकरण (वियरेबल डिवाइस) तैयार किए हैं, जो मस्तिष्क की गतिविधि की वास्तविक समय में निगरानी करते हैं। ये उपकरण दौरे (सीजर्स) की आशंका का पता लगाते हैं और मिर्गी व अल्जाइमर जैसी बीमारियों की प्रारंभिक पहचान में सहायक बनते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता जटिल चिकित्सकीय आँकड़ों का विश्लेषण कर व्यक्तिगत उपचार योजनाएं बनाने और बेहतर निर्णय लेने में सहायता करती है। इससे रोगियों और परिजनों को उन्नत स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकेंगी।

भूमि अभिलेख और कानून व्यवस्था में पारदर्शिता

भारत में भूमि अभिलेखों में छेड़छाड़ और जालसाजी बड़ी समस्या है। आईआईटी जोधपुर की टीम ने ब्लॉक श्रृंखला तकनीक को जेनएआई से जोड़कर छेड़छाड़-रोधी मंच तैयार किया है। यह प्रणाली संवेदनशील आँकड़ों को सुरक्षित रखेगी और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को अधिक पारदर्शी बनाएगी। किसानों व3 आम नागरिकों को इसका सीधा लाभ मिलेगा और भ्रष्टाचार में कमी आएगी। अंतरराष्ट्रीय सहयोग से मजबूती इस शोध में पीएचडी, एमटेक और बीटेक विद्यार्थी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। इसे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, विज्ञान एवं अभियांत्रिकी अनुसंधान बोर्ड, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, एनिमल नेचर रिसर्च फाउंडेशन, अमेरिका की राष्ट्रीय विज्ञान फाउंडेशन तथा ताइवान की राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद से वित्तीय सहयोग प्राप्त हुआ है। डॉ. दास ने कहा कि यह शोध न केवल तकनीकी नवाचार की दिशा में मील का पत्थर है बल्कि समाज के हर वर्ग के लिए सुरक्षित और समान भविष्य की गारंटी भी है।

भावनाएं भड़काने वाली राजनीति

श्रीनगर की प्रसिद्ध हजरतबल दरगाह के जीर्णोद्धार शिलापट्ट पर राष्ट्रीय प्रतीक अशोक चक्र की उपस्थिति ने ईद-ए-मिलाद (पैगंबर का जन्मदिन पांच सितंबर) पर मस्जिद जाने वाले कुछ कश्मीरी मुसलमानों में आक्रोश भड़का दिया। अशोक चक्र को निशाना बनाकर की गई तोड़फोड़ की घटना ने पूरे देश की भावनाओं को ठेस पहुंचाई।

यह मुद्दा इस्लाम के भीतर और इस्लाम एवं गैर-इस्लाम के भीतर की संवेदनशीलताओं से जुड़ा है। चूंकि राजनीति इस विवाद में शामिल हो गई, इसलिए इस विषय की निष्पक्ष पड़ताल जरूरी है। जम्मू-कश्मीर वक्फ बोर्ड ने अस्सरी शरीफ हजरतबल दरगाह का जीर्णोद्धार कराया था।

इसका उद्घाटन तीन सितंबर, 2025 को जम्मू-कश्मीर वक्फ बोर्ड की अध्यक्ष डा. सैयद दरख्शां अंद्राबी ने किया। शिलापट्ट पर अंकित अन्य सदस्यों में सैयद मोहम्मद हुसैन, डा. गुलाम नबी हलीम, बोर्ड के तहसीलदार इश्तियाक मोहिउद्दीन और इंजीनियर सैयद गुलाम ए मुर्तजा शामिल हैं।

शिलापट्ट के शीर्ष पर बीच में एक उर्दू पाठ है। दाहिनी ओर अर्धचंद्र के ऊपर मस्जिद का चित्र है और बाईं तरफ उसी आकार का अशोक चक्र का प्रतीक है। न तो यह शिलापट्ट और न ही उस पर अंकित कोई भी प्रतीक इबादत का था। यह निश्चित है कि अशोक चक्र पर तीन सितंबर को ही ध्यान दिया गया। फिर भी चार सितंबर तक असहमति या विरोध की कोई आवाज नहीं उठी। पांच सितंबर को ही विरोध प्रकट किया गया।

पहले पुरुषों और फिर महिलाओं के एक समूह ने पत्थर मार-मारकर शिलापट्ट में अंकित प्रतीक में तोड़फोड़ कर उसे मिटा दिया। ऐसा प्रतीत होता है कि यह हरकत सोच-समझकर की गई। आश्चर्यजनक रूप से राजनीतिक नेताओं द्वारा इस तोड़फोड़ का बचाव किया गया। वे इस मामले को बोर्ड या राज्यपाल के समक्ष निजी तौर पर उठा सकते थे, लेकिन उन्होंने अलग और लोगों को भड़काने वाला रवैया अपनाया। उनका इरादा कश्मीर के साथ देश में भावनाओं को भड़काने का प्रतीत हुआ। यह तर्क पूरी तरह खोखला लगता है कि दिल्ली में संसद भवन में बने शेर प्रतीकात्मक हैं और दरगाह के धार्मिक मूल्यों के साथ असंगत हैं।

हजरतबल दरगाह की प्रसिद्धि एक पवित्र अवशेष, पैगंबर मुहम्मद की दाढ़ी के एक बाल के कारण है, जिसे मोई-ए-मुकद्दस कहा जाता है। इसे पैगंबर के व्यक्तिगत प्रतीक के रूप में सम्मान दिया जाता है, हालांकि इसकी औपचारिक रूप से इबादत नहीं की जाती। सवाल उठता है कि क्या अशोक चक्र को गणतंत्र के प्रतीक के रूप में उस पट्टिका पर सम्मान नहीं दिया जा सकता था, जहां उसकी औपचारिक रूप से इबादत नहीं की जा रही थी? अंद्राबी ने इस तोड़फोड़ की निंदा करते हुए इसे एक "आतंकवादी हमला" और संविधान, दरगाह की गरिमा और राष्ट्रीय प्रतीकों पर हमला बताया।

उन्होंने इस उपद्रव के लिए नेशनल कांफ्रेंस के कार्यकर्ताओं को जिम्मेदार ठहराया और इसे वक्फ बोर्ड पर नियंत्रण न रख पाने की उनकी हताशा से जोड़ा। इस कथन में कुछ दम नजर आता है। इसलिए और भी, क्योंकि पूर्व मुख्यमंत्री शेख अब्दुल्ला ने मस्जिदों और दरगाहों पर नियंत्रण करके और उन्हें वक्फ बोर्ड के अधीन लाकर कश्मीरी मुसलमानों के एक प्रमुख नेता के रूप में अपनी सार्वजनिक छवि बनाई थी। यह उनकी राजनीति का आधार स्तंभ था। शायद नेशनल कांफ्रेंस को वक्फ बोर्ड पर अपना नियंत्रण न होने का अफसोस है। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने एक तरह से दरगाह के शिलापट्ट में अशोक चक्र के साथ की गई तोड़फोड़ का समर्थन किया। उन्होंने मजहबी स्थल पर अशोक चिह्न लगाने पर सवाल उठाया और तोड़फोड़ में शामिल लोगों पर जन सुरक्षा अधिनियम (पीएसए) लगाने का भी विरोध किया। उमर अब्दुल्ला की बातों का समर्थन पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की नेता और पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती एवं उनकी बेटी ने भी किया। महबूबा मुफ्ती ने कहा कि दरगाह पर राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न रखना ईशनिंदा के समान है। उन्होंने यह भी दावा किया कि विरोध प्रदर्शन "प्रतीक चिह्न के खिलाफ नहीं", बल्कि "मूर्ति पूजा" के खिलाफ था। माकपा नेता और विधायक एमवाई तारिगामी और मीरवाइज उमर फारूक ने भी प्रदर्शनकारियों का पक्ष लिया। इस मामले में यह सवाल अपनी जगह मौजूद है कि आखिर तीन या चार सितंबर को किसी ने आवाज क्यों नहीं उठाई? इस सवाल के बीच कुछ मुसलमानों ने प्रदर्शनकारियों की यह कहते हुए आलोचना की कि अशोक स्तंभ भारत की सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा और राष्ट्रीय प्रतीक है। मस्जिद के बाहर शिलापट्ट पर उसकी उपस्थिति न तो नमाज में बाधा डालती है और न ही मजहबी आस्था को किसी तरह का नुकसान पहुंचाती है। दिलचस्प बात यह है कि अशोक चक्र हज पहचान पत्रों पर भी अंकित है और भारतीय पासपोर्ट पर भी। इसी कारण ऐसे सवाल उठाए जा रहे हैं कि अशोक चक्र का विरोध करने वाले क्या हज यात्रा के दौरान भारतीय पासपोर्ट का विरोध करेंगे? इस विवाद के बीच आठ सितंबर को सोशल मीडिया पर हजरतबल दरगाह पर लगे एक हरे और सफेद रंग के होर्डिंग की तस्वीर सामने आई। पीडीपी-भाजपा गठबंधन सरकार के दौरान (2017-2022) लगाए गए इस होर्डिंग पर अशोक चक्र अंकित है और योजना का संदेश लिखा है।

पहले पुरुषों और फिर महिलाओं के एक समूह ने पत्थर मार-मारकर शिलापट्ट में अंकित प्रतीक में तोड़फोड़ कर उसे मिटा दिया। ऐसा प्रतीत होता है कि यह हरकत सोच-समझकर की गई। आश्चर्यजनक रूप से राजनीतिक नेताओं द्वारा इस तोड़फोड़ का बचाव किया गया। वे इस मामले को बोर्ड या राज्यपाल के समक्ष निजी तौर पर उठा सकते थे, लेकिन उन्होंने अलग और लोगों को भड़काने वाला रवैया अपनाया। उनका इरादा कश्मीर के साथ देश में भावनाओं को भड़काने का प्रतीत हुआ। यह तर्क पूरी तरह खोखला लगता है कि दिल्ली में संसद भवन में बने शेर प्रतीकात्मक हैं और दरगाह के धार्मिक मूल्यों के साथ असंगत हैं। हजरतबल दरगाह की प्रसिद्धि एक पवित्र अवशेष, पैगंबर मुहम्मद की दाढ़ी के एक बाल के कारण है, जिसे मोई-ए-मुकद्दस कहा जाता है। इसे पैगंबर के व्यक्तिगत प्रतीक के रूप में सम्मान दिया जाता है, हालांकि इसकी औपचारिक रूप से इबादत नहीं की

सम्पादकीय

जीएसटी की दरों में कटौती से लोगों को मिलेगी राहत

सरकार की ओर से हाल में माल एवं सेवा कर (जीएसटी) की दरों में कटौती के एलान से माना जा रहा था कि इससे आम लोगों को महंगाई से थोड़ी राहत मिलेगी। उनके पास पैसों की बचत होगी, जिसे वे अन्य जरूरी वस्तुएं जुटाने पर खर्च कर सकेंगे। मगर इससे पहले कि जीएसटी की नई दरें लागू होतीं, लोगों की जेब पर एक और शुल्क का बोझ पड़ गया है। आनलाइन माध्यम से भोजन की आपूर्ति करने वाली कुछ कंपनियों ने अपने मंच शुल्क में बढ़ोतरी कर दी है। यानी आनलाइन भोजन मंगवाना अब महंगा हो जाएगा। इसका असर देशभर के लाखों लोगों पर पड़ेगा। माना जा रहा है कि 22 सितंबर से आपूर्ति शुल्क पर अठारह फीसद जीएसटी लागू होने पर आनलाइन भोजन मंगाने पर खर्च और बढ़ सकता है। ऐसे में यह सवाल भी अहम हो गया है कि सरकार ने जीएसटी सुधारों के तहत जो कदम उठाया है, क्या वास्तव में उसका लाभ उभोक्ताओं को मिल पाएगा या नहीं? खबरों के मुताबिक, आनलाइन बुकिंग के माध्यम से भोजन परोसने वाली एक मुख्य कंपनी ने चुनिंदा बाजारों में अपना मंच शुल्क जीएसटी सहित पंद्रह रुपए कर दिया है। इसकी एक अन्य प्रतिद्वंद्वी कंपनी ने भी अपना मंच शुल्क बढ़ाकर 12.50 रुपए (जीएसटी को छोड़कर) कर दिया है, जबकि एक अन्य कंपनी ने व्यापक उद्योग रुझानों के अनुरूप अपना मंच शुल्क संशोधित करके दस रुपए प्रति आर्डर कर दिया है। भोजन आपूर्ति कारोबार से जुड़े विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि 22 सितंबर से जब आपूर्ति शुल्क पर अठारह फीसद जीएसटी लागू हो जाएगा तो उपयोगकर्ताओं पर प्रति आर्डर लगभग दो रुपए से लेकर ढाई रुपए से ज्यादा तक अतिरिक्त बोझ पड़ सकता है। जानकारों का कहना है कि जीएसटी में बदलाव से भोजन तैयार करने की लागत पर ज्यादा असर नहीं पड़ेगा, इसलिए उपभोक्ताओं पर शुल्क का अतिरिक्त बोझ डालने का औचित्य समझ से परे है। ऐसे में इन कंपनियों द्वारा मंच शुल्क में एक साथ की गई बढ़ोतरी खाद्य वितरण क्षेत्र में महंगाई के बढ़ते रुझान को रेखांकित करती है, जिससे यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या लाखों ग्राहकों के लिए सामर्थ्य और सुविधा अब भी साथ-साथ चल सकती हैं? सरकार का तर्क है कि जीएसटी दरों में कटौती और इनके सरलीकरण से न केवल आम उपभोक्ताओं को राहत मिलेगी, बल्कि घरेलू मांग भी बढ़ेगी, छोटे और बड़े उद्यमों को ज्यादा अवसर मिलेंगे, रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे तथा लोगों की आय बढ़ेगी, जिससे उनके खर्च की क्षमता भी बढ़ेगी। सरकार के इस फैसले को अमेरिकी शुल्क की चुनौतियों से निपटने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। दरअसल, सरकार का जोर घरेलू मांग और खपत बढ़ाने पर है। कर में राहत से लोगों की खरीद क्षमता बढ़ेगी और इसके परिणामस्वरूप खपत में भी बढ़ोतरी होगी, जिससे अमेरिकी शुल्क का प्रभाव कम होगा। मगर यह तभी संभव होगा, जब जीएसटी दरों में कटौती का लाभ वास्तव में उपभोक्ताओं तक पहुंचेगा। अगर एक तरफ कर कम किया जाता है और दूसरी तरफ बढ़ा दिया जाता है तो जाहिर है कि मांग और खपत बढ़ने की उम्मीदों पर भी धुंधलका छाया रहेगा।

भारत के रत्न!

भारतीय संस्कृति और संगीत से लगाव रखने वालों के लिए आज 8 सितंबर का दिन बहुत खास है। और विशेषकर इस दिन के साथ असम के मेरे भाइयों और बहनों की भावनाएं जुड़ी हुई हैं। आज भारत रत्न डॉ. भूपेन हजारिका की जन्म जयंती है। वे भारत की सबसे असाधारण और सबसे भावुक आवाज़ों में से एक थे। ये बहुत सुखद है कि इस वर्ष उनके जन्म शताब्दी वर्ष का आरंभ हो रहा है। यह भारतीय कला-जगत और जन-चेतना की दिशा में उनके महान योगदानों को फिर से याद करने का समय है।

भूपेन दा ने हमें संगीत से कहीं अधिक दिया। उनके संगीत में ऐसी भावनाएं थीं जो धुन से भी आगे जाती थीं। वे केवल एक गायक नहीं थे, वे लोगों की धड़कन थे। कई पीढ़ियां उनके गीत सुनते हुए बड़ी हुईं। उनके गीतों में हमेशा करुणा, सामाजिक न्याय, एकता और गहरी आत्मीयता की गूंज है।

भूपेन दा के रूप में असम से एक ऐसी आवाज़ निकली जो किसी कालजयी नदी की तरह बहती रही। भूपेन दा सशरीर हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनकी आवाज आज भी हमारे बीच है। वो आवाज आज भी सीमाओं और संस्कृतियों से परे है। उसमें मानवता का स्पर्श है।

भूपेन दा ने दुनिया का भ्रमण किया, समाज के हर वर्ग के लोगों से मिले, लेकिन वे असम में अपनी जड़ों से हमेशा जुड़े रहे। असम की समृद्ध मौखिक परंपराएं, लोकधुनें और सामुदायिक कहानी कहने के तरीकों ने उनके बचपन को गढ़ा। यही अनुभव उनकी कलात्मक भाषा की नींव बने। वे असम की आदिवासी पहचान और लोगों के सरोकार को हर समय साथ लेकर चले।

बहुत छोटी उम्र से उनकी प्रतिभा लोगों को नजर आने लगी। केवल पांच वर्ष की उम्र में उन्होंने सार्वजनिक मंच पर गाया। वहां लक्ष्मीनाथ बेझबरुआ जैसे असमिया साहित्य के अग्रदूत ने उनके कौशल को पहचाना। किशोरावस्था तक पहुंचते-पहुंचते उन्होंने अपना पहला गीत रिकॉर्ड कर लिया। लेकिन संगीत उनके व्यक्तित्व का सिर्फ एक पहलू था। भूपेन दा भीतर से एक बौद्धिक व्यक्तित्व थे। जिज्ञासु, साफ बोलने वाले, दुनिया को समझने की अटूट चाह रखने वाले। ज्योति प्रसाद अग्रवाला और विष्णु प्रसाद रभा जैसे सांस्कृतिक दिग्गजों ने उनके मन पर गहरा प्रभाव डाला, और उनकी जिज्ञासु प्रवृत्ति को और बढ़ावा दिया। सीखने की यही लगन उन्हें कॉटन कॉलेज, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय तक ले गई। वो बीएचयू में राजनीति शास्त्र के छात्र थे, लेकिन उनका अधिकतर समय संगीत साधना में बीतता था। बनारस ने उन्हें पूरी तरह संगीत की तरफ मोड़ दिया। काशी का सांसद होने के नाते मैं उनकी जीवन यात्रा से एक जुड़ाव महसूस करता हूं, और मुझे बहुत गर्व होता है। काशी से आगे बढ़ी जीवन यात्रा में फिर उन्होंने अमेरिका में कुछ समय बिताया। वहां उन्होंने अपने समय के नामचीन विद्वानों, विचारकों और संगीतकारों से संवाद किया। वे पॉल रोबसन से मिले, जो दिग्गज कलाकार और सिविल राइट्स नेता थे। रोबसन का गीत "ह्य' स्ढ्ढठ्ठ ह्द्ब1द्गह्ल" उनके कालजयी गीत 'बिश्टीरनो परोरे' की प्रेरणा बना। अमेरिका की पूर्व प्रथम महिला एलेनॉर रूजवेल्ट ने भारतीय लोकसंगीत प्रस्तुतियों के लिए उन्हें गोल्ड मेडल भी दिया।

भूपेन हजारिका, संगीत के साथ ही मां भारती के भी सच्चे उपासक थे। भूपेन दा के पास अमेरिका में रहने का विकल्प था, लेकिन वे भारत लौट आए और संगीत साधना में डूब गए। रेडियो से लेकर रंगमंच तक, फिल्मों से लेकर एजुकेशनल डॉक्यूमेंट्री तक, हर माध्यम में वे पारंगत थे। जहां भी गए, नई प्रतिभाओं को समर्थन दिया।

भूपेन दा की रचनाएं काव्यात्मक सौंदर्य से भरी रहीं, और साथ-साथ उन्होंने सामाजिक संदेश भी दिए। गरीबों को न्याय, ग्रामीण विकास, आम नागरिक की ताकत, ऐसे अनेक विषय उन्होंने उठाए। उनके गीतों ने नाविकों, चाय बागान के मजदूरों, महिलाओं, किसानों की आकांक्षाओं को आवाज़ दी। उनकी रचनाएं लोगों को पुरानी स्मृतियों में ले जाती थीं, साथ ही, उन्होंने आधुनिकता को देखने का एक सशक्त नजरिया भी दिया। बहुत से लोग, खासकर सामाजिक रूप से वंचित तबकों के लोग, उनके संगीत से शक्ति और आशा पाते रहे...और आज भी पा रहे हैं।

भूपेन दा की जीवन यात्रा में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना का स्पष्ट प्रभाव दिखता है।

रचेगा सो बचेगा

उन्हीं अनुभवों को वह अपनी रचनाओं में व्यक्त किए चलता है। ऐसा अचेतन या अवचेतन स्तर पर भी होता है, क्योंकि लेखक के लिए खुद यह जान पाना मुश्किल हो सकता है कि कौन-सी रचना अतीत में हुए किस अनुभव से उपजी है। अक्सर लेखक इस बारे में कोई प्रश्न उठाने में खतरा भी महसूस कर सकता है कि वे अनुभव वास्तविक हैं या काल्पनिक, छिछले हैं या गहरे; या फिर मूलभूत रूप से किस मानसिक उद्वेलन से उपजे हैं। ये बातें उठाने से लेखन का प्रवाह रुक सकता है। अक्सर इस तरह के मूलभूत सवालों में लेखक खतरा महसूस करता है।

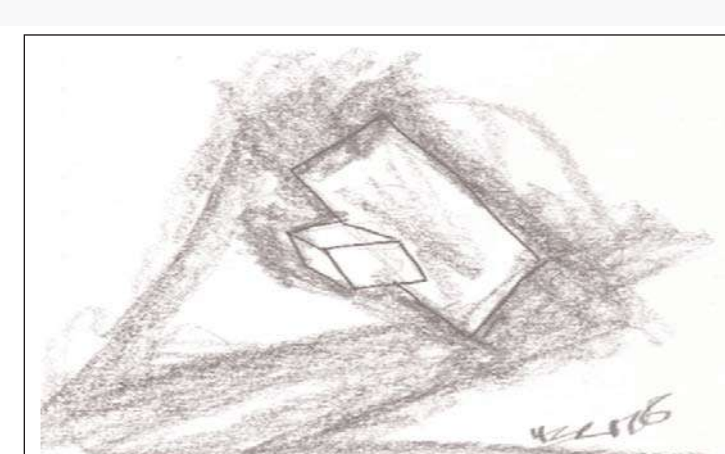

हर रचनाकार अपनी रचनात्मकता के स्रोत तक जाने की कोशिश करता होगा? यह सवाल हर विधा में काम कर रहे रचनाकारों के लिए है। विन्सेंट वॉन गॉग मानते थे कि हर पेंटिंग में जीवन होता है और वह जीवन कलाकार की आत्मा ही उसे प्रदान करती है। महान संगीतकार बेटोफेन के बारे में एक मशहूर लेखक ने लिखा कि वे तो इतने बधिर हैं कि खुद को चित्रकार समझ बैठते हैं! रचनात्मकता के स्रोत में थोड़ी गहराई में उतरने पर दिखता है कि विधाएं भले अलग-अलग हों, कोई स्रोत है जो हर कलाकार के मन-मस्तिष्क से होकर प्रवाहित होता है, और वह अक्सर एक ही स्रोत होता है, अलग-अलग वाह्य अभिव्यक्तियों के बावजूद। किशोरी अमोनकर जब गाती थीं तो यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता था कि कौन है जो उनके जरिए, उन्हें गा रहा है! अक्सर कोई रचनात्मक ऊर्जा कलाकार का एक माध्यम के रूप में मानो इस्तेमाल करती प्रतीत होती है। पर ऐसा कहने में रचनात्मकता को एक रहस्यमयी प्रक्रिया बनाने के खतरे हैं। उस पर अनावश्यक और बोझिल आध्यात्मिकता की खरोंचे भी पड़ सकती हैं। विक्टर ह्यूगो कहते थे कि मैं तभी लिखता हूं जब प्रेरणा मिलती है, पर मैंने यह तय किया हुआ है कि किसी भी हाल में मैं रोज सुबह नौ बजे प्रेरित होता रहूं! टीएस एलियट ने रचनात्मकता के बारे में एक बड़ी विवादस्पद बात कह डाली कि अपरिपक्व कवि नकल करते हैं; महान कवि तो चोरी करते हैं। इसे स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा 'खराब कवि जो भी उठाते हैं, उसे भद्दा बना कर छोड़ देते हैं, जबकि उम्दा कवि उसे बेहतर बना डालता है या कम से कम कुछ अलग तो बना ही देता है।' हर लेखक के अपने अनुभव होते हैं, जिन्हें वह अपने संस्कारों के आलोक में देखता-समझता है। उन अनुभवों के साथ उसका गहरा तादात्म्य भी स्थापित हो जाता है। उन्हीं अनुभवों को वह अपनी रचनाओं में व्यक्त किए चलता है। ऐसा अचेतन या अवचेतन स्तर पर भी होता है, क्योंकि लेखक के लिए खुद यह जान पाना मुश्किल हो सकता है कि कौन-सी रचना अतीत में हुए किस अनुभव से उपजी है। अक्सर लेखक इस बारे में कोई प्रश्न उठाने में खतरा भी महसूस कर सकता है कि वे अनुभव वास्तविक हैं या काल्पनिक, छिछले हैं या गहरे; या फिर मूलभूत रूप से किस मानसिक उद्वेलन से उपजे हैं। ये बातें उठाने से लेखन का प्रवाह रुक सकता है। अक्सर इस तरह के मूलभूत सवालों में लेखक खतरा महसूस करता है। लेखक या कवि किसी गहरी या अंतिम अंतर्दृष्टि की खोज में नहीं रहता, अपनी आंशिक अंतर्दृष्टि को साझा करने की एक व्याकुलता होती है, उसमें और अपनी 'खोज' पर प्रश्न उठाने से उसकी अभिव्यक्ति बाधित होगी, इस तथ्य से वह अच्छी तरह परिचित होता है। प्रश्न की आंच में बहुधा कई निष्कर्ष मुरझा सकते हैं, जबकि लेखक उन निष्कर्षों को पूरे विश्वास के साथ व्यक्त करना चाहता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो लेखक की संस्कारबद्धता उसके लिखने का स्रोत हो सकती है। भावनाएं या विचार भी रचनाकार को लेखन की दिशा में ले जाते हैं। पर विचार का महिमामंडन न करके उनकी संरचना को खंगालने की कोशिश की जानी चाहिए। गौरतलब है कि विचार भी खास किस्म के संस्कार से ही उपजते हैं। अक्सर वे स्मृतियों के प्रत्युत्तर के रूप में व्यक्त होते हैं। लेखक स्मृतियों से अपनी ऊर्जा लेता है। सुखद स्मृतियों से भी और दुखद यादों से भी। इन्हें लेकर अलग-अलग रस निर्मित करता है। क्या मृत स्मृतियां उत्कृष्ट, जीवंत लेखन को जन्म दे सकती हैं? इस प्रश्न को लेखक दर्शन और मनोविज्ञान के पाले में धकेल देता है। हाइकू के जनक बाशो स्मृतियों पर निर्भर नहीं रहते, सिर्फ और सिर्फ वर्तमान क्षण को उकेरते हैं। हां, गहरी ऊब और द्वंद्व भी लेखन या किसी अन्य तरह की सृजनशीलता की ऊर्जा को जन्म दे सकते हैं। अक्सर कलाकार के जीवन और लेखन में भयंकर द्वंद्व देखा जा सकता है। वार ऐंड पीस का संत लेखक टॉलस्टॉय अपनी पत्नी के साथ भयंकर कलह में जीता रहा। अपने मशहूर उपन्यास अन्ना कैरेनिना के प्रारंभ में ही उन्होंने दुखी परिवार की दशा के बारे में लिखा है। दरअसल, द्वंद्व एक तरह की ऊर्जा पैदा करता है और किसी सृजनशील व्यक्ति में यह ऊर्जा सौंदर्यपूर्ण और प्रभावी ढंग से व्यक्त भी हो सकती है, पर उसके पीछे छिपा बैठा, बिलबिलाता, तड़पता रचनाकार दुनिया की नजर से बचा रह जाता है। निदा फाजली इसे बखूबी कहते हैं 'मेरी आवाज तो परदा है मेरे

'परम सुंदरी' ने वीकेंड पर लगाई छलांग

सिद्धार्थ मल्होत्रा और जान्हवी कपूर की फिल्म ने 9वें दिन छाप डाले इतने करोड़

सिद्धार्थ मल्होत्रा और जान्हवी कपूर की फिल्म 'परम सुंदरी' को रिलीज हुए 9 दिन हो गए है। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई कर रही है। इसने वीकेंड पर भी करोड़ों रुपये का कलेक्शन किया है। जानिए इसने 6 सितंबर, शनिवार को इसने कितने करोड़ रुपये कमाए हैं। पढ़ें ये रिपोर्ट।

'परम सुंदरी' बॉक्स ऑफिस कलेक्शन डे 9

दिल्ली का लड़का परम (सिद्धार्थ मल्होत्रा) और साउथ इंडियन लड़की सुंदरी (जान्हवी कपूर)। फिल्म का नाम 'परम सुंदरी'। तुषार जलोटा के डायरेक्शन में बनी ये मूवी 29 अगस्त 2025 को थिएटर्स में रिलीज हुई थी। ओपनिंग डे पर 7.25 करोड़ रुपये से खाता खोला और अब 9वें दिन कितने करोड़ का कलेक्शन किया है, आइये जानते हैं। पहले बता दें कि 'परम सुंदरी' प्रोड्यूस किया है।

'परम सुंदरी' की कहानी

कहानी दिल्ली में रहने वाले एक लड़के की है, जो बिजनेस की दुनिया में नाम कमाना चाहता है, लेकिन सारे आइडिया फ्लॉप हो जाते हैं। फिर उसे एक ऐप के बारे में पता चलता है, जो आपको आपके सोलमेट से मिलवाती है। परम इस ऐप को ट्राई करने के लिए अपनी सोलमेट से मिलने जाता है, जो साउथ इंडिया में रहती है। जब दोनों के बीच कुछ-कुछ होने लगता है तो परम को पता चलता है कि वो ऐप और ऐप बनाने वाला दोनों फ्रॉड हैं। तो क्या वो अब सुंदरी को छोड़ देगा या फिर यही उसका सच्चा प्यार है, ये जानने के लिए आपको पूरी फिल्म देखनी पड़ेगी।

परिणीति के चेहरे पर नजर आया प्रेग्नेंसी ग्लो

बॉलीवुड अदाकारा परीणीति चोपड़ा इन दिनों अपनी मां बनने के बाद अनाउंसमेंट के बाद से ही सुर्खियों में हैं। अपने फैंस के साथ उन्होंने जैसे ही इस खबर को बताया कि वो मां बनने वाली हैं तो सोशल मीडिया पर बधाइयों का तांता लग गया। अब इस ऐलान के बाद वो पहली बार किसी पब्लिक इवेंट में नजर आई हैं। एक कार्यक्रम में पहुंचीं परीणीति पारंपरिक काले अनारकली सूट में नजर आईं। उनके चेहरे पर प्रेग्नेंसी का ग्लो दिख रहा था। जैसे ही उनकी तस्वीरें और वीडियो सामने आए, फैन्स ने सोशल मीडिया पर जमकर प्यार लुटाया।

इंस्टाग्राम पोस्ट से किया ऐलान

बता दें अभिनेत्री और उनके पति राघव चड्ढा ने बीते 25 अगस्त को इंस्टाग्राम पर अपने नए सफर की घोषणा की थी। उन्होंने एक प्यारे कैप्शन के साथ बताया था कि उनकी छोटी सी खुशी आने वाली है। इसके बाद से ही प्रशंसकों, दोस्तों और बॉलीवुड से जुड़ी हस्तियों ने उन्हें शुभकामनाएं भेजनी शुरू कर दीं।

परीणीति और राघव की प्रेम कहानी

यह रिश्ता भी कम दिलचस्प नहीं रहा। लंबे समय से एक-दूसरे को जानने के बावजूद उनकी नजदीकियां लंदन में हुए एक एलुमनाई इवेंट से बढ़नी शुरू हुईं। दोस्ती धीरे-धीरे प्यार में बदली और आखिरकार मई 2023 में दोनों ने दिल्ली में सगाई की। कुछ ही महीनों बाद, सितंबर में उदयपुर की झीलों के बीच उन्होंने करीबी रिश्तेदारों और दोस्तों की मौजूदगी में सात फेरे लिए। शादी के बाद साझा की गई तस्वीरों में दोनों ने लिखा था कि हमारी पहली मुलाकात से ही दिलों ने कह दिया था कि यह सफर हमेशा का होगा।

सर्वश्रेष्ठ निर्देशक पुरस्कार जीतने के बाद भावुक हुई अनुपर्णा

महिलाओं को अवॉर्ड किया समर्पित

भारतीय फिल्म निर्देश अनुपर्णा रॉय ने देश का परचम लहराया है। वेनिस फिल्म फेस्टिवल में दिखाई गई एकमात्र भारतीय फिल्म- च्सॉन्गस ऑफ फॉरगॉटन ट्रीज' के लिए अनुपर्णा को सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का सम्मान दिया गहया। क्यों खास है अनुपर्णा की ये उपलब्धि? क्या है फिल्म की कहानी? जानिए सबकुछ।

इटली में आयोजित 82वें वेनिस फिल्म: फेस्टिवल में भारत का डंका बजा है। पूरे देश लिए गर्व के इन लम्हों को सहेजने का श्रेय फिल्ममेकर अनुपर्णा रॉय को जाता है। उनकी फिल्म च्सॉन्गस ऑफ फॉरगॉटन ट्रीज' के लिए उन्हें ओरिजोंटी सेक्शन का सर्वश्रेष्ठ निर्देशक पुरस्कार प्रदान किया गया। इस पुरस्कार की घोषणा ओरिजोंटी जूरी की अध्यक्ष, फ्रांसीसी फिल्मकार जूलिया ड्यूकुनों ने समापन समारोह के दौरान की। भारतीय सिनेमा के लिए यह उपलब्धि महत्वपूर्ण मील का पत्थर मानी जा रही है।

अवॉर्ड जीतने के बाद क्या बोलीं अनुपर्णा रॉय?: इस खिताब को जीतने के बाद नम आंखों के साथ अनुपर्णा रॉय ने अवॉर्ड उन सभी महिलाओं को समर्पित किया जो अपने खिलाफ हो रहे अत्याचार के खिलाफ या किसी भी मुद्दे पर अपनी आवाज नहीं उठा पाती हैं। अनुपर्णा रॉय ने कहा, 'यह फिल्म उन हर महिलाओं को समर्पित है, जिनकी आवाज कभी दबा दी गई, जिन्हें नजरअंदाज किया गया या कम आंका गया। मेरी कामना है कि यह जीत और अधिक आवाजों और ज्यादा कहानियों और महिलाओं को सिनेमा ही नहीं बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में और अधिक ताकत देने की प्रेरणा बने।'

प्रवासी महिलाओं की जिंदगी पर आधारित है फिल्म: अनुपर्णा रॉय की इस फिल्म से अनुराग कश्यप भी जुड़े हैं। खास बात ये भी रही कि इस वर्ष के ओरिजोंटी सेक्शन में शामिल होने वाली एकमात्र भारतीय फिल्म- सॉन्ग्स ऑफ फॉरगॉटन ट्रीज' ही रही। मुंबई में प्रवासी महिलाओं की जिंदगी पर आधारित इस फिल्म में आधी आबादी के अकेलेपन, संघर्ष और क्षणिक रिश्तों के बीच जीने का रास्ता तलाशने की जिजिविषा को दिखाया गया है।

कलाकारों और अनुराग कश्यप का विशेष आभार: इटली के वेनिस शहर में अवॉर्ड लेने मंच पर सफेद साड़ी में पहुंचीं अनुपर्णा रॉय ने देश के परिधान को भी सात समंदर पार खास तौर पर स्थान दिलाया। उन्होंने इस सम्मान को 'सपना सच होने जैसा लम्हा' बताया। उन्होंने जूरी, अपनी टीम, कलाकारों और अनुराग कश्यप का विशेष आभार व्यक्त किया।

ईशा गुप्ता ने पूरी की धमाल 4 की शूटिंग

बॉलीवुड की सबसे ग्लैमरस और बहुमुखी अभिनेत्रियों में से एक, ईशा गुप्ता अब अपनी कॉमिक टाइमिंग और दमदार स्क्रीन प्रेजेन्स से दिल जीतने के लिए तैयार हैं धमाल 4 में। अजय देवगन और पूरी एनसेंबल कास्ट के साथ बड़े पैमाने पर शूटिंग करने के बाद, अभिनेत्री ने अब अपनी शूटिंग पूरी कर ली है और निर्माताओं ने आधिकारिक तौर पर इंद्र कुमार की इस बहुप्रतीक्षित कॉमिडी एक्स्ट्रावैगेंज़ा का रैप-अप घोषित कर दिया है। ईशा के लिए धमाल 4 अजय देवगन के साथ उनकी तीसरी फिल्म है, बादशाहो और टोटल धमाल के बाद। पिछले महीने अजय और ईशा को माथ आइलैंड में महत्वपूर्ण सीक्वेंसेज शूट करते हुए देखा गया था, जहां उनके साथ रितेश देशमुख, अरशद वारसी, जावेद जाफरी, रवि किशन, संजय मिश्रा और अन्य कलाकार भी शामिल थे। रैप-अप के मौके पर ईशा ने कहा धमाल जैसी दर्शकों की पसंदीदा फ्रेंचाइज का हिस्सा बनना मेरे लिए एकदम खुशी की बात है। इंद्र सर, अजय और पूरी टीम के साथ काम करना, टोटल धमाल के बाद एक बार फिर, अविस्मरणीय अनुभव रहा। अजय एक पावरहाउस टैलेंट हैं, और सेट पर उनकी सहजता और एनर्जी सबको और बेहतर बना देती है। सेट का माहौल हमेशा मजेदार, हंसी-खुशी और पॉजिटिविटी से भरा रहा। मैं बेसब्री से इंतजार कर रही हूं कि दर्शक वो पागलपन और मस्ती देखें जो हमने क्रिएट की है। शूट खत्म करना मेरे लिए बेहद खास है क्योंकि ये फिल्म सच में प्योर एंटरटेनमेंट है और इसका हिस्सा बनकर मैं बेहद उत्साहित हूं।

अभिनेत्री निकिता घाग और उसके साथियों पर फिल्म निर्माता से बंदूक की नोक पर 10 लाख ट्रांसफर कराने का आरोप

बॉलीवुड से जुड़े अंधेरी वेस्ट इलाके में एक सनसनीखेज घटना सामने आई है। फिल्म निर्माता कृष्णाकुमार वीरसिंह मीणा उर्फ के. कुमार (48) ने आरोप लगाया है कि अभिनेत्री निकिता घाग और उसके सहयोगियों ने उन्हें बंधक बनाकर बंदूक की नोक पर 10 लाख रुपए जबरन ट्रांसफर करवाए। इस घटना के बाद अंबोली पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज कर लिया गया है। फिल्म निर्माता कृष्णाकुमार वीरसिंह मीणा उर्फ के. कुमार (48) ने मामला दर्ज कराया है। उन्होंने बताया कि 14 अगस्त की शाम निकिता घाग 10 से अधिक लोगों के साथ उनके स्टूडियो, चित्रलेखा हेरिटेज पहुंची।

गणपति विसर्जन के बाद अक्षय कुमार ने किया ऐसा काम, यूजर्स ने की जमकर तारीफ

अक्षय कुमार को रविवार सुबह मुंबई के जुहू बीच पर कई लोगों के साथ देखा गया। वह गणपति विजर्सन कार्यक्रम के समापन के बाद यहां पहुंचे थे। जुहू बीच पर एक्टर ने ऐसा काम किया कि सोशल मीडिया पर उनकी वाहा-वाही हो रही है। अक्षय कुमार सोशल मैसेज वाली फिल्मों के जरिए तो लोगों को अवेयर करते हैं। साथ ही वह समय-समय पर अपनी नैतिक जिम्मेदारी भी समाज और देश को लेकर निभाते हैं। हाल ही में गणपति विजर्सन समापन के बाद एक्टर ने जुहू बीच पर कुछ ऐसा काम किया कि सोशल मीडिया पर उनकी तारीफ होने लगी।

यूजर्स ने की खिलाड़ी कुमार की तारीफ

सोशल मीडिया पर अक्षय कुमार के इस प्रयास की सराहना हो रही है। एक यूजर ने लिखा, अक्षय कुमार हमेशा अच्छा काम करते हैं।' अन्य यूजर ने अक्षय के लिए हार्ट और फायर इमोजी सोशल मीडिया पर साझा किए और एक्टर की पहल को सराहा है।

सोशल मीडिया पर अक्षय कुमार का एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें वह गणेश विसर्जन के बाद जुहू बीच पर फैले कचरे को साफ करते हुए दिखाई दिए। महाराष्ट्र के सीएम देवेंद्र फडणवीस की पत्नी अमृता फडणवीस ने इस क्लिन अप ड्राइव को होस्ट किया है। अक्षय कुमार के साथ वायरल वीडियो में वह भी सफाई करती हुई नजर आईं।

'अयोध्या रामलीला' में सीता बनेंगी मिस यूनिवर्स इंडिया मनिका

मिस यूनिवर्स इंडिया 2025 का खिताब अपने नाम करने वाली मनिका विश्वकर्मा 'अयोध्या रामायण' में माता जानकी का रोल अदा करेंगी। उन्होंने खुशी जताते हुए कहा कि प्रभु श्रीराम की कृपा से यह अवसर मिला है। 'मिस यूनिवर्स इंडिया 2025' का खिताब जीतने वाली मनिका विश्वकर्मा आगामी वार्षिक नाट्य समारोह 'अयोध्या रामलीला' में हिस्सा ले रही हैं। इस रामलीला में वे माता सीता की भूमिका निभाती नजर आएंगी। मालूम हो कि 'अयोध्या रामलीला' को दुनिया की सबसे बड़ी रामलीला माना जाता है। यह मौका मिलने पर मनिका बेहद खुश हैं और इसे श्रीराम की कृपा बता रही हैं।

मनिका ने फैंस से किया अनुरोध

अयोध्या की रामलीला के इंस्टाग्राम अकाउंट से एक पोस्ट शेयर किया गया है। इसमें मनिका बोलती दिख रही हैं, 'जय श्रीराम, मैं अयोध्या की रामलीला में माता सीता का किरदार अदा करने जा रही हूं। यह मेरे लिए एक सौभाग्य की बात है कि भगवान श्रीराम के आशीर्वाद, बजरंगबली के आशीर्वाद और अयोध्यावासियों के आशीर्वाद से यह किरदार अदा करूंगी।

'यूजर्स के निशाने पर आईं साई पल्लवी, 'मां सीता के लिए कास्टिंग खराब है...

साउथ की फेमस एक्ट्रेस साई पल्लवी हाल ही में एक अवॉर्ड शो में नजर आईं। उनके वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं। कुछ उनकी सादगी की तारीफ कर रहे हैं तो किसी को 'रामायणम' में माता सीता के लिए उनकी कास्टिंग पसंद नहीं आ रही है। उनके वीडियो पर सभी के मिले-जुले रिएक्शन आ रहे हैं। साई पल्लवी के वायरल वीडियो पर यूजर्स ने खूब रिएक्ट किया है। एक ने कहा, 'पुरानी रामायण बेस्ट है।' दूसरे ने कहा, 'मां सीता के लिए इससे बुरा कोई विकल्प नहीं हो सकता।' अन्य ने कहा, 'मां सीता के लिए बेजान चेहरा अच्छी पसंद नहीं है! कास्टिंग बहुत खराब है।' हालांकि, साई पल्लवी के फैंस उनके सपोर्ट में हैं। उनका कहना है कि वो बहुत प्यारी दिख रही हैं और 'रामायण' में मां सीता के रोल के लिए परफेक्ट हैं।

संपर्क पोर्टल व गूगल शीट अपडेट पर जिला स्तरीय प्रशिक्षण सम्पन्न

समयबद्ध शिकायत निस्तारण एवं पारदर्शिता पर दिया गया बल

जयपुर टाइम्स

सवाई माधोपुर (निस.) कलेक्ट्रेट सभागार में मंगलवार को राजस्थान संपर्क पोर्टल और गूगल शीट अपडेट के प्रभावी संचालन को लेकर जिला स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण की अध्यक्षता जिला कलक्टर काना राम ने की, जबकि संचालन संयुक्त निदेशक सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग पंकज मीना द्वारा किया गया। कार्यक्रम में जिला स्तर पर अधिकारी कलेक्ट्रेट में तथा ब्लॉक स्तर पर पंचायत समिति वीसी कक्षों में जुड़े, जिससे पूरे जिले में

प्रशिक्षण सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रशिक्षण में अधिकारियों को बताया गया कि संपर्क पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों का समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। इसके साथ ही नकारात्मक समाचारों, कार्यालय स्तरीय जनसुनवाई और प्रतिदिन की कार्यवाही का गूगल शीट पर नियमित अपडेट कर विभागवार रिपोर्टिंग को पारदर्शी बनाया जाए। जिला कलक्टर काना राम ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे एसएसओ लॉगिन के माध्यम से प्रतिदिन लंबित शिकायतों की समीक्षा करें। दस दिन से अधिक समय से लंबित मामलों का सत्यापन कर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करें और निस्तारण के साथ संबंधित दस्तावेज भी अपलोड करें। उन्होंने मुख्यमंत्री जनसुनवाई पोर्टल से प्राप्त प्रवादों की विशेष मॉनिटरिंग कर समयबद्ध समाधान पर जोर दिया। कलक्टर ने कहा कि यह प्रशिक्षण आमजन को बेहतर सेवाएं उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने अधिकारियों को क्षेत्रवार समस्याओं के त्वरित समाधान और मासिक समीक्षा के साथ प्रगति रिपोर्ट समय पर प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। कार्यक्रम में जिले के सभी विभागों के अधिकारी एवं कार्मिक उपस्थित रहे और तकनीकी प्लेटफॉर्म पर कार्य करने हेतु आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त किया।

वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा में उपस्थिति 50 फीसदी रही

जयपुर टाइम्स

जयपुर (निस.) राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित की जा रही वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा में मंगलवार को क्षेत्र में बनाए गए परीक्षा केंद्रों पर परीक्षार्थी 50 फीसदी भी नहीं पहुंच पाए। अधिकांश परीक्षार्थियों के नहीं पहुंचने का कारण दूर दराज के इलाकों में परीक्षा केंद्र का आवंटन रहा। कुछ महिला अभ्यर्थी राजस्थानी पोशाक में भी परीक्षा देने पहुंची। केंद्राधीक्षक दीपक शर्मा ने बताया कि क्षेत्र के बगवाड़ा स्थित एसएन महाविद्यालय में बनाए गए परीक्षा केंद्र पर प्रातः कालीन पारी में 600 में से 355 अभ्यर्थी उपस्थित रहे, वहीं अपराह्न की पारी में आयोजित किए गए वैकल्पिक विषय के पेपर में 600 अभ्यर्थियों में से 358 में उपस्थिति दी। सुबह की पारी में कुछ अभ्यर्थी लेट पहुंचे। समय उपरांत पहुंचने पर अभ्यर्थियों को एंट्री नहीं मिली, जिससे उन्हें निराशा का सामना करना पड़ा।

टोल प्लाजा पर गलत ई-चालान बनने पर करें ऑनलाइन शिकायत, आरटीओ ने बताया प्रोसेस

जयपुर टाइम्स

उदयपुर (निस.) नेशनल हाईवे के टोल नाकों पर कई बार वाहन चालकों को गलत चालान की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। अब ऐसे मामलों में वाहन मालिकों को राहत देने के लिए परिवहन विभाग ने शिकायत दर्ज कराने की सुविधा शुरू की है। उदयपुर के प्रादेशिक परिवहन अधिकारी (आरटीओ) ज्ञानदेव विश्वकर्मा ने बताया कि सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय की ओर से नेशनल हाईवे टोल नाकों पर ई-डिटेक्शन प्रणाली के जरिए चालान बनाए जा रहे हैं। वाहन के कागज अधूरे या अवैध पाए जाने पर यह सिस्टम ऑटोमैटिक चालान जेनरेट करता है। आरटीओ ने बताया कि कई वाहन मालिकों ने यह शिकायत की थी कि उनके सभी कागज पूरे और वैध होने के बावजूद भी चालान बन रहा है। ऐसे वाहन मालिक ई-चालान की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर शिकायत दर्ज करा सकते हैं। वेबसाइट पर कंप्लेंट ऑप्शन उपलब्ध है, जहां शिकायतकर्ता को अपना नाम, मोबाइल नंबर, चालान नंबर जैसी जानकारी भरनी होगी। साथ ही संबंधित दस्तावेजों को अपलोड करना अनिवार्य है। शिकायत दर्ज होने के बाद आवेदक को एक शिकायत नंबर दिया जाएगा। इस नंबर की मदद से वह अपनी शिकायत की स्थिति ऑनलाइन देख सकेगा। शिकायत दर्ज होते ही परिवहन विभाग संबंधित मामले की जांच करेगा और यदि चालान गलत पाया गया तो उसे नियमों के अनुसार निरस्त किया जाएगा। आरटीओ ने वाहन मालिकों से अपील की है कि वे केवल वैध कागजात के साथ वाहन चलाएं और यदि गलत चालान बनता है तो घबराएं नहीं, बल्कि ऑनलाइन शिकायत दर्ज कर राहत प्राप्त करें।

असिस्टेंट प्रोफेसर परीक्षा की 14 विषयों की आंसर की जारी, 12 सितंबर तक ऑनलाइन दर्ज होंगी आपत्तियां

जयपुर टाइम्स

अजमेर (निस.), राजस्थान लोक सेवा आयोग ने असिस्टेंट प्रोफेसर (चिकित्सा शिक्षा विभाग) प्रतियोगी परीक्षा-2024 की 14 विषयों की मॉडल आंसर की जारी कर दी है। आयोग ने इसकी विस्तृत सूचना अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध कराई है। जिन अभ्यर्थियों को इन आंसर की पर कोई आपत्ति है, वे 10 से 12 सितम्बर 2025 की मध्यरात्रि 12 बजे तक ऑनलाइन आपत्ति दर्ज करवा सकेंगे। आयोग के मुख्य परीक्षा नियंत्रक आशुतोष गुप्ता ने बताया कि इन विषयों की परीक्षा 3 और 4 जुलाई 2025 को आयोजित की गई थी। अभ्यर्थियों को निर्देश दिया गया है कि वे अपनी आपत्तियां आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध मॉडल प्रश्न पत्र के क्रमानुसार ही सब्मिट करें। प्रत्येक आपत्ति के साथ प्रामाणिक पुस्तकों के संदर्भ अवश्य संलग्न करने होंगे। यदि प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया तो आपत्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा। आयोग ने स्पष्ट किया कि केवल उन्हीं अभ्यर्थियों की आपत्तियां स्वीकार की जाएंगी, जिन्होंने परीक्षा में भाग लिया है। बाहरी व्यक्तियों द्वारा दर्ज आपत्तियों पर विचार नहीं होगा। प्रत्येक प्रश्न पर आपत्ति दर्ज करने के लिए 100 रुपये शुल्क (सेवा शुल्क अतिरिक्त) निर्धारित किया गया है। अभ्यर्थी एसएसओ पोर्टल में लॉगिन कर रिक्रूटमेंट पोर्टल पर उपलब्ध क्वेश्चन ऑब्जेक्शन लिंक के माध्यम से आपत्ति दर्ज कर सकते हैं। शुल्क का भुगतान ई-मित्र कियोस्क अथवा पोर्टल पर उपलब्ध ऑनलाइन पेमेंट गेटवे से किया जा सकता है। एक बार जमा किया गया शुल्क वापस नहीं लौटाया जाएगा। ऑनलाइन आपत्ति दर्ज करने की प्रक्रिया केवल एक बार ही होगी और अंतिम तिथि 12 सितम्बर 2025 रात 12 बजे तक है। इसके बाद लिंक निष्क्रिय कर दिया जाएगा।

बस में महिला के गहने पार करने वाले 2बदमाश गिरफ्तार

पाली

(निस.) पाली में निजी बस में सफर कर रही एक महिला के बैग से लाखों रुपए के सोने-चांदी के गहने चुराने के मामले का पुलिस ने खुलासा किया है। पुलिस ने मामले में 2 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इनसे पूछताछ जारी है। कोतवाल अनिल कुमार ने बताया कि 13 अप्रैल 2025 को शिवपुरा थाना क्षेत्र के सडारडा गांव निवासी तारादेवी पत्नी लक्ष्मण जाट ने रिपोर्ट दी। जिसमें बताया कि 8 अप्रैल को वह पुणे से निजी बस में बैठी। 9 अप्रैल की सुबह पाली बस स्टैंड के पास उतरी। जहां उसने बैग में रखे सोने-चांदी के गहने चेक किए तो गायब मिले। इस पर कोतवाली थाने पहुंचे रिपोर्ट दर्ज करवाई। मामले में पुलिस ने बस से चढ़ने और उतरने वाले यात्रियों का डाटा खंगाला। कई पॉइंट से सीसीटीवी फुटेज खंगाले। आखिरकार कड़ी से कड़ी जोड़ते हुए गुजरात के नडियाद वैशाली सिनेमा के पीछे, बड़ी सब्जी मंडी निवासी 23 साल के करण पुत्र कन्नू भाई और गुजरात के खेड़ा नडियाद नीलकंठ महादेव मंदिर रोड निवासी 21 साल के विशाल उर्फ उन्देडी पुत्र पुरुषोत्तम भाई को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया। जिन्होंने वारदात करना कबूल किया। जिनकी निशानदेही पर पुलिस ने चोरी किए गए गहने भी बरामद किए।

जिला बाल पीड़ित प्रतिकर सहायता समिति की बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

सवाई माधोपुर (निस.) राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर के निर्देशों की पालना में मंगलवार को जिला बाल पीड़ित प्रतिकर सहायता समिति की बैठक का आयोजन किया गया। यह बैठक जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव समीक्षा गौतम की अध्यक्षता में ऑनलाइन माध्यम (वीसी) से संपन्न हुई। बैठक में अतिरिक्त जिला कलक्टर संजय शर्मा, अध्यक्ष बाल कल्याण समिति श्वेता गर्ग तथा विशेष महिला अपराध अनुसंधान इकाई के सब इंस्पेक्टर रामस्वरूप सहित समिति के पदेन सदस्यगण मौजूद रहे। बैठक में लंबित बाल पीड़ित प्रतिकर के संबंध में प्राप्त प्रार्थना पत्रों तथा वर्ष 2019 से 2025 तक दर्ज एफआईआरों में पात्र बाल पीड़ितों को प्रतिकर दिलाए जाने की अनुशंसा पर विचार-विमर्श किया गया। सचिव समीक्षा गौतम ने सदस्यों को किशोर न्याय समिति एवं राजस्थान उच्च न्यायालय के निर्देशों की जानकारी देते हुए कहा कि पात्र बाल पीड़ितों को समयबद्ध प्रतिकर उपलब्ध कराने के लिए समिति द्वारा आवश्यक अनुशंसाएं कार्यालय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण को भिजवाई जाएंगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि बालश्रम, पोक्सो एक्ट तथा अन्य बाल अपराधों से

संबंधित प्रकरणों की एफआईआर की प्रति तत्काल जिला विधिक सेवा प्राधिकरण को उपलब्ध कराई जाए। साथ ही यदि किसी मामले में पीड़ित अथवा उसके आश्रित द्वारा आवेदन प्रस्तुत किया जाता है तो उसे आवश्यक दस्तावेजों सहित शीघ्र प्रेषित किया जाए। बैठक के दौरान समिति ने यह भी तय किया कि सभी लंबित मामलों की प्राथमिकता से समीक्षा कर प्रतिकर सहायता की कार्यवाही को गति दी जाएगी, ताकि पीड़ित बच्चों और उनके आश्रितों को शीघ्र राहत मिल सके।

स्वरोजगारियों के लिए बकाया ऋण से राहत का सुनहरा अवसर

अनुसूचित जाति-जनजाति वित्त विकास निगम ने लागू की एकमुश्त समाधान योजना 2025-26

जयपुर टाइम्स

सवाई माधोपुर, (निस.) स्वरोजगार क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों के लिए राजस्थान अनुसूचित जाति जनजाति वित्त एवं विकास सहकारी निगम लिमिटेड, सवाई माधोपुर ने बड़ी राहत की घोषणा की है। निगम ने बकाया ऋण की वसूली में सहूलियत देने हेतु एकमुश्त समाधान योजना 2025-26 लागू की है। इस योजना का उद्देश्य अनुसूचित जाति, जनजाति, सफाईकर्मी, अन्य पिछड़ा वर्ग और दिव्यांग वर्ग के लाभार्थियों को आर्थिक राहत प्रदान करना है। उप निदेशक सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग मीना आर्य ने बताया कि योजना के तहत दो अवधि तय की गई हैं। पहली अवधि के अनुसार, जिन व्यक्तियों का मूलधन 31 मार्च 2024 तक अतिदेय है, वे 1 मई से 30 सितम्बर 2025 के बीच अपने अतिदेय मूलधन का भुगतान कर सकते हैं। इस स्थिति में मूलधन से जुड़े ब्याज और शास्ति पूरी तरह माफ कर दिए जाएंगे। दूसरी अवधि में वे ऋणी शामिल होंगे जिन पर 31 मार्च 2024 तक मूलधन और ब्याज दोनों की बकाया राशि है। ऐसे लाभार्थी 1 अक्टूबर से 31 दिसम्बर 2025 तक अपनी संपूर्ण बकाया राशि जमा करवा सकते हैं। इस अवधि में जमा कराए गए मूलधन और ब्याज पर शास्ति माफ की जाएगी। निगम ने स्पष्ट किया है कि पहली अवधि की अंतिम तिथि 30 सितम्बर 2025 और दूसरी अवधि की अंतिम तिथि 31 दिसम्बर 2025 निर्धारित की गई है। योजना का लाभ उठाने के इच्छुक सभी लाभार्थी कार्यालय समय में संबंधित कार्यालय से संपर्क कर सकते हैं। यह पहल स्वरोजगारियों को कर्जमुक्त करने और उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

ग्रेड थर्ड शिक्षक भर्ती में पूर्व सैनिकों का रास्ता साफ, सुप्रीम कोर्ट से एसएलपी वापस

जयपुर टाइम्स

जयपुर (कास.)राजस्थान में ग्रेड थर्ड शिक्षक भर्ती में अब पूर्व सैनिकों की नियुक्ति का रास्ता साफ हो गया है। राज्य सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में दायर विशेष अनुमति याचिका (एसएलपी) को वापस लेने का निर्णय लिया है। यह एसएलपी पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के समय दायर की गई थी, जिसके कारण लंबे समय से मामला अटका हुआ था। सरकार के इस फैसले से पूर्व सैनिकों में खुशी की लहर है। बड़ी संख्या में पूर्व सैनिक एकजुट होकर राजधानी में मिले और इस निर्णय का स्वागत किया। उन्होंने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के प्रति आभार व्यक्त किया। पूर्व सैनिकों ने कहा कि उन्होंने धैर्य और अनुशासन के साथ संघर्ष जारी रखा और अब उन्हें न्याय मिला है। उनका मानना है कि देश सेवा के बाद शिक्षा के क्षेत्र में योगदान देकर वे आने वाली पीढ़ी को तैयार करेंगे और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएंगे। इस अवसर पर पूर्व सैनिकों ने कहा कि वे केवल किताबों तक बच्चों की शिक्षा को सीमित नहीं रखेंगे, बल्कि उन्हें जीवन की कठिन परिस्थितियों का सामना करने की हिम्मत और राष्ट्रहित सर्वोपरि होने का पाठ भी पढ़ाएंगे। गौरतलब है कि पूर्व सैनिक लंबे समय से इस मांग को लेकर संघर्षरत थे। अब सरकार द्वारा एसएलपी वापस लेने से उनके लिए ग्रेड थर्ड शिक्षक भर्ती में शामिल होने का रास्ता पूरी तरह खुल गया है। इससे बड़ी संख्या में पूर्व सैनिकों को रोजगार का अवसर मिलेगा और शिक्षा व्यवस्था को भी अनुभवी और अनुशासित शिक्षकों का लाभ मिलेगा।

जिला निष्पादन समिति की बैठक का हुआ आयोजन

जयपुर टाइम्स

धौलपुर (निस.)। जिला स्तरीय निष्पादन समिति की बैठक का आयोजन जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी की अध्यक्षता में जिला कलक्ट्रेट सभागार में हुआ। बैठक में एनएएस सर्वे, नामांकन, आधार एवं जनाधार प्रमाणीकरण, बोर्ड परीक्षा परिणाम, बालिका शिक्षा, मॉडल स्कूल समीक्षा, आईसीटी लैब की समीक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, स्मार्ट क्लास, समग्र शिक्षा विभिन्न कार्यों की प्रगति के संबंध में एजेंडावार जानकारी ली और आवश्यक निर्देश दिए। जिला कलक्टर ने शिक्षा विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये कि शैक्षिक उन्नयन के लिए नियमित रूप से तकनीकी ज्ञान को बढ़ावा दिया जाये। विद्यालयों की आईसीटी लैब को नियमित उपयोग कर क्रियाशील रखा जाये। आरकेएसएमबीके के अन्तर्गत विद्यार्थियों के अधिगम संबंधी दक्षताओं को बढ़ाने के लिए कार्य करने के निर्देश दिए। सभी स्कूलों में गहन मॉनीटरिंग की जाये ताकि एमडीएम, शैक्षिणक योजनाएं, परीक्षा परिणाम और शैक्षिक उन्नयन हो व अन्य सुधार हो। उन्होंने कहा कि जिले में अत्यधिक वर्षा होने के कारण जर्जर हुए विद्यालयों के गुणवत्तापूर्ण मरम्मत कार्य किया जाना सुनिश्चित करें। जर्जर हालत वाले कक्षा कक्षों में किसी प्रकार की गतिविधियों का संचालन नहीं किया जाए। बैठक में मिड-डे मील योजना के अंतर्गत बच्चों को गुणवत्तापूर्ण एवं समय पर भोजन उपलब्ध कराने की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया गया। कलेक्टर ने कहा कि बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण स्तर को बेहतर बनाने के लिए योजना के क्रियान्वयन में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने शिक्षा विभाग के अधिकारियों से स्कूलों में मिड-डे मील की नियमित निगरानी, मेन्यू के अनुसार भोजन वितरण तथा स्वच्छता मानकों का पालन सुनिश्चित करने को कहा। उन्होंने बाल वाहिनियों के सुरक्षा पैरामीटर की जांच कर मानकों पर खरी उतरने वाली वाहिनियों को ही संचालित करने के निर्देश दिए।

जिला निष्पादन समिति की समीक्षा के दौरान विभिन्न विकास योजनाओं की प्रगति पर भी चर्चा की गई। कलेक्टर ने अधिकारियों से कहा कि जो भी योजनाएं लंबित हैं, उन्हें प्राथमिकता के आधार पर पूर्ण करें। एडीपीसी महेश मंगल ने पीपीटी के माध्यम से समस्त एजेंडे संबंधी बिंदुबार जानकारी दी। बैठक में मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद ए एन सोमनाथ, अतिरिक्त जिला कलक्टर हरिराम मीना, जिला शिक्षा अधिकारी सुक्खो देवी सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

बाल विवाह प्रतिषेध अधिकारी अपने प्रत्येक कर्तव्यों का निर्वहन-एडीएम

बाल विवाह प्रतिषेध के संबंध में समीक्षा बैठक का हुआ आयोजन।

जयपुर टाइम्स

धौलपुर (निस.)। बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम के प्रभावी क्रियान्वयन एवं बाल विवाह रोकथाम के लिए अतिरिक्त जिला कलक्टर हरिराम मीना की अध्यक्षता में अटल सेवा केन्द्र में वीसी के माध्यम से समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में उन्होंने उपखण्ड अधिकारी एवं बाल विवाह रोकथाम के लिए कार्य करने वाली संस्थाओं के प्रतिनिधियों को निर्देशित करते हुए कहा कि निर्धन परिवार में बाल विवाह होने की संभावना अधिक रहती है। ग्राम पंचायतों में होने वाली ग्राम सभाओं में एव नो बैग डे के दिन विद्यालयों में छात्र-छात्राओं से निबंध प्रतियोगिता प्रार्थना सभा के दौरान बाल विवाह से होने वाले हानियों के बारे में जागरूक करे एवं उपखण्ड अधिकारी समस्त तहसीलदार, पटवारी, ग्राम विकास अधिकारी

के माध्यम से निर्धन परिवारों को बाल विवाह से होने वाली हानियों एवं रूढ़वादी परम्पराओं को छोड़ने के लिए जागरूक करें। बाल विवाह प्रतिषेध अधिकारी अपने प्रत्येक कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए बाल विवाह को रोकने का अधिक से अधिक प्रयास करें। उन्होंने सभी अधिकारियों से बाल विवाह रोकथाम में सक्रिय भूमिका निभाने का आग्रह करते हुए कहा कि बाल विवाह न केवल बच्चों के स्वास्थ्य और शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव डालता है, बल्कि समाज के समग्र विकास में भी बाधा उत्पन्न करता है। उन्होंने संबंधित विभागों को अभियान को गति देने, लक्षित क्षेत्रों में विशेष कार्यक्रम आयोजित करने तथा जनभागीदारी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बाल विवाह करने वाले कोई भी व्यक्ति के बारे में हेल्पलाइन नम्बर 1098, 100 या 181 पर बाल विवाह की सूचना दे सकते है। जिसमे उसकी पहचान गोपनीय रहेगी।

बाल विवाह के सूचना पर तत्काल जारी होगी निषेधाज्ञा

उन्होंने सभी बाल विवाह प्रतिषेध अधिकारियों को बाल विवाह की सूचना पर तत्काल प्रथम श्रेणी न्यायिक मजिस्ट्रेट से निषेधाज्ञा जारी करवाने के निर्देश दिए। निषेधाज्ञा जारी होने के बाद भी यदि शादी होगी तो वह प्रारम्भ से ही शून्य होगी। उसका कोई पंजीकरण नहीं हो सकेगा और पता चलने पर तत्काल एफआईआर होगी।

उन्होंने बताया कि विवाह अधिनियम 2006 के तहत बाल विवाह अपराध है। जिसकी रोकथाम के लिए आवश्यक दण्डात्मक कार्यवाही किये जाने के प्रावधान है, जिससे कि बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों को रोका जा सके। बाल विवाह रोकथाम हेतु संबंधित विभिन्न प्राधिकरण, विभागों के बाल विवाह प्रतिषेध अधिकारियों द्वारा बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 के तहत कार्यवाही की जाएगी। बैठक में उपखण्ड अधिकारी धौलपुर डॉ. साधना शर्मा, सहायक निदेशक बाल अधिकारिता विभाग एवं बाल संरक्षण इकाई देवेन्द्र सिंह जांगल, सीबीईओ महेश कुमार मंगल, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक सुक्खो देवी, अध्यक्ष बाल कल्याण समिति मधु शर्मा सहित सम्बन्धित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

वेराराम पुरा गांव में विकास के दावों की खुली पोल

ग्रामीणों ने कहा कि स्टे का बहाना अधिकारियों का झूठ बावजूद कई विकास कार्य हुए

स्कूल जाने वाला मुख्य मार्ग चढ़ा दलदल की भेट विकास हुआ ठप विद्यार्थी डगमगाते हुए कीचड़ से निकलने को मजबूर

बच्चे और ग्रामीण भरी गंदगी से हर रोज निकलने को मजबूर नेता और अधिकारी बने तमाशाबीन एक दिन दलदल से निकल कर बताएं जनाब

डेढ़ साल से नहीं हुआ समाधान बच्चों पर अब तो शर्म करो समस्या बनी जस की तस

जयपुर टाइम्स

सिरोही(निसं.)। राजस्थान के सिरोही जिले की शिवगंज तहसील के गांव वेरा रामपुरा ग्रामवासी पिछले डेढ़ साल से विकास की ओर तरस रहे हैं, और गंदगी का दंश झेल रहे हैं। जिले में लगातार सर्वाधिक बरसात होने के कारण गांव वेराराम पुरा की एक ऐसी कॉलोनी है जहां ग्रामीण तो छोड़ो स्कूल जाने वाले बालक बालिकाएं भी सुरक्षित नहीं हैं,उन पर खतरा बना हुआ है। इस समस्या को लेकर स्थानीय विधायक सांसद समेत शासन प्रशाशन ने आंखें मूंद ली हैं तथा जनप्रतिनिधी और जिम्मेदार अधिकारी कुंभकरण की नींद में सोए हुए हैं। स्थिति इंदिरा कोलोनी कुम्हारों का वास वार्ड नंबर 05 मुख्य गली की तस्वीर देखकर हर किसी के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। पिछले चार पांच दिनों में तेज बारिश होने के कारण गली के मुख्य मार्ग पर पानी बह रहा है,इसके चलते ग्रामीणों के साथ स्कूल जाने वाले विद्यार्थियों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अतः जबकि यह विधालय जाने का मैंन रास्ता है। इस रास्ते से बच्चे ही नही बल्कि गांव के बड़े बुजुर्ग इस समस्या से जुझ रहे हैं। ग्रामीणों की इस समस्या को लेकर कोई धनी धोरी नहीं है और कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है,साथ ही स्थानीय विधायक एवं सांसद भी गंभीर नहीं हैं,जिसका ग्रामीण लंबे समय से खामियाजा भुगत रहे हैं। ग्रामीणों का कहना है कि इस मामले को लेकर कई बार मौखिक लिखित रूप में शिकायत करने के बाद भी पंचायत प्रशासन, जिला और उपखंड प्रशासन व स्थानीय नेता कोई ध्यान नहीं दे रहा है। ग्रामीणों ने कहा कि इस गांव में 20 साल में धरातल पर कोई विकास कार्य नहीं हुआ है । यह गांव नेशनल हाईवे 62 पर आया हुआ है, फिर भी मुलभुत सुविधा से वंचित है। गांव में सी,सी,रोड,पानी नाली निकासी,रोड लाईट आदि से वंचित हैं । विधालय जाने का मुख्य मार्ग होने के बावजूद सभी जिम्मेदारों ने चुप्पी साधी हुई है। हालांकि पांच दिन से बरसात कम होने से पानी और कीचड़ सुख गया है,पर यह समस्या ग्रामीणों के लिए आफत बन गई है।

डेढ़ साल से समस्या का नहीं हुआ समाधान

ग्रामीणों ने जनप्रतिधियों एवं जिम्मेदार अधिकारियों पर विकास कार्य नहीं होने पर भेदभाव का आरोप लगाया है। ग्रामीणों ने बताया कि पिछले डेढ़ साल से इस समस्या से जूझ रहे हैं ओर कितनी बार लिखीत मौखिक शिकायत दर्ज करवाई है,परन्तु आज दिन तक सी,सी रोड तक नहीं बना पाये है। सीसी रोड बनाना तो सौ कोसों दूर है,लेकिन किसी भी सत्ताधारी दल के नेता या अधिकारी ने मौका निरीक्षण तक नहीं किया और कोई समाधान का विकल्प नहीं किया है,जिससे छोटे छोटे बच्चों की पीठ पर थैला,हाथों से पेंट ऊपर कर डगमगाते हुए स्कूल जाने को मजबूर है। समस्या जस की तस बनी हुई है इधर किए गए वादों और विकास की पोल खुल रही है।

कोर्ट स्टे का बहाना झूठा,विकास कार्य शुरू

ग्रामीणों ने बताया कि कोर्ट स्टे का बहाना अधिकारियों का झूठा है। अधिकारी और जनप्रतिनिधी एक तरफ तो कहते हैं कि कोर्ट का स्टे है,इस लिए विकास कार्यों में विलंब हो रहा है, जबकि दूसरी और इसी गली में विकास धमाधम हो रहा है। उन्होंने कहा कि स्टे 2015 में आया हुआ है,बाद पंचायत से एक पानी की पाईप लाईन डाली,नल कनेक्शन दिए गए । उसके बाद 2017/2018 मे स्कूल वाला रोड और स्कूल की बाउंड्री बनी,जवाई बांध योजना के अंतर्गत पाईप लाईन डाली नल कनेक्शन दिए। पंचायत से एनओसी मील रही है और वर्तमान में दो दिन से जंवाई पाईप लाईन रिपेयरिंग का का काम चालू है। इसके अलावा कई तरह के विकास कार्य हो रहे हैं।अतः स्टे आने के बाद इतने सरकारी काम हुए हैं तो फिर स्कूल के पास मुख्य गली कुम्हारो का वास में विकास क्यों नहीं हो रहा है। जबकि गत सोमवार को जेसीबी मशीन से पाइप लाइन डालने का काम हो रहा है। यह कहां तक जायज है सरकार की यह कौनसी पॉलिसी है जोकि ग्रामीणों और स्कूल बच्चों पर विकास के नाम जुर्म किया जा रहा है।

इस दलदल में सांसद विधायक व अधिकारी एक दिन निकल कर बताएं

ग्रामीणों ने बताया कि गांव में विकास नहीं होना नेताओं और अधिकारियों की मनमानी और हठधर्मिता है। एक तरफ स्टे का बहाना तो दूसरी और अब तक कई विकास कार्य हुए हैं तथा वर्तमान में पाइपलाईन डालने का काम किया जा रहा है। यह शासन प्रशाशन की उदासीनता है। लोगों का कहना है कि यह भूल इन नेताओं की नहीं,यह भूल हमारी है कि हमने वोट दिया,उसका नतीजा प्रत्यक्ष रूप से हमारे सामने है। विकास नहीं होना हमारे लिए चुनौती बन गया है, उसका दुख दर्द भोगने को मजबूर है। उन्होंने नेताओं और अधिकारियों से कहा है कि बच्चों के साथ ग्रामीण इस मार्ग से आवागमन रोज करते हैं,आप सिर्फ एक दिन इन दलदल से निकल कर बता दो। यह सब जिम्मेदारो के लिए शर्मनाक बात है कि कम से कम स्कूल के बालक बालिकाओ पर भी दया तक नहीं आ रही,जबकि लगभग डेढ़ साल से परेशानियों का सामना कर रहे हैं।

कीचड़ से ग्रामीण परेशान " नेता अफसर मस्त
शिवगंज के समीपवर्ती गांव वेराराम पुरा गांव के हाल बेहाल हो गए हैं। गलियों में न सी,सी रोड न पानी निकासी जिससे बरसात का पानी गलियों में जलभराव की स्थिति बन जाती है। बरसात में गालियां जलमग्न हो गई जिससे लोगों का घर से बाहर निकालना प्रभावित हुआ,बच्चों का स्कूल जाना नामुमकिन हो गया। प्रशासन की थोथी कार्यशैली को देख ग्रामीण अपने स्तर पर घर के बार मिट्टी डालकर निकलने के लिए जैसा तैसा इंतजाम किया। जैसे बारीश शुरू होती है तो ग्रामीण मिट्टी डालकर रास्ता बनाते हैं। कहा गए सरकार और जनप्रतिनिधियों के वादे। किस मुसीबत में लोग निवास कर रहे हैं,और परेशानियों का सामना कर रहे।

रेल नगरी फुलेरा में आधार केंद्र का अभाव, आमजन व विद्यार्थी परेशान

जयपुर टाइम्स

फुलेरा(निसं.)। रेल नगरी के नाम से विख्यात फुलेरा कस्बा रेलवे जंक्शन के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर पहचान रखता है। इसके बावजूद कस्बे में आज तक आधार केंद्र स्थापित नहीं किया गया है। इस कारण आमजन से लेकर विद्यार्थियों तक सभी को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। लोगों का कहना है कि रेलवे से जुड़े इतने बड़े कस्बे में आधार जैसी बुनियादी सुविधा का अभाव होना दुर्भाग्यपूर्ण है। आधार केंद्र न होने से उन्हें दूर-दराज़ कस्बों या शहरों में जाना पड़ता है, जिससे समय और धन दोनों की बर्बादी होती है। विद्यार्थियों को प्रवेश, छात्रवृत्ति और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए आवेदन करने में बार-बार दिक्कत आती है। स्थानीय नागरिकों ने नाराज़गी जताते हुए कहा कि रेल नगरी जैसे महत्वपूर्ण कस्बे में आधार केंद्र का न होना जिम्मेदार जनप्रतिनिधियों की लापरवाही को दर्शाता है। उन्होंने प्रशासन से शीघ्र स्थायी आधार केंद्र खोलने की मांग की है। लोगों का यह भी कहना है कि चुनाव के समय जनप्रतिनिधि बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध करवाने की बात करते हैं, लेकिन जमीन स्तर की हकीकत देखें तो यह नेता चुनाव जीतने के बाद अपने सभी वादे भूल जाते हैं।

नगर निगम ग्रेटर सतर्कता शाखा की बड़ी कार्रवाई

5 हजार रुपये का किया कैरिंग चार्ज वसूल, 8 केन्टर सामान जब्त

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। नगर निगम ग्रेटर आयुक्त डॉ. गौरव सैनी के निर्देशानुसार उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार शर्मा के नेतृत्व में मंगलवार को सतर्कता शाखा की टीम द्वारा नगर निगम जयपुर ग्रेटर के क्षेत्राधिकार में गांधी पथ पश्चिम, नेशनल हैण्डलूम तक, 200 फीट बाईपास रोड़, एवं हल्दीघाटी मार्ग से इण्डियागेट तक अस्थाई अतिक्रमण करने वालों के विरुद्ध 5 हजार रुपये का कैरिंग चार्ज वसूल कर 8 केन्टर सामान जब्त किया गया। उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार ने बताया कि नगर निगम जयपुर ग्रेटर के क्षेत्राधिकार में गांधी पथ पश्चिम, नेशनल हैण्डलूम तक, 200 फीट बाईपास रोड़, एवं हल्दीघाटी मार्ग से इण्डियागेट तक अस्थाई अतिक्रमण हटवाया गया। उपरोक्त कार्रवाई के दौरान 8 केन्टर सामान जब्त कर गोदाम में भिजवाया गया व अस्थाई अतिक्रमण करने वालों से मौके पर 5 हजार रुपये का कैरिंग चार्ज वसूल किया गया तथा दौरे के दौरान कार्यवाही सतर्कता टीम द्वारा मौके पर समझाइश करते हुए मौखिक पाबंद करवाया कि भविष्य में अस्थाई अतिक्रमण समय से हटा ले अन्यथा नगर निगम जयपुर ग्रेटर के क्षेत्राधिकार में अवैध अतिक्रमण करने वालों के विरुद्ध भारी चालान या प्रभावी कार्रवाई अमल में लाई जायेगी।

"शहर चलो अभियान - 2025" के तहत वार्डवार प्री-कैम्प किये जा रहे आयोजित

जयपुर (कासं.)। नगर निगम ग्रेटर द्वारा "शहर चलो अभियान - 2025" के तहत वार्डवार प्री-कैम्प लगाये जा रहे है। 14 सितंबर 2025 तक प्री-कैम्प आयोजित किए जायेगें। वार्डवार प्री-कैम्प में आमजन की समस्याओं का त्वरित समाधान किया जा रहा है। आयुक्त डॉ. गौरव सैनी ने बताया कि ये अभियान दो चरणों में आयोजित होंगे। प्रथम चरण के तहत 14 सितंबर 2025 तक प्री-कैम्प आयोजित किए जायेंगे तथा द्वितीय चरण के अंतर्गत 15 सितंबर 2025 से 02 अक्टूबर 2025 तक शिविर आयोजित किए जायेंगे। प्री कैम्प का समय सुबह 9.30 बजे से 6.00 बजे तक रहेगा।

सुमेरपुर शिवगंज नागरिकों की समस्या निवारण को लेकर सांखला ने मुख्यमंत्री से की मांग

तेज बारिश से जवाई बांध के फाटक खोलने पर दोनों कस्बों के बीच 3 दिन से यातायात पूरी तरह ठप

विपक्ष के नेता पहुंचकर रोना रो रहे हैं "अपनी सरकार के दो मंत्री होते हुए भी नहीं लिया पुल का जायजा

जयपुर टाइम्स

सुमेरपुर(निसं.)। सुमेरपुर व शिवगंज के नागरिकों की समस्या निवारण को लेकर समाज सेवी धीरज सांखला ने मुख्य मंत्री और स्थानीय विधायक को सोशल मीडिया के माध्यम से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि 6 सितंबर शनिवार को सुबह से शुरू हुई तेज बारिश से पश्चिम राजस्थान के सबसे बड़े जवाई बांध में पानी की आवक ज्यादा होने से एक साथ आठ से नौ फाटक क़रीब 6-6 फ़ीट तक खोले गए। पानी के तेज प्रवाह से सुमेरपुर-शिवगंज के मध्य बना पुल काफी जर्जर व क्षतिग्रस्त हो गया है । जिससे दौनो शहरों का आपस में संपर्क बाधित हो गया है । इसके चलते आवागमन में आम जनता को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा हैं । उन्होंने सीएम और कैबिनेट मंत्री को पत्र भेज कर बताया कि आज तिसरा दिन हो चुका हैं । जहां अपनी सरकार के दौनो क्षेत्र के मंत्री जोराराम व ओटाराम देवासी अभी तक मौके पर नहीं पहुंचे और न ही प्रशासन की ओर से आवागमन सुचारू करने संबंधित कोई निर्णय नहीं लिया जा रहा हैं । वहीं विपक्ष के नेतागण जवाई नदी पुलिया पर पहुंच कर अपनी सरकार की नाकामियों का रोना रो कर जा रहे हैं । समाजसेवी धीरज सांखला ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से विनम्र आग्रह करते हुए कहा कि इस विषय पर शीघ्र संज्ञान लेकर पाली व सिरोही कलेक्टर को आवश्यक निर्देश प्रदान करावे, जिससे जनता को उचित राहत प्रदान मिल सके। दोनों शहर एक दुसरे के पुरक हैं, और आपस में एक दूसरे से व्यापार व व्यवहार से जुड़े हुए हैं । रोज़ाना लगभग तीस से चालीस हज़ार वाहनों का आवागमन होता है ।
धीरज साँखला प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य भाजपा ओबीसी मोर्चा ने अति शीघ्र यातायात व्यवस्था को सुचारू करने की मांग की है ।

आरएफबीडीपी के तहत कृषिवानिकी व आजीविका संवर्द्धन पर किसानों को प्रशिक्षण

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता विकास परियोजना (आरएफबीडीपी) के अंतर्गत पिपलेश्वर ग्रीन फेड फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी, तुंगा, बस्सी, जयपुर में मंगलवार को कृषिवानिकी और आजीविका संवर्द्धन पर क्षमता निर्माण सह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें परियोजना क्षेत्र से जुड़े लगभग 90 किसानों ने भागीदारी की। इस अवसर पर डीएफओ, जयपुर डिवीजनल मैनेजमेंट यूनिट (डीएमयू) केतन कुमार ने बताया कि आरएफबीडीपी का उद्देश्य वनों के संरक्षण के साथ कृषिवानिकी के जरिए किसानों की आय बढ़ाना और उन्हें जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए सक्षम बनाना है। उन्होंने कहा कि बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण और वनीकरण से पर्यावरणीय संतुलन मजबूत होगा। प्रशिक्षण में आजीविका विशेषज्ञ हेमन्त कुमार दीक्षित ने किसानों को बताया कि कृषिवानिकी अपनाकर वे अतिरिक्त आय का स्रोत विकसित कर सकते हैं। कृषि अधिकारी ओम प्रकाश गुप्ता ने पौधारोपण की तकनीक, रखरखाव और पौधों की वृद्धि पर जानकारी दी। वहीं रेंजर नमो नारायण मीणा ने परियोजना की गतिविधियों और कृषिवानिकी के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में एफपीओ के सीईओ कमलेश सैनी और अध्यक्ष कैलाश चंद शर्मा ने एफपीओ की भूमिका पर चर्चा की और बताया कि सामूहिक कार्यवाही, विपणन, प्रसंस्करण और जैविक खेती को अपनाकर किसान अधिक लाभ कमा सकते हैं। इस प्रशिक्षण से किसानों को आधुनिक तकनीक और संगठित प्रयासों के जरिए आजीविका संवर्द्धन के नए अवसर प्राप्त होंगे।

जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की बैठक आयोजित

बीकानेर मानसून के दौरान बरसात के कारण जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में क्षतिग्रस्त सड़कों, विद्यालयों, आंगनबाड़ी और स्वास्थ्य केंद्रों, पंचायत घरों और सामुदायिक भवनों के तात्कालिक मरम्मत के प्रस्तावों सहित विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा के लिए मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए अतिरिक्त जिला कलेक्टर रामावतार कुमावत ने ब्लॉक वार स्थिति कि समीक्षा की और इस दौरान प्राप्त प्रस्तावों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि मानसून के दौरान अब तक हुई बरसात के कारण जिले के सार्वजनिक एवं सरकारी भवनों अथवा सड़कों को क्षति हुई है

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग नगर खण्ड - द्वितीय, जयपुर

क्रमांक- 2467 दिनांक- 29-8-25

ई- निविदा सूचना संख्या- 33/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्नलिखित कार्यो

क.सं	कार्य का नाम	संवेदक की श्रेणी	डिफेक्ट लाईब्लिटी अवधि	UBN No.
1.	Repair Renovation and other works at Drug Testing Laboratory Sethi Colony under Sub Dn. Mahila Chikitsalaya, Jaipur (Sanitary work)	"S-2" (SANITARY)	अनुबन्धानुसार	PWD2526WSOB 11326
1.	Repair Renovation and other works at Drug Testing Laboratory Sethi Colony under Sub Dn. Mahila Chikitsalaya, Jaipur (Civil work)	"D" (CIVIL)	अनुबन्धानुसार	PWD2526WSOB 11327
1.	Emergent and Repair work in Kanwatiya Hospital under Jurisdiction of Sub Dn. Zanana Hospital, Jaipur (Sanitary work)	"S-3" (SANITARY)	अनुबन्धानुसार	PWD2526WSOB 11329

हेतु सम्मुख अंकित दोष निवारण एवं उनके सुधार (डिफेक्ट लाइबिलिटी पीरीयड) सहित सा.नि.वि. में उपयुक्त श्रेणी (नियमानुसार) में पंजीकृत संवेदक एवं संवेदक जो कि केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, डाक एवम् दूर संचार, रेल्वे या अन्य राज्य सरकार / केन्द्रीय सरकार के अधिकृत संगठनों जो कि राजस्थान सरकार के "एए" अथवा "ए" श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित परिपत्र में ई-टेन्डरिंग प्रश्रि या द्वारा निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा से सम्बन्धित विस्तृत विवरण वेबसाइट www.dipronline.org, www.eproc.rajasthan.gov.in, http://www.pwd.rajasthan.gov.in एवं http://sppp.rajasthan gov.in पर देखा जा सकता है।

अधिशाषी अभियन्ता,
सा0नि0वि0 नगर खण्ड-2,
जयपुर

DIPR/C/12980/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग, विद्युत मेडिकल कॉलेज खण्ड जयपुर

क्रमांक दिनांक

निविदा सूचना सं. 28 / 2025-26

मुख्यालय कानाम	**कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, विद्युत खण्ड मेडिकल कॉलेज जयपुर।**
निविदा का कार्य	निविदा सूचना सं. 28 / 2025-26 में कुल 4 कार्य
निविदा की कुल लागत (लाख रु. में)	13.11 लाख
कुल धरोहर राशि (रूपयों में)	6555 (0.50') 26220 (2')
प्रीबिड मीटिंग की तारीख एवं स्थान	04.09.2025 सुबह 11.00 बजे, कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता सा.नि.वि. विद्युत खण्ड मेडीकल कॉलेज जयपुर ।
फार्म मिलने की तारीख	दिनांक 10.09.2025 2.00 PM
फार्म जमा कराने की तारीख	दिनांक 11.09.2025 3.00 PM
निविदा खोलने की तारीख	दिनांक 11.09.2025 3.30 PM

निविदा से सम्बन्धित अन्य आवश्यक विवरण विभाग की वेबसाइट pwd.rajasthan.gov.in.,dipronline.com.http://sppp.raj.nic.in पर देखे जा सकते हैं ।
UBN- PWD2526A3043, PWD2526WSOB11426,
PWD2526WSOB11427 PWD2526WSOB11428
PWD2526WSOB11429

अधिशाषी अभियन्ता
सा. नि. वि., विद्युत मेडिकल कॉलेज
खण्ड - जयपुर

DIPR/C/13035/2025

रक्तदान शिविर पोस्टर का विमोचन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा के सरकारी निवास पर आगामी 11 सितम्बर को आयोजित होने वाले रक्तदान शिविर के पोस्टर का विधिवत विमोचन किया गया। सुभाष जून ने जानकारी दी कि हर वर्ष की तरह इस बार भी रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य समाज में रक्तदान के महत्व के प्रति जागरूकता फैलाना और जरूरतमंद मरीजों को समय पर रक्त उपलब्ध कराना है। उन्होंने कहा कि रक्तदान महादान है और इसे नियमित रूप से आयोजित कर समाज में सहयोग की भावना को मजबूत किया जाता है। आगामी शिविर में बड़ी संख्या में युवा, सामाजिक कार्यकर्ता तथा स्थानीय नागरिक भाग लेंगे। यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने इस अवसर पर कहा कि रक्तदान जैसे आयोजन मानवता के उत्थान के लिए बेहद जरूरी हैं। उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग से आह्वान किया कि वे बढ़-चढ़कर इस शिविर में भाग लें और जरूरतमंदों की मदद करें। रक्तदान शिविर 11 सितम्बर को आयोजित किया जाएगा, जिसमें स्थानीय प्रशासन, सामाजिक संगठनों और चिकित्सा विभाग का विशेष सहयोग रहेगा। आयोजकों का मानना है कि इस प्रकार के शिविर समाज में जनसहभागिता और सेवा भावना को नई दिशा प्रदान करते हैं।

किसान संगठनों ने NFSA से नाम हटाने पर जताई आपत्ति

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। किसान संगठनों ने किसान उत्पाद कंपनियों (एफपीओ) के डिन नंबरधारी (डायरेक्टर आइडेंटिफिकेशन नंबर) निदेशकों को नेशनल फूड सिक्योरिटी एक्ट की सूची से बाहर करने पर कड़ा विरोध जताया है। संगठनों का कहना है कि केवल डिन नंबर को आधार मानकर राशन कार्ड निरस्त करना छोटे और सीमान्त किसानों की आजीविका पर प्रतिकूल असर डालेगा। संयुक्त किसान संगठनों ने बताया कि केन्द्र सरकार ने केवल आयकरदाता परिवार और चार पहिया वाहन स्वामित्व रखने वाले परिवार को ही NFSA से अपात्र घोषित किया है। लेकिन अब एफपीओ के निदेशकों को इस सूची से हटाना अनुचित है। संगठनों ने विशेष रूप से कहा कि एफपीओ में ज्यादातर निदेशक महिलाएं हैं, जो पहले ही सामाजिक चुनौतियों का सामना करती हैं। यदि उनका राशन कार्ड निरस्त होता है तो उनकी भागीदारी और भी कम हो जाएगी, जो महिला नेतृत्व वाले एफपीओ को बढ़ावा देने की नीति के विपरीत है। किसान संगठनों ने चेतावनी दी कि यदि यह प्रक्रिया जारी रही तो कई निदेशक इस्तीफा देने को विवश होंगे और नए लोग इस जिम्मेदारी को लेने से हिचकेंगे। इससे एफपीओ का विकास प्रभावित होगा और किसानों के संगठनात्मक प्रयास कमजोर होंगे। उन्होंने स्पष्ट किया कि एफपीओ निदेशक किसानों के निर्वाचित प्रतिनिधि होते हैं और अधिकांशतः यह भूमिका अवैतनिक होती है। इसलिए इसे आर्थिक सम्पन्नता से जोड़ना गलत है।

एसएमएस हॉस्पिटल में डॉक्टर्स का धरना जारी, नियुक्ति और बायोमेट्रिक हाजिरी को लेकर विरोध तेज

जयपुर(कासं.)। राजधानी जयपुर के सवाई मानसिंह (एसएमएस) हॉस्पिटल में मेडिकल कॉलेज फेकल्टी डॉक्टर्स का धरना सोमवार को लगातार दूसरे दिन भी जारी रहा। राजस्थान मेडिकल कॉलेज टीचर्स एसोसिएशन (आरएमसीटीए) से जुड़े डॉक्टर्स ने ग्रुप-2 श्रेणी के डॉक्टर्स को सीधे फेकल्टी मेंबर नियुक्त करने और बायोमेट्रिक हाजिरी को सैलरी से जोड़ने के सरकारी निर्णय का विरोध जताया। एसोसिएशन के पदाधिकारियों का कहना है कि नेशनल मेडिकल कमिशन ने अपने नोटिफिकेशन में केवल ग्रुप-2 डॉक्टर्स की योग्यता निर्धारित की है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि उनकी डायरेक्ट नियुक्ति फेकल्टी पदों पर कर दी जाए। एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. प्रवीण जोशी ने कहा कि यदि सरकार को इस तरह से सीधी भर्ती करनी है, तो फिर आरपीएससी के माध्यम से होने वाली नियमित चयन प्रक्रिया की आवश्यकता ही क्यों है? ऐसे में सरकार को आरपीएससी के नियमों में संशोधन करना चाहिए। धरने पर बैठे डॉक्टर्स ने बायोमेट्रिक हाजिरी व्यवस्था को लेकर भी नाराजगी जताई। उनका कहना है कि NMC ने यह सिस्टम केवल डुप्लीकेसी रोकने के लिए लागू किया था, क्योंकि कुछ फेकल्टी मेंबर्स एक साथ अलग-अलग कॉलेजों में सेवा दे रहे थे। लेकिन राज्य सरकार ने इस व्यवस्था को वेतन से जोड़ दिया। यदि कोई डॉक्टर 8 घंटे की उपस्थिति दर्ज नहीं करता है, तो सीधे उसकी सैलरी में कटौती कर दी जाएगी। इसे चिकित्सकों ने अनुचित बताया। डॉ. जोशी ने सवाल उठाया कि यदि सरकार को बायोमेट्रिक के आधार पर वेतन काटना ही है तो यह नियम केवल मेडिकल कॉलेज शिक्षकों पर क्यों लागू किया जा रहा है? सचिवालय, पीएचईडी, पीडब्ल्यूडी और शिक्षा विभाग जैसे अन्य विभागों के अधिकारियों-कर्मचारियों पर भी इस नियम को लागू किया जाना चाहिए। धरने पर बैठे डॉक्टर्स ने स्पष्ट किया कि जब तक उनकी मांगों पर विचार नहीं किया जाएगा, आंदोलन जारी रहेगा। उनका कहना है कि यह कदम न केवल मेडिकल कॉलेज शिक्षकों के हितों के खिलाफ है, बल्कि इससे चिकित्सा शिक्षा की गुणवत्ता पर भी नकारात्मक असर पड़ेगा।

सहकार से समृद्धि की भावना से अंत्योदय को साकार करें- जिला कलेक्टर सुराणा

जिला कलेक्टर अभिषेक सुराणा की अध्यक्षता में दी चूरू सेंट्रल को-ऑपरेटिव बैंक की वार्षिक बैठक आयोजित, उत्कृष्ट कार्य करने वालों को किया सम्मानित

जयपुर टाइम्स

चूरू(निसं.) दी चूरू सेंट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड की जिला कलेक्टर अभिषेक सुराणा की अध्यक्षता में मंगलवार को जिला मुख्यालय स्थित टाउन हॉल में बैंक की वार्षिक साधारण सभा की बैठक आयोजित की गई। बैठक को संबोधित करते हुए जिला कलेक्टर अभिषेक सुराणा ने कहा कि हम अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष मना रहे हैं। हम सभी मिलकर सहकार से समृद्धि की भावना से अंत्योदय को साकार करें। उन्होंने कहा कि सहकारी बैंकिंग ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। चूरू सेंट्रल को-ऑपरेटिव बैंक ने बीते वर्ष उल्लेखनीय प्रगति की है। सभी शाखाओं में ग्राहक सेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए। उन्होंने कहा कि सहकारी बैंकिंग प्रणाली को और अधिक सशक्त बनाने के लिए पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और तकनीकी नवाचार आवश्यक है। इसलिए सभी पैक्स को कम्प्यूटरीकृत करने का काम करें। वित्तीय क्षमता बढ़ाते हुए मुनाफे के लिए सतत् प्रयास करें। हमारा प्रयास रहे कि एनपीए कम हो और गैर कृषि ऋण वितरण शुरू करें। स्वयं सहायता समूहों को स्वरोजगार हेतु ऋण व ग्राहकों को पर्सनल लोन दिया जाए, ताकि व्यावसायिक गतिविधियां बढ़ें। उन्होंने कहा कि वर्तमान में जिले में नवसृजित/रिक्त उचित मूल्य दुकानों के आवंटन हेतु आवेदन मांगे जा रहे हैं, उनमें ग्राम सेवा सहकारी समितियों को प्राथमिकता दी गई है। किसान अपनी कृषि गतिविधियों में स्थानीय व स्वदेशी उर्वरकों व खाद आदि के उपयोग को बढ़ावा दें। क्षेत्र में अतिवृष्टि से फसलों को हुये नुकसान का सर्वे करवाकर फसल खराबे की सूचना ली जा रही है। सुराणा ने कहा कि बैंक ने वर्ष 2024-25 में 57.55 लाख रुपए का कार्यकारी लाभ अर्जित किया। वित वर्ष 2024-25 में बैंक द्वारा विभिन्न ऋण योजनाओं के तहत जिले के 91793 किसानों व नागरिकों को 566.21 करोड़ रुपयों का ऋण उपलब्ध करवाया गया है। बैंक के एनपीए ऋणों का स्तर 3.50 प्रतिशत है। गत वर्ष की तुलना में इसमें 1.11 प्रतिशत की कमी हुई। 13 ग्राम सेवा सहकारी समितियों में गोदाम निर्माण की स्वीकृत प्राप्त हुई है व 29 भवन विहीन समितियों के भूमि आवंटन प्रस्ताव प्रक्रियाधीन है। सभी ग्राम सेवा सहकारी समितियों को भी कम्प्यूटरीकृत किया जा रहा है। इस मौके पर लालचंद मुंड ने कहा कि जो सहकारी समितियां डेयरी के लिए इच्छुक हैं, वे समिति को आवश्यक प्रस्ताव भिजवाएं। गणपत ख्यालिया ने कहा कि समितियों के समक्ष आने वाली समस्याओं को जनप्रतिनिधियों के सहयोग से सरकार तक भिजवाएं। प्रबंध निदेशक मदनलाल ने गत आम सभा कार्यवाही की जानकारी देते हुए 65वीं आम सभा के निर्धारित एजेंडों के अनुसार बैंक को वर्ष 2024-25 के अंकेक्षित लेखों, ऑडिट रिपोर्ट की अनुपालना, बजट की स्वीकृति, स्वीकृत से अधिक हुए व्यय की पुष्टि तथा वर्ष 2025-26 के स्वीकृत बजट का अनुमोदन, विकास कार्य योजना की प्रगति व अधिकतम साख-सीमा के निर्धारण की स्वीकृति संबंधी प्रस्तावों की जानकारी दी। समिति अध्यक्षों द्वारा बैंक एवं समितियों के विकास हेतु सदस्यों को अधिक ऋण देने, समय पर खाद-बीज उपलब्ध कराने, राशन वितरण का कार्य सहकारी संस्थाओं को दिलवाने, गोदामों का निर्माण करवाने व समितियों की आधिक्य हिस्सा राशि लौटाये जाने संबंधी सुझाव दिये। प्रबंध निदेशक मदनलाल शर्मा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर जिले की सहकारी समितियां उप-रजिस्ट्रार डॉ. सुनील माण्डिया, विशेष लेखा परीक्षक निशा, बैंक अतिरिक्त अधिशाषी अधिकारी अल्का द्विवेदी, क्रय विक्रय सहकारी समितियों के अध्यक्ष गणपत ख्यालिया, नरपत गोदारा, लालचन्द छिरंग, भगवान दास स्वामी, अर्जुन कुल्हरी, हॉलसेल भण्डार अध्यक्ष मोहनलाल गढ़वाल, सरदारशहर दुग्ध उत्पादक संघ अध्यक्ष लालचन्द मूंड, मुख्य प्रबन्धक सर्वेश वर्मा, वरिष्ठ प्रबन्धक हजारीराम एवं सुरेन्द्र सिंह भाटी सहित जिलेभर की ग्राम सेवा सहकारी समितियों, क्रय विक्रय सहकारी समितियों, उपभोक्ता हॉलसेल भण्डार, दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों व अन्य समितियों के अध्यक्षों सहित कुल 224 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

उत्कृष्ट कार्य करने वालों को किया सम्मानित

इस अवसर पर जिला कलक्टर सुराणा ने उत्कृष्ट कार्य करने पर चूरू शाखा प्रबन्धक संजय पूनियां, सरदारशहर शाखा प्रबन्धक श्यामसुन्दर शर्मा, ग्राम सेवा सहकारी समितियों के व्यवस्थापक पवन पूनियां, जितेन्द्र शर्मा, ओमप्रकाश पूनियां, रामदेव जाखड़, अशोक पाण्डिया, रामनिवास सहारण, श्रवण सिंह, घनश्याम कुल्हरी, विरेन्द्र मूंड, गिरधारी झुरिया, रमेश जांगिड़, कुंदन दास व चन्द्रभान शर्मा को सम्मानित किया।

जगदीप धनखड़ काफी दबंग उनके इस्तीफा की एक दिन खुलेगी पोलः सचिन पायलट

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान के पूर्व उपमुख्यमंत्री और राजस्थान कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष सचिन पायलट ने दिल्ली में पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहा कि जगदीप धनखड़ एक दबंग इंसान थे और किसी से डरते नहीं थे लेकिन उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा देने के बाद उनकी जुबान बंद हो गई यह वास्तव में अचरज की बात है कोई ना कोई वजह है जिसकी वजह से उन्होंने इस्तीफा दिया इसकी पोल एक न एक दिन जरूर खुलेगी पायलट ने कहा कि वोट चोरी का मामला एक स्टेट का मामला नहीं है बल्कि यह विषय पूरे देश से जुड़ा हुआ है राहुल गांधी ने यह महत्वपूर्ण विषय उठाया है बिहार की जनता ने ही नहीं बल्कि पूरे देश के लोग राहुल गांधी के साथ खड़े हुए हैं क्योंकि राहुल गांधी ने बहुत ही सच्चाई और शुद्ध आत्मा से इस मुद्दे को जनता के बीच लेकर गए हैं उन्होंने कहा कि राहुल गांधी ने चुनाव आयोग को बाकायदा ठोस सबूत के साथ यह बताने का प्रयास किया कि इस तरह से बड़े स्तर पर मतदाता सूचियां में बड़ी कमियां और गड़बड़ियां हैं इन्हें सुधारा जाना चाहिए लेकिन चुनाव आयोग ने राहुल गांधी की शिकायतों पर गौर नहीं किया बल्कि राहुल गांधी से ही इस शिकायत के संदर्भ में शपथ पत्र मांग लिया जो यह दिखाता है कि कहीं ना कहीं चुनाव आयोग पॉलीटिकल प्रेशर में है जो भारत के संविधान और लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं है एक अन्य सवाल के जवाब में सचिन पायलट ने कहा कि राजस्थान में धरातल पर कुछ भी काम नहीं हो रहा सिर्फ बयान बाजी हो रही है उन्होंने कहा कि राजस्थान में भाजपा की सरकार युवाओं की आवाज को दबाना चाहती है राजस्थान में छात्र संघ चुनाव नहीं करवाए जा रहे राजस्थान में पंचायत राज और नगर निकाय के चुनाव नहीं करवाए जा रहे क्योंकि भारतीय जनता पार्टी को यह एहसास हो गया है कि अगर चुनाव करवाए जाते हैं तो उन्हें पराजय का सामना करना पड़ेगा इसलिए भाजपा की सरकार जानबूझकर राजस्थान में चुनाव नहीं करवा रही उन्होंने कहा कि राजस्थान में हालात ऐसे हो गए हैं कि समझ में ही नहीं आ रहा की शासन कौन चला रहा है राजस्थान में शासन नाम की कोई चीज दिख ही नहीं रही राजस्थान विधानसभा में प्रतिपक्ष को बोलने नहीं दिया जा रहा विधानसभा में भी सरकार की तानाशाही चल रही है जो ठीक नहीं है ।

फर्जी कागज से जमीन बेचने वाला आरोपी गिरफ्तार, 5 हजार का इनाम था

अजमेर (निसं.)। फर्जी कागजात से जमीन बेचकर धोखाधड़ी करने के मामले में चार साल से फरार चल रहे पांच हजार के इनामी आरोपी को पीसांगन थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया है। इस मामले में तीन आरोपी पहले ही गिरफ्तार हो चुके हैं। एक आरोपी की पुलिस को अब भी तलाश है। किशनगढ़ के तेली मोहल्ला मंदनगंज निवासी हेमलता पत्नी जयकिशन शर्मा ने अपनी जमीन आरोपी रामफुल शर्मा व अन्य द्वारा फर्जी इकरारनामा तैयार कर बेचाने के संबंधी मामला 25 अक्टूबर 2021 को दर्ज कराया। पुलिस ने जांच के बाद रामफुल शर्मा पुत्र रामकिशन शर्मा, अमित शर्मा पुत्र रमेशचंद शर्मा को पहले ही गिरफ्तार कर लिया। इस मामले में मुख्य आरोपी सम्पत सिंह पुत्र जीवण सिंह निवासी मेड़ता सिटी लम्बे समय से फरार चल रहा था। उस पर पांच हजार का इनाम घोषित किया हुआ है। मुखबिर की सूचना पर जिला स्पेशल टीम द्वारा मेड़ता सिटी, नागौर से डिटेन किया जाकर पीसांगन थाने के सुपुर्द किया। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। अन्य वांछित ईनामी आरोपी कमल सिंह की तलाश जारी है।

दो बाइकों में भीषण भिड़ंत, सरकारी टीचर की मौत

एक घंटे तक सड़क पर तड़पता रहे, रोडवेज बस कंडक्टर-ड्राइवर ने पहुंचाया हॉस्पिटल

जयपुर टाइम्स

पलसाना, सीकर (निसं.)। पलसाना में सोमवार देर रात एक्सीडेंट में एक सरकारी टीचर की मौत हो गई। टीचर सड़क पर एक घंटे तक तड़पते रहे। वहां से गुजर रही रोडवेज बस के कंडक्टर-ड्राइवर ने उन्हें हॉस्पिटल पहुंचाया। जानकारी के अनुसार सोमवार देर रात खंडेला रोड पर दो बाइकों की भीषण भिड़ंत हो गई। जिसमें एक सरकारी टीचर की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद घायल अवस्था में सड़क पर तड़पते रहे टीचर को रोडवेज बस के स्टाफ ने पलसाना के ट्रॉमा सेंटर पहुंचाया। लेकिन डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

दो बाइकों की भिड़ंत में गई जान

टीचर शंकर लाल (45) निवासी अमरपुरा अलोदा (सीकर) गढ़वालों की ढाणी के पास बाइक से जा रहे थे। इस दौरान सामने से आ रही तेज रफ्तार बाइक ने शंकर लाल की बाइक को टक्कर मार दी। जिसमें वह गंभीर रूप से घायल हो गए और सड़क पर गिर गए। काफी समय तक शंकर लाल सड़क पर ही पड़ा रहे। हादसे के बाद वहां से गुजर रही कोटपूतली डिपो की रोडवेज बस के ड्राइवर को सड़क पर एक व्यक्ति पड़ा दिखा, जिसके बाद उसने बस को रोका और कंडक्टर व यात्रियों की हेल्प से टीचर शंकर लाल को पलसाना हॉस्पिटल पहुंचाया। जहां डॉक्टर ने टीचर को मृत घोषित कर दिया।

दूसरी बाइक के टूटे पार्ट्स मिले

वहीं पुलिस को घटना की सूचना दी गई। जिसके बाद पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को मॉर्च्युरी में रखवाया। पुलिस के अनुसार मौके पर सिर्फ एक ही बाइक बरामद हुई है, जबकि दूसरी बाइक के टूटे-फूटे पार्ट्स बिखरे पड़े थे। फिलहाल खाटूश्यामजी सदर थाना बाइक समेत उस पर सवार की तलाश में जुट गई है।

रेटा स्कूल में तैनात थे

वहीं मृतक टीचर के परिजनों ने बताया- शंकर लाल सरकारी टीचर थे और रेटा स्कूल में पढ़ाते थे। मंगलवार सुबह 11 बजे पुलिस ने परिजनों की मौजूदगी में शव का पोस्टमॉर्टम कराया, उसके बाद परिजनों को सौंप दिया।

पंचायत नगर निकाय चुनाव को लेकर कांग्रेस विधायकों का पैदल मार्च

चोरी डकैती के मामले को लेकर सदन में प्रतिपक्ष का हंगामा, विक्रम जाखल ने नवलगढ़ में अतिरिक्त जिला मुख्य न्यायाधीश दफ्तर खोलने की मांग की

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। कांग्रेस पार्टी के विधायकों ने मंगलवार को सुबह प्रदेश में पंचायत राज और नगर निकाय के चुनाव की मांग को लेकर पैदल मार्च निकाला प्रतिपक्ष के नेता टीकाराम जूली की अगवाई में कांग्रेस पार्टी के विधायक विधायक आवास से विधानसभा तक पैदल चलकर आए इन विधायकों के हाथों में बैनर था जिस पर पंचायत और नगर निकाय चुनाव कराने संबंधी स्लोगन लिखे हुए थे कांग्रेस के विधायक नारेबाजी करते हुए विधानसभा भवन के दरवाजे तक पहुंचे जहां पर अन्य दिनों की तरह कांग्रेस के विधायकों ने मंगलवार को भी बैनर और तख्ती के साथ विधानसभा में घुसने का प्रयास किया जिस पर सुरक्षा कर्मियों ने उन्हें रोकने का प्रयास किया लेकिन कांग्रेस के विधायक जबरन विधानसभा परिसर में घुस गए कांग्रेस के विधायकों ने विधानसभा परिसर में सरकार के खिलाफ नारेबाजी की और जल्दी से जल्दी पंचायत राज और नगर निकाय चुनाव करवाने की मांग की बाद में सदन की करवाई जब 11.00 प्रश्न कॉल से आरंभ हुई तब खानपुर विधानसभा क्षेत्र में बढ़ती चोरी और डकैती का मामला सवाल के माध्यम से उठा प्रतिपक्ष के नेता टीकाराम जूली जब इस मामले में बोलने लगे तो विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने उन्हें टोका और कहा कि यह आपके विधानसभा क्षेत्र का मामला नहीं है जिस पर जूली ने कहा कि यह गंभीर मामला है मैं बोलूंगा इतना कहने के बाद कांग्रेस पार्टी के विधायक हो हल्ला मचाने और नारेबाजी करते हुए सदन की बेल में आ गए स्पीकर वासुदेव नानी ने उन्हें शांत रहने को कहा लेकिन प्रतिपक्ष के विधायक जोर जोर से सदन की गैलरी में नारेबाजी करने लगे इसके बाद विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देव नानी ने सदन की कार्रवाई को स्थगित कर दिया बाद में सदन की कार्रवाई शुरू होने पर नवलगढ़ के विधायक विक्रम जाखल ने कहा कि नवलगढ़ से झुंझुनू करीब 100 किलोमीटर दूर है इसलिए लोगों को न्याय मांगने के लिए काफी लंबा सफर करना पड़ता है इसलिए नवलगढ़ में अतिरिक्त जिला मुख्य न्यायाधीश का दफ्तर खुलना चाहिए जिस पर कानून मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि 1 जनवरी 2023 से प्रदेश में आठ जिला न्यायालय और 9 अतिरिक्त जिला मुख्य न्यायाधीश के दफ्तर खोले गए हैं जिस पर स्पीकर वासुदेव देवनानी ने कहा कि आप सवाल का जवाब दीजिए इसके बाद जोगाराम पटेल ने कहा कि अतिरिक्त जिला मुख्य न्यायाधीश के दफ्तर खोलने के लिए हाई कोर्ट की सिफारिश, वित्तीय संसाधन और कम से कम 1200 मामले जरूरी होते हैं और मुख्यमंत्री यह कार्यालय खोलने की घोषणा करते हैं जानकार लोगों का कहना है कि इस बार विपक्ष के नेता टीकाराम जूली ने प्रतिपक्ष की भूमिका के लिए एक अलग से ही तरीका अपनाया है इस बार यह पहली बार देखने को मिला है जब प्रतिपक्ष नेता रोजाना नए-नए मुद्दों के साथ पैदल मार्च करते हुए राजस्थान विधानसभा तक पहुंच रहे हैं इस बार विधानसभा सत्र के शुरू होने के पहले दिन से ही नए-नए मुद्दों और डिमांड के साथ प्रतिपक्ष के विधायक विधायक आवास से राजस्थान विधानसभा तक पैदल मार्च करके पहुंचे हालांकि ऐसा पहले भी देखने को मिला है लेकिन चाहे प्रतिपक्ष की भूमिका में बीजेपी रही हो या फिर कांग्रेस विधानसभा सत्र के दौरान एक दो मौके पर ही पैदल मार्च करते हुए प्रतिपक्ष के सदस्य विधानसभा तक पहुंचे लेकिन इस बार रोजाना नए-नए मुद्दों के साथ प्रतिपक्ष के सदस्य विधायक आवास से राजस्थान विधानसभा तक पैदल मार्च करते हुए पहुंच रहे हैं जो टीकाराम जूली की कुशल रणनीति का हिस्सा कहीं जा सकती है ।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, बुधवार
10 सितम्बर, 2025

थाली चोरी मामले में दो महिलाएं गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। शास्त्री प्याउ के पास स्थित एक बर्तन भंडार की दुकान से कांसी की थालियां चोरी करने के मामले में कोतवाली पुलिस ने दो आरोपी महिलाओं को गिरफ्तार किया है। कोतवाली सीआई बैगाराम मीणा ने बताया कि मामले में आरोपी कमला पत्नी भवानी नट, अनिला पत्नी सन्नी नट निवासीगण नट बस्ती जोधपुर को गिरफ्तार किया गया है। दोनों के खिलाफ पहले भी पुलिस थानों में इस प्रकार के प्रकरण दर्ज हैं। इस कार्यवाही में एएसआई तेजाराम, हैड कांस्टेबल जगदीष, महावीर प्रसाद, गायत्री आदि की भी भूमिका रही।

एससी एसटी समाज ने पुलिस को सौंपा ज्ञापन, सोशल मीडिया पर अमर्यादित भाषा बोलने का विरोध

सख्त कार्रवाई की मांग, एससी एसटी समाज में आक्रोश

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निसं.)। शहर के पुलिस थाने में एससी-एसटी समाज के लोगों द्वारा सोशल मीडिया पर एक व्यक्ति द्वारा समाज के प्रति गलत बोलने का विरोध करते हुए कार्रवाई की मांग को लेकर पुलिस थाने में ज्ञापन देकर कार्रवाई की मांग की है। ज्ञापन में बताया गया कि डूंगरगढ़ के रिड़ी गांव से एक विवादित मामला सोशल मीडिया पर सामने आया है। जानकारी के अनुसार लिछूराम गोदारा द्वारा फेसबुक पर लाइव आकर एससी-एसटी समाज के प्रति असभ्य व अमर्यादित भाषा का प्रयोग किए जाने की बात सामने आई है। इस घटना के बाद क्षेत्र में गहरा आक्रोश व्याप्त है। एससी-एसटी समाज के लोगों का कहना है कि इस प्रकार की असभ्य भाषा समाज की एकता को तोड़ने वाली है। सर्व समाज के लोगों ने कड़ी आपत्ति जताते हुए इसे निंदनीय करार दिया है। समाज के प्रतिनिधियों ने जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन से मामले की जांच कर लीछूराम गोदारा के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। साथ ही एससी-एसटी समाज के लोगों ने चेतावनी दी है कि अगर जल्द कार्रवाई नहीं हुई तो आंदोलनात्मक कदम उठाए जाएंगे। पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए कहा कि तथ्य जुटाए जा रहे हैं और जांच पूरी होने पर कार्रवाई की जाएगी। इस मौके पर ओमकार बाली, निरंजन धानका, सतपाल मेघवाल, सुभाष धानका, जयपाल धानका, सुरेंद्र कुमार, मनोज कुमार, शंकरलाल, ओमप्रकाश, अशोक सामरिया, मोहनलाल सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

धर्मोतरण विरोधी बिल,यह कानून समय की जरूरत है दूकिया

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(नि.सं.) भाजपा नेता प्यारेलाल दूकिया ने राजस्थान में धर्मांतरण विरोधी बिल पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा की 'यह देश का सबसे सख्त कानून' इस बिल को लाने के पीछे के कारणों को स्पष्ट किया उन्होंने कहा कि कई बार लोग दबाव, धोखे या आर्थिक प्रलोभन के कारण अपना धर्म परिवर्तन कर लेते हैं । इस बिल का मुख्य मकसद ऐसे मामलों पर लगाम लगाना है । दूकिया ने कहा, 'कोई भी धर्म या समाज जबरन धर्मांतरण की अनुमति नहीं देता । कुछ संस्थाएं लोगों को टारगेट करके उन पर दबाव डालती हैं, और यह बिल ऐसे लोगों पर सख्त कार्रवाई सुनिश्चित करेगा.' दूकिया के अनुसार, यह कानून समय की जरूरत है, ताकि समाज में सद्भाव और व्यवस्था बनी रहे ।

ओमान के बाद हैंडबाल में यूएई को दी केशवानन्द ने शिकस्त

जयपुर टाइम्स

सीकर(निसं.)। एन.एच. 52 स्थित स्वामी केशवानन्द शिक्षण संस्थान भढ़ाडर सीकर ने सीबीएसई नेशनल फुटबाल गेम्स जो भोपाल में ओमान को 2-0 से शिकस्त देने के बाद हैंडबाल में भी इमीनियनान स्कूल यूएई को 8-2 से पराजित करते हुए सेमी फाइनल में जगह बना ली है। सीबीएसई प्रधानाचार्य शांतिप्रसाद नेगी ने बताया कि फुटबाल एवं हैंडबाल के सीबीएसई राष्ट्रीय गेम्स भोपाल और श्री गंगानगर में चल रहे है। केशवानन्द के खिलाड़ियों ने ओमान एवं संयुक्त अरब अमीरात के स्कूल को शिकस्त देकर अगले दौर में प्रवेश किया है। इससे पूर्व 69वें जिलास्तरीय खेल प्रतियोगिता में आज बाक्सिंग एवं तीरंदाजी की चैम्पियनशीप पर कब्जा जमाकर इस सत्र के कुल 32 चैम्पियनशीप अपने नाम की। अगस्त से शुरू हुये सीबीएसई कलस्टर एवं शिक्षा विभाग राजस्थान की जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में केशवानन्द के खिलाड़ियों ने एकतरफा दबदबा बना रखा है। जिसके 300 से ज्यादा खिलाड़ीयों ने विभिन्न खेलों में गोल्ड, सिल्वर एवं ब्रान्ज मैडल पर कब्जा जमा लिया है। शानदार उपलब्धि पर संस्था निदेशक रामनिवास ढाका चैयरमैन सुरेन्द्र सिंह एवं सह निदेशक गोपाल सिंह ने सभी खिलाड़ियो एवं खेल प्रशिक्षिकों को बधाई प्रेषित की।

सेन्ट्रल मॉनिटरिंग कमेटी के सदस्य भगवत प्रसाद मकवाना ने जिला स्तरीय अधिकारियों की बैठक ली

मैन्युअल स्कैवेंजिंग के खिलाफ कड़ी कार्रवाई का निर्देश दिया

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निसं.)। केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की सेन्ट्रल मॉनिटरिंग कमेटी के सदस्य एवं उत्तराखण्ड सरकार के सफाई कर्मचारी आयोग के उपाध्यक्ष (राज्यमंत्री) भगवत प्रसाद मकवाना ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिला स्तरीय अधिकारियों की बैठक की अध्यक्षता की। इस दौरान उन्होंने मैन्युअल स्कैवेंजिंग (हाथ से मैला ढोने) की प्रथा के उन्मूलन और सफाई कर्मचारियों के कल्याण से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर दिशा-निर्देश जारी किए। मकवाना ने बैठक में 'द प्रोहिबिशन ऑफ एम्प्लॉयमेंट एज मैन्युअल स्कैवेंजर्स एंड देयर रिहैबिलिटेशन एक्ट, 2013' (मैन्युअल स्कैवेंजर एक्ट) के प्रावधानों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने स्पष्ट किया कि हाथ से मैला उठाना एक दंडनीय अपराह है और इस कानून के तहत इसके लिए 5 वर्ष तक की कैद की सजा का प्रावधान है। उन्होंने अधिकारियों से इस कानून को पूरी सख्ती से लागू करने और इस सामाजिक बुराई को जड़ से खत्म करने का आह्वान किया। बैठक के दौरान, मकवाना ने जिले में 'नमस्ते' योजना की प्रगति की भी विस्तृत जानकारी ली। इस योजना का उद्देश्य मैन्युअल स्कैवेंजिंग को पूरी तरह से खत्म करने और सीवरेज कर्मियों के जीवन व सुरक्षा में सुधार लाना है। उन्होंने अधिकारियों को सफाई कर्मचारी वित्त एवं विकास निगम द्वारा संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं, विशेष रूप से ऋण योजनाओं, का व्यापक प्रचार-प्रसार करने का निर्देश दिया, ताकि अधिक से अधिक सफाई कर्मचारी इनका लाभ उठा सकें। बैठक में जिला प्रमुख हर्षिनी कुलहरी ने मकवाना का आभार व्यक्त किया और सफाई कर्मचारी वर्ग के उत्थान के लिए अपनी पूर्ण प्रतिबद्धता दोहराई। बैठक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा सफाई कर्मचारियों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए शुरू की गई विभिन्न योजनाओं और किए गए कार्यों की भी जानकारी साझा की गई। बैठक में एडीएम अजय कुमार आर्य, नगर परिषद आयुक्त दलीप पूनिया, पीएमओ डॉ. जितेंद्र भांबू, पीआरओ हिमांशु सिंह, बाल अधिकारिता विभाग के सहायक निदेशक अरविंद ओला, श्रम कल्याण अधिकारी अरुणा शर्मा सहित जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

नगर परिषद द्वारा 'शहर चलो अभियान' के पूर्व शिविर आयोजित, 12 प्रकरण निस्तारित

कल वार्ड 21 से 29 तक के शिविर आयोजित

जयपुर टाइम्स

झुंझुनू(निसं.) नगर परिषद झुंझुनूं द्वारा 4 सितंबर से 2 अक्टूबर तक चलाये जा रहे "शहर चलो अभियान" 2025 के तहत मंगलवार को वार्ड संख्या 15 से 20 एवं वारिसपुरा, बाडलवास व खांगा का बास के लिये बन्धे का पंचायत समिति झुंझुनूं में केम्प लगाया गया। आयुक्त नगर परिषद दलीप पूनिया ने बताया कि इस केम्प के तहत सामान्य कार्य जैसे सफाई के कार्य, सार्वजनिक प्रकाश की व्यवस्था के तहत नई लाईटो व बन्द पड़ी लाईटो को चालू करवाना, आवारा व बेसहारा पशुओं को पकडकर निर्धारित स्थल पर पहुंचाना, पार्क, रैन बसेरो इत्यादि की साफ सफाई की व्यवस्था इत्यादि कार्य तथा भूमि सम्बन्धित कार्य जैसे अकृषि भूमि का समर्पण कर धारा 69 ए में पट्टा, फ्रि होल्ड पट्टा, लीज डीड/लाईसेन्स (90ए/90बी) के पट्टे, अकृषि प्रयोजन की अनुज्ञा इत्यादि कामों के लिये केम्प का आयोजन किया गया। सामान्य कार्यों हेतु केम्प के माध्यम से आज कुल 12 शिकायतें प्राप्त की गयी एवं निस्तारण हेतु तुरन्त प्रभाव से सम्बन्धित अधिकारी को प्रेषित कर कार्यवाही की गयी। विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी गयी जैसे सी.एम. स्वनिधि, पी.एम. आवास योजना, सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना, ई डब्लयू एस में आवेदन प्राप्त किये गये। भूमि सम्बन्धित कार्यों के लिए जानकारी दी गई एवं भूमि से सम्बन्धित कार्यों के लिये जैसे कृषि भूमि नियमन पट्टा, 69 ए पट्टा, फ्रि होल्ड पट्टा, नामान्तरण, उपविभाजन / पूर्नगठन, भवन निर्माण स्वीकृति के कार्य किये गये। पूनिया ने बताया कि बुधवार को वार्ड 21 से 29, दीपलवास, भूरिवास के शिविर 3 नंबर रोड़ स्थित मोरवाल भवन/बहुजन समाज भवन में आयोजित होगा।

पूर्व सरपंच के साथ हुई मार पीट

जयपुर टाइम्स

गुढ़ा झुंझुनू(निसं.) गुढा में 19 वर्षीय युवती की हत्या के बाद तनाव उस समय और बढ़ गया, जब परिजनों को समझाने पहुंचे टोडी गांव के पूर्व सरपंच ख्यालीराम से गुस्साई भीड़ ने मारपीट कर दी। गुढ़ा बावनी की ढाणी में प्रेम प्रसंग को लेकर हुई इस वारदात के बाद न्याय की मांग कर रहे परिजनों ने गुढ़ा सीएचसी के बाहर धरना शुरू कर दिया था। इसी दौरान, हालात को शांत करने पहुंचे पूर्व सरपंच को लोगों के आक्रोश का सामना करना पड़ा। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरलभीड़ हुई आक्रोशित, गुढ़ा सीएचसी के बाहर तनावपूर्ण माहौल

धरने पर पहुंचे थे टोडी गांव के पूर्व सरपंच

ख्यालीराम परिजनों को समझाने पहुंचे। उन्होंने कहा कि पुलिस जांच कर रही है और शव का पोस्टमार्टम कराकर ले लेना चाहिए। उनकी इस बात पर वहां मौजूद कुछ युवा भड़क गए और उन्होंने ख्यालीराम से हाथापाई शुरू कर दी। हालात बिगड़ते देख मौके पर मौजूद पुलिस ने तुरंत हस्तक्षेप किया और दोनों पक्षों को अलग किया।

पुलिस ने संभाले हालात

डिप्टी राजवीर सिंह सहित भारी पुलिस बल मौके पर मौजूद था, जिन्होंने ग्रामीणों को शांत करने की कोशिश की। पुलिस ने परिजनों को न्याय दिलाने का भरोसा दिलाया और शांति बनाए रखने की अपील की। मृतका के भाई पवन कुमार ने अज्ञात लोगों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कराया है, हालांकि जांच में बंटी मेघवाल का नाम सामने आया है। एसपी बृजेश ज्योति उपाध्याय ने बताया कि आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है और हर पहलू से जांच की जा रही है।

भोजलाई बास में घटा जलभराव, अब भी कुछ घरों में है आफत

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। बरसाती पानी का भराव भोजलाई बास में अब कम होने लगा है। जो बरसाती पानी भोजलाई चौराहे तक पहुंच गया था, वो अब कब्रिस्तान तक पहुंच गया है। स्थानीय निवासी टीकमचंद प्रजापत ने बताया कि कब्रिस्तान के आस-पास अब भी कई घरों में पानी घुसा हुआ है। टीकमचंद प्रजापत ने बताया कि अभी तक 17 दिन बीत जाने के बाद भी कई बार लापरवाही हो रही है। कई बार पंप बंद मिलता है। प्रजापत ने बताया कि दो दिन पहले रात को जाकर देखा, तो पंप बंद पड़ा था। बाद में पंप चालू करवाना पड़ा। उन्होंने बताया कि यहां 17 दिनों से घरों से लोग अन्य स्थानों पर रह रहे हैं। कई लोग रिश्तेदारों के पास, तो कुछ लोग किराये पर चले गए हैं। जिसके कारण लोगों को काफी सामान का नुकसान बरसाती पानी के कारण हुआ है। इधर श्मसान घाट के दूसरे गेट के सामने में भी काफी कीचड़ पड़ा है। वहीं मोहल्लों में बदबू काफी बड़ी समस्या बनकर सामने आ रही है। एफसीआई गोदाम में गेहूं सड़ने के कारण मोहल्लों में बदबू फैल गई है। जनता का मानना है कि प्रशासन चाहे जितनी मुस्तैदी दिखाये, लेकिन गेहूं को शिफ्ट करने के मामले में काफी देरी कर दी गई है, जिसके कारण आम लोगों का सांस लेना भी मुश्किल हो गया है। इधर टीम हारे का सहारा के संयोजक श्याम स्वर्णकार के घर की तरफ अब तक आधा से एक फुट तक पानी सड़कों पर पड़ा है। जलभराव का लेवल नीचा आ रहा है, त्यों-त्यों लोगों को उम्मीद जगने लगी है कि जल्दी ही इस समस्या से निजात मिलेगी। इधर कब्रिस्तान की एक दीवार मुख्य सड़क पर फिर से टूट गई है और पानी कब्रिस्तान में भरा हुआ है।

उपखण्डों में ब्लॉक स्तरीय जन सुनवाई 11 सितम्बर को

जयपुर टाइम्स

सीकर(निसं.)। जिला कलेक्टर मुकुल शर्मा ने बताया कि 11 सितम्बर (गुरूवार) को जिले के समस्त उपखण्डों में प्रात 10 बजे से सायं 4.30 बजे तक ब्लॉक स्तर पर जनसुनवाई अटल जन सेवा शिविर का आयोजन किया जावेगा। ब्लॉक स्तरीय जनसुनवाई के लिए पंचायत समिति वार पर्यवेक्षण अधिकारी भी नियुक्त किये गये है। उन्होंने बताया कि मुख्य सचिव द्वारा राज्य स्तर से वी.सी के माध्यम से अटल जन सेवा शिविर का पर्यवेक्षण किया जायेगा।

सड़क हादसे में दो लोग हुए घायल

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़ (नि.सं.)। सालासर रोड़ स्थित बोबासर पुलिया के पास मंगलवार को एक ट्रक के पीछे से दूसरे ट्रक की टक्कर मार दी, जिससे दो लोग घायल हो गए। सूचना पर सदर पुलिस सुजानगढ़, 108, टीम हारे का सहारा संयोजक श्याम स्वर्णकार, एम्बुलेंस चालक भरत मौक़े पर पहुंचे। दोनों घायलों को ग्रामीणों की सहायता से निकालकर सुजानगढ़ अस्पताल पहुँचाया गया। घायल ट्रक ड्राइवर के मुताबिक आगे चल रहे ट्रक के अचानक ब्रेक लगाने से पीछे वाला ट्रक आगे वाले ट्रक में घुस गया। घायल ड्राइवर प्रीतम सिंह पुत्र जरनेल सिंह, गांव बदनपुर, खलासी मनप्रीत सिंह पुत्र लखविंद्र सिंह, निवासी मोगा पंजाब के रहने वाले हैं। सदर पुलिस थाने के हेड कांस्टेबल जगदीश गढ़वाल मौक़े और अस्पताल में पहुंचे तथा मामले की जानकारी ली। दोनों ट्रक सालासर साइड से लाडनू साइड जा रहे थे।

जहरीले पदार्थ के सेवन से युवक की मौत

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। जहरीले पदार्थ के सेवन से युवक की मृत्यु हो जाने का मामला सामने आया है। जानकारी के अनुसार नर्सिंग छात्र की जहर के सेवन से गंभीर स्थिति हो गयी, जिसे बगड़िया अस्पताल लाया गया, जहाँ से स्थिति गंभीर होने के कारण हायर सेंटर रेफर क़र दिया। लेकिन जिसकी सीकर पहुँचते ही उसकी मृत्यु हो गयी। शव को कल्याण राजकीय अस्पताल सीकर की मोर्चरी में रखवाया गया है। पोस्टमार्टम परिजनों के पहुँचने और रिपोर्ट के आधार पर बुधवार को होगा। जानकारी के मुताबिक कोटपूतली निवासी हिमांशु सैन (22) पुत्र रामसिंह सुजानगढ़. की गांधी बस्ती में किराये पर रहता था। मकान के पडोसियों की सूचना पर एम्बुलेंस चालक नवरत्न बिजारणिया, टीम हारे का सहारा संयोजक श्याम स्वर्णकार, तेजपाल पहुंचे और उसे अस्पताल पहुंचाया। कोतवाली थाने के हेड कांस्टेबल भँवरलाल अस्पताल पहुंचे तथा मामले की जानकारी ली।

21 बाईक सीज, 5 लोग गिरफ्तार

सुजानगढ़(नि.सं.)। कोतवाली पुलिस थाने के सीआई बैगाराम मीणा के नेतृत्व में पुलिस ने कार्रवाई करते हुए बिना नंबरी बाइक, शराब पीकर वाहन चलाने वाले वाहन चालकों की बाइक्स सीज की गई है। डीएसपी दरजाराम बोस के निर्देशों पर यह कार्यवाही की गई, जिसके तहत बिना नंबरी 21 बाइक जप्त की गई और शराब पीकर वाहन चला रहे 5 जनों को गिरफ्तार किया है। एक स्विफ्ट कार भी जप्त की गई है। पुलिस ने बताया कि अभियान में एक चोरी की बाइक जप्त की है।

भूल सुधार

कार्यालय मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, समग्र शिक्षा उदयपुरवाटी जिला झुंझुनू

क्रमांकः- सीबीईओ / समसा / उदयपुरवाटी /2025-26/4240 दिनांक :- 09.09.2025

निविदा

इस कार्यालय के पूर्व आदेश क्रमांक 4233 दिनांक 08.09.2025 के द्वारा भोजन, नाश्ता आवास की निविदा सूचना जयपुर टाइम्स समाचार पत्र में प्रकाशित की गई थी जिसमें बोली प्रस्तुत करनें की अंतिम तिथि व बोली खोलने की दिनांक त्रुटिवश 15.09.2025 प्रकाशित कर दी गई जिसके स्थान पर दिनांक 18.09.2025 पढा जावे।

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
समग्र शिक्षा उदयपुरवाटी

Indra Bhagwan CLF Ghantel (Name of Procuring Entity)

सम्पर्क नं.- 9782881367

पत्र क्रमांक / 2025/2111

Notice Inviting Bid

Bids for Multi-Purpose Oil Machine service (Name (s) of subject matter (s) of Procurement) are invited from interested bidder's upto 12.00PM (time) 10/09/2025 (date). Other Particular of the bid may be visited on the Procurement portal (http://sppp.raj.nic.in) of the state; and https:// rgavp. rajasthan. gov.in/ websitemaster/ TendersEoldepartment website.

NIB:-RGA2526A0134	4,40,000.00
UBN :- RGA2526GSOB00175	

गुड्डी अध्यक्ष — किरण कोषाध्यक्ष — सरोज देवी सचिव

इन्द्र भगवान राजीविका महिला सवार्गीण विकास सहकारी समिति लिमिटेड घण्टेल (चूरू)

DIPR/C/13058/2025

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, बुधवार
10 सितम्बर, 2025

बूथ अध्यक्ष कार्यसमिति की बैठक का आयोजन

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़ (नि.सं.)। सांडवा मंडल की बूथ अध्यक्ष कार्यसमिति की बैठक दूंकर में बीदासर प्रधान संतोष मेघवाल के सानिध्य में हुई। मंडल अध्यक्ष सहीनाथ सिद्ध ने बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में पार्टी की रीति नीति को जन जन तक पहुंचाने और संगठन को मजबूत करने के बारे में चर्चा की गई। इस अवसर पर पंचायत समिति सदस्य विक्रमसिंह, न्योलाराम मेघवाल, मनोज लूणा, नत्थूसिंह, विजयसिंह पड़िहार, हनुमान, मांगीलाल दुसाद, मूलाराम भामू, भंवरलाल भामू, रामनिवास राव, लालसिंह, बजरंग प्रजापत, दलीपसिंह, महावीरसिंह, भींवाराम, गोपाल, संग्राम, रामचंद्र, नरपतसिंह, प्रेमचंद, कालूराम सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

शिक्षक गौरव से सम्मानित हुए रूपपुरा थोई के शिक्षक हंसराज सौंठवाल

जयपुर टाइम्स

थोई(नि.सं.) शिक्षक दिवस पर जयपुर जिले के चौमू के एम बी होटल में आयोजित राज्य स्तरीय शिक्षक समारोह में रूपपुरा थोई के शिक्षक हंसराज सौंठवाल को उनके द्वारा शिक्षा एवं सामाजिक क्षेत्र में किये गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए शिक्षक गौरव सम्मान से नवाजा गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि वरिष्ठ आई ए एस अधिकारी सुबीर गुप्ता डॉ. सुनीता दामिनी मानव जन जागृति संस्थान के प्रदेश अध्यक्ष सौदागर कांदेला चौमू के पूर्व विधायक रामलाल शर्मा प्रधानाचार्य अशोक बबेरवाल ने संयुक्त रूप से सम्मान पत्र एवं प्रतीक चिह्न प्रदान कर सौंठवाल का अभिनन्दन किया। सौंठवाल वर्तमान में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय डूंगा की नांगल पाटन में कार्यरत हैं।

जिला स्तरीय प्रतियोगिता में आर्यन स्कूल को मिले 8 गोल्ड मेडल

जयपुर टाइम्स

रींगस(नि.सं.)। केशवा नन्द स्कूल भढाढर में आयोजित 69 वीं जिला स्तरीय प्रतियोगिता (14 वर्ष आयु वर्ग) में रींगस कस्बे के आर्यन मॉडल स्कूल का दबदबा रहा। संस्थान की प्रधानाचार्या मल्लीका खत्री ने बताया कि संस्था के मोहित कुमार ने 50,100 और 200 मीटर बैक स्ट्रोक स्पर्धा मे 3 गोल्ड, अमन सामोता ने 50,100 और 200 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक मे 3 गोल्ड मेडल और मनोज कुमार ने 100 और 200 मीटर फ्री स्टाइल मे गोल्ड और 50 मीटर में सिल्वर मेडल जीता। इस प्रकार विद्यालय 8 गोल्ड और एक सिल्वर के साथ जिला स्तरीय प्रतियोगिता मे रनर अप रहा और तीनो छात्रों ने 29 सितम्बर से जोधपुर में होने वाली राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए क्वालीफाई किया। इस सफलता पर विद्यालय मे खुशी का माहौल रहा और संस्था संरक्षक उदय भान धींगरा के नेतृत्व में छात्रों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर बंशीधर खेदड़, मुकेश शेषमा, कृष्ण कांत वर्मा, संजय कंवर, दुर्गा धींगरा, वंदना वाधवानी, सोनिया यादव, पूजा कुमावत, योगेश कंवर सहित अनेक स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

खिलाड़ियों राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर नाम रोशन करें- रतनलाल जलधारी

जयपुर टाइम्स

सीकर,(निसं.)। पिपराली में शहीद सरफुद्दीन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, आयोजित 69वीं जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता 17 व 19 वर्षीय आयु वर्ग वॉलीबॉल के समापन समारोह हुआ। इस अवसर पर रतनलाल जलधारी पूर्व विधायक ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन में सफलता पाने की सबसे बड़ी कुंजी ईमानदारी है। जैसे हम अपने परिवार के प्रति ईमानदार रहते हैं, वैसे ही समाज और देश के प्रति भी ईमानदार रहना उतना ही आवश्यक है। प्रशिक्षकों से आग्रह किया कि वे कड़ी मेहनत कर ऐसे खिलाड़ियों को तैयार करें, जो राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सीकर जिले का नाम रोशन करें। सभी विजेता और उपविजेता खिलाड़ियों को हार्दिक बधाई एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी।

विनोद पंवार ने अभियान में वार्ड 44 कार्यों का दिया ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

सीकर(नि.सं.) जिले के फतेहपुर शेखावाटी में आयुक्त नगर परिषद को विनोद पंवार शहर अध्यक्ष अनुसूचित जाति कांग्रेस ने शहर चलो अभियान में वार्ड नंबर 44 कार्यों के समाधान का दिया ज्ञापन। ज्ञापन में बताया की वार्ड नंबर 44 नगर में सबसे पिछड़ा हुआ वार्ड में अनुसूचित जाति तबके के गरीब लोग निवास करते हैं अशिक्षित होने के कारण यह लोग अपनी मूलभूत सुविधाओं से वंचित रह जाते शहर चलो अभियान में कार्यों को करवा कर वार्ड के लोगों को राहत प्रदान करें। बाल्मीकि बस्ती में सड़क निर्माण नहीं हुआ शकूर चौपदार के घर से लेकर फारुख गुर्जर के घर के सामने से होते हुए राजू हाफिज के घर को शामित करते हुए कालू दायमा के घर तक सड़क निर्माण हो। आवासीय कृषि भूमि में काफी संख्या में परिवार निवास कर रहे आवासीय कृषि भूमि नगर परिषद के दायरे में नहीं होने के कारण लोगों को सरकार की तरफ से मिलने वाली योजनाओं का लाभ एवं मूलभूत सुविधाओं से वंवित हो रहे इस आवासीय कृषि भूमि को नगर परिषद में कन्वर्जन कर लोगों को राहत प्रदान करें। मुख्य सड़क बेसवा रोड पर वाहनों का आवागमन बहुत ज्यादा होने के कारण यहां से गुजरने वाली गाड़ियां तेज रफ्तार में गुजरती हादसे का अंदेशा हमेशा बना रहता शांति मेडिकल के पास, दारूम ऊलूम मदरसा के पास दो दो ब्रेकर लगा के पढ़ने वाले बच्चों को एवं राहगीरों को राहत प्रदान करें।वार्ड की सफाई व्यवस्था चरमराई हुई सफाई ना के बराबर होती इसे सुचारू रूप से चालू करवा कर तोगों को राहत प्रदान करें। वार्ड में स्ट्रीट लाइट खराब एवं कई खम्बो पर लाइट लगी हुई भी नहीं जो खराब उन्हें सही करवाए और लगभग 200 से अधिक नई लाइट इन खम्बों पर लगवा कर लोगों को राहत प्रदान करें। वार्ड में जिन घरों में सिविर लाइन के कनेक्मान नहीं हुए है उन्हें चिन्हित कर के कनेक्शन करवा कर राहत प्रदान करें।आवारा पशु काकी घूमते उन्हें गौशाला में भेजे नवलगढ़ पुल के पास बने डैम में बरसात के मौसम में लाईट बार-बार जाने के कारण पानी निकासी के लिए काफी समय लग जाता जिस कारण लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता रेलवे लाइन इन को कॉस कर कर जाना पड़ता है जान माल के नुकसान का अंदेशा बना रहता यहां स्थाई जनरेटर की व्यवस्था करवा कर लोगों को राहत प्रदान करें। दो बढ़ी हाई मास्क लाइट बाल्मीकि बस्ती के चौक में एवं एक दारुल उलुम सुल्तानुल हिन्द मदरसा के पास लगाकर लोगों की राहत प्रदान करें।

पितृ पक्ष की त्रयोदशी परहोगी पितृ दीपावली

जयपुर टाइम्स

सीकर,(नि.सं.)। श्री कल्याण धाम सीकर पितृ पक्ष की त्रयोदशी तिथि पर 19 सितम्बर शुक्रवार को धर्मगुरु सनातन रत्न महंत विष्णु प्रसाद शर्मा के सानिध्य में पितृ दीपावली का आयोजन। अपने अपने पितरों के निमित तर्पण किया जाएगा तत्पश्चात कल्याण धणी की महाआरती कर शालिग्राम भगवान की तुलसी दल से पूजन कर श्री कल्याण धाम से माधव सागर तक भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी माधव सागर पर 11 हजार दीपकों से भव्य सजावट कर पितरों के निमित दीप दान। विष्णु पद के साथ की जाएगी पूजा, मान्यता है कि शास्त्रों में ऐसा वर्णन है कि पितृ पक्ष के दौरान पितृ धरती पर आते हैं उनके निमित सभी पूजा अर्चना करते। मंदिर व्यवस्थापक रवि प्रसाद शर्मा ने इस विषय पर बताया कि शास्त्रों मुख्य रूप से तीन दीपावली मनाई जाती जिसमे मनुष्य लोक की दीपावली हम कार्तिक की अमावस्या को आती है और देव लोक की दीपावली कार्तिक की पूर्णिमा पर हम लोग मानते हैं इसी प्रकार पितृ लोक की दीपावली आश्विन कृष्ण त्रयोदशी को मनाई जाती है मान्यता है कि इस दिन पितरों के निमित विष्णु मंदिर में यदि दीप दान किया जाता है तो पितरों का मार्ग रोशनीमय होता है और वे अपने लोक को खुश होकर लोटते है मानव जिस प्रकार अपने घर दीपावली मनाता है उस तरह इसे भाव से मनाना चाहिये गया जी में विष्णु पद पर यह उत्सव लाखो वर्षो से बड़े ही धूम धाम के साथ मनाते हैं उत्सव इस बार श्री कल्याण धाम में 19 सितम्बर को सायं 5 बजे मनाया जाएगा जिसमे श्री कल्याण मंदिर भव्य बैंड वादन के साथ श्री कल्याण जी महाराज रथ में विराजमान होकर शहर के मुख्य मार्गो से होते हुए माधव सागर जाकर पितरों के निमित दीप दान किया जायेगा।

राजकीय अल्पसंख्यक आवासीय विद्यालय (बालक), चूरू में निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन

लगभग 100 विद्यार्थियों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उनका निःशुल्क उपचार किया गया

जयपुर टाइम्स

चूरू(नि.सं.) राजकीय अल्पसंख्यक आवासीय विद्यालय (बालक), चूरू में फिजियोथेरेपी दिवस के अवसर पर निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर स्टे रिलेक्सड फिजियोथेरेपी हॉस्पिटल के सौजन्य से लगाया गया , डॉ. अख्तर खान डॉ. पुष्पा खारड़िया एवं अब्दुल्लाह कुरैशी, ताहिर मुगल, उमर कुरैशी आदि के सान्निध्य में संपन्न हुआ। इस अवसर डॉ. पुष्पा खारड़िया ने बताया की शिविर में लगभग 100 विद्यार्थियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया, जिसमें विद्यार्थियों की स्वास्थ्य, पोषण स्तर, तथा सामान्य स्वास्थ्य की गहन जांच की गई। जिन छात्रों में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ पाई गईं, उनका निःशुल्क उपचार किया गया7 डॉ. अख्तर खान ने बताया की विश्व फिजियोथेरेपी दिवस (विश्व पीटी दिवस) एक वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रम है जो 1996 से हर साल 8 सितंबर को मनाया जाता है , जो 1951 में विश्व फिजियोथेरेपी की स्थापना की स्मृति में मनाया जाता है शिविर के सफल आयोजन के दौरान विद्यालय परिवार से प्रधानाचार्य श्री नियाज़ मोहम्मद जी , वरिष्ठ अध्यापक श्री इमरान बी. खान, अध्यापक जावेद खान गांगियासर , अध्यापक रत्नलाल जी सहित अन्य शिक्षक एवं स्टाफ सदस्य भी उपस्थित रहे। प्रधानाचार्य नियाज़ मोहम्मद ओर वरिष्ठ अध्यापक इमरान बी खान ने का आभार व्यक्त किया और कहा, "ऐसे चिकित्सा शिविर विद्यार्थियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होते हैं। विद्यालय भविष्य में भी इस प्रकार के आयोजन नियमित रूप से करता रहेगा।

आशा की किरण कठिन समय में उम्मीद

जयपुर टाइम्स

नवलगढ़(नि.सं.)/जीवन में हर किसी को कभी-न-कभी ऐसे पल का सामना करना पड़ता है जब सबकुछ अंधकारमय और कठिन लगता है। समस्याएँ बड़ी दिखाई देती हैं और समाधान बहुत दूर। ऐसे समय में कई लोग उम्मीद खो देते हैं और आत्महत्या जैसे कदम के बारे में सोचने लगते हैं। लेकिन याद रखिए – कठिनाईयाँ स्थायी नहीं होतीं, वे समय के साथ बदलती हैं। हर अंधेरी रात के बाद सुबह जरूर आती है। आत्महत्या किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। यह केवल उन लोगों को स्थायी दर्द देती है जो हमें प्यार करते हैं। असली ताकत कठिन समय में भी उम्मीद को थामे रखने में है। छोटी-सी वजह भी हमें जीने की शक्ति दे सकती है – जैसे परिवार का साथ, बच्चों की मुस्कान, दोस्तों की मदद, या सिर्फ यह विश्वास कि कल का दिन आज से बेहतर होगा। आशा का मतलब यह नहीं है कि समस्याएँ तुरंत खत्म हो जाएँगी। इसका अर्थ है कि हम मानते हैं कि बदलाव संभव है और जीवन में नए अवसर आ सकते हैं। मुश्किल समय में यह जरूरी है कि हम अपने मन की बातें किसी भरोसेमंद व्यक्ति से साझा करें। परिवार, मित्र, शिक्षक या कोई भी ऐसा इंसान जिस पर हम विश्वास करते हैं, वह हमें सहारा दे सकता है। इसके अलावा, मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल करना भी उतना ही जरूरी है जितना शारीरिक स्वास्थ्य की। तनाव, चिंता या अवसाद जैसे हालात सामान्य हैं और इनके लिए मदद लेना कमजोरी नहीं, बल्कि साहस की निशानी है। डॉक्टर, परामर्शदाता और समुदाय के सहयोग से हम अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं। हम सभी के पास किसी-न-किसी रूप में "आशा की किरण" होती है। कभी यह हमारे अपने भीतर होती है, कभी हमारे प्रियजनों में, और कभी उस समुदाय में जिसमें हम रहते हैं। ज़रूरत सिर्फ इसे पहचानने और थामे रखने की है। याद रखिए – कठिन समय बीत जाता है, लेकिन जीवन की कीमत हमेशा बनी रहती है। आशा हमें आगे बढ़ने की शक्ति देती है और यही हमें याद दिलाती है कि हम अकेले नहीं हैं। अगर आप या आपका कोई जानने वाला आत्महत्या के विचारों से जूझ रहा है, तो कृपया जान लें कि मदद उपलब्ध है। आप सरकारी हेल्पलाइन 'किरण' को 1800-599-0019 पर संपर्क कर सकते हैं या और जानकारी व संसाधन पाने के लिए कंगारू माइंड्स के सोशल मीडिया या वेबसाइट देख सकते हैं। डॉ वेदिका पोदार, मानसिक स्वास्थ्य अधिवक्ता, कंगारू माइंड्स की संस्थापक और आनंदीलाल पोदार ट्रस्ट (नवलगढ़) की ट्रस्टी हैं।

कुश्ती 17 वर्ष छात्र व छात्रा दोनों वर्गों में प्रिंस बनी विजेता

कुश्ती में 22 गोल्ड सहित 82 मेडल्स भी जीते

जयपुर टाइम्स

सीकर,(नि.सं.)। 69वीं जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में प्रिंस की टीमों का शानदार प्रदर्शन लगातार जारी है। प्रिंस ने कुश्ती 17 वर्ष छात्र व छात्रा दोनों वर्गों में विजेता का खिताब जीता है। साथ ही कुश्ती व वालीबाल की विभिन्न आयु वर्गों की स्पर्धाओं में 4 उपविजेता की ट्रॉफी जीती है। प्रिंस रेजिडेंशियल स्कूल, सीकर में आयोजित कुश्ती 17 वर्ष छात्र प्रतियोगिता में प्रिंस रेजिडेंशियल स्कूल ने विजेता का खिताब जीता है जबकि प्रिंस जेआरएस स्कूल ने उपविजेता का खिताब हासिल किया है। कुश्ती 19 व 14 वर्ष छात्र दोनों प्रतियोगिताओं में प्रिंस रेजिडेंशियल स्कूल ने उपविजेता का खिताब हासिल किया है। इस टूर्नामेंट में प्रिंस की टीमों ने 14 गोल्ड, 18 सिल्वर एवं 34 ब्रॉन्ज मेडल सहित कुल 66 मेडल जीते हैं। श्रीमाधोपुर में आयोजित कुश्ती 17 वर्ष छात्रा प्रतियोगिता में प्रिंस रेजिडेंशियल स्कूल ने विजेता का खिताब जीता है। प्रतियोगिता में प्रिंस रेजिडेंशियल स्कूल ने 8 गोल्ड, 5 सिल्वर एवं 3 ब्रॉन्ज मेडल सहित कुल 16 मेडल जीते हैं।पिपराली में चल रही वॉलीबॉल 19 वर्ष छात्र प्रतियोगिता में प्रिंस सी.सै.स्कूल ने उपविजेता का खिताब हासिल किया है। इससे पूर्व सेमीफाइनल मुकाबले में प्रिंस सी.सै.स्कूल ने केशवानंद स्कूल, भढ़ाढ़र को 3-1 से पराजित कर फाइनल में प्रवेश किया था।भोपाल, म.प्र. में चल रही फुटबॉल 19 वर्ष छात्र स्पर्धा के सीबीएसई नेशनल टूर्नामेंट में प्रिंस एकेडमी ने डी.पी.एस. स्कूल, बेंगलुरू को 1-0 से हराकर प्री-क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया है।

आत्मनिर्भर महिला सम्मान अभियान में महिलाओ का हुआ सम्मान

जयपुर टाइम्स

सीकर,(नि.सं.) भाजपा नेता भंवर लाल जांगिड़ के नेतृत्व में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में आत्मनिर्भर महिला एवं शहीद वीरांगना सम्मान अभियान के तहत नीमकाथाना विधानसभा क्षेत्र की चला, चौकडी. दयाल की नांगल, भूधौली भगेगा, गणेश्वर सहित ग्राम पंचायतो मे आंगनबाड़ी केंद्रों की महिलाओ एवं शहीद वीरांगनाए को शॉल ओढाकर प्रतीक चिन्ह भेंट करके सम्मानित किया। जांगिड़ ने बताया कि आंगनबाड़ी केंद्रों पर बच्चों को खाद्य सामग्री वितरित की गई महिला सशक्तिकरण को लेकर केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा महिलाओं के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही।सीधा लाभ प्रत्येक महिला को मिलने पर महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिल रहा सरकार द्वारा महिलाओं को रोजगार और उद्यमिता के अवसर मिलने पर वे आत्मनिर्भर बन रही है महिला सुरक्षा को लेकर अनेक योजनाएं चलाई जा रही। बालिकाओं के लिए भी अनेक योजनाएं चलाई जा रही बालिकाओं पढ़ाई के साथ-साथ प्रोत्साहन मिल रहा महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और स्टार्टअप रूप से सशक्त बनाना है। एक शिक्षित महिला पूरी पीढ़ी को शिक्षित कर सकती नीमकाथाना क्षेत्र के आंगनबाड़ी केंद्रों पर बच्चे के पीने का पानी कमरों में पंखे सहित अनेक समस्याओं को लेकर जनप्रतिनिधियों को अवगत करवाया गया जिले में अब तक 125 ग्राम पंचायतो में अभियान को पहुंचाया जा चुका है तथा लगातार अभियान जिलेभर में जारी। इस दौरान टोडरमल, बोदूराम जागिड,भीवाराम, राकेश,मदन जागिड सहित ग्रामवासी एवं महिलाएं मौजूद रही ।

सीकर में सेना भर्ती रैली - 2025

सीकर क्षेत्र के 600 अभ्यर्थी आज भाग लेंगे

जयपुर टाइम्स

सीकर,(नि.सं.)। सेना भर्ती अधिकारी जयपुर निदेशक (कर्नल) हरीशचन्द्र ने बताया कि सीकर के जिला खेल स्टेडियम, सांवली रोड़ में 16 सितम्बर 2025 तक आयोजित होने वाली सेना भर्ती रैली के लिए जयपुर, सीकर एवं डीडवाना-कुचामन क्षेत्र के विभिन्न उपखण्डों एवं ग्रामीण क्षेत्रों से पात्र अभ्यर्थियों को निर्धारित तिथियों पर भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया है। सेना भर्ती अधिकारी जयपुर निदेशक (कर्नल) हरीशचन्द्र ने बताया कि 10 सितम्बर सीकर दांतारामगढ़, धोद, फतेहपुर, खण्डेला के 600 अभ्यर्थी भाग लेंगे।

वरिष्ठ जादूगर एस. लाल ने जादूगर सम्मेलन में की शिरकत

जयपुर टाइम्स

सीकर,(नि.सं.)। शेखावाटी मैजिक सर्किल सीकर के अध्यक्ष एवं देश एवं प्रदेश के वरिष्ठ जादूगर एस. लाल ने राजस्थान मैजिशियन'स एसोसिएशन द्वारा अजमेर में आयोजित एक दिवसीय जादूगर सम्मलेन में भाग लिया।जानकारी देते हुए सर्किल के सचिव महावीर प्रसाद व्यास ने बताया की उक्त कार्यक्रम 6 सितम्बर को अजमेर के सूचना केन्द्र सभागार में आयोजित किया गया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक जी गहलोत थे। सम्मेलन में राज्य के विभिन जिलों से 125 से अधिक जादूगरों ने भाग लिया। उल्लेखनीय है की 70 -80 के दशक में जब एसोसिएशन सक्रिय थी जादूगर एस. लाल तब भी उसमे सक्रिय पदाधिकारी रहे है।

रानोली में ट्रेन की चपेट में आने से युवती की मौत

रेलवे ट्रैक के पास लहूलुहान हालात में मिला शव

जयपुर टाइम्स

रानोली, सीकर(निसं.) रानोली थाना क्षेत्र में रेलवे स्टेशन के पास ट्रेन से कटने से एक युवती की दर्दनाक मौत हो गई। युवती का शव रेलवे ट्रैक के पास लहूलुहान हालात में मिला। सूचना मिलने पर रानोली थाना पुलिस व जीआरपी पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू की। मृतक युवती की पहचान खुशी सैनी (21) निवासी रामसिंहपुरा (सीकर) के रूप में हुई है। पुलिस ने घटना की सूचना युवती के परिजनों को दे दी है। शव को पलसाना के राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की मॉर्चुरी में रखवाया गया है। परिजनों की मौजूदगी में शव का पोस्टमार्टम करवाकर उन्हें सौंपा जाएगा। फिलहाल पुलिस जांच कर रही है कि यह हादसा था या सुसाइड। वहीं, खुशी की मौत की खबर सुनते ही परिवार में कोहराम मच गया। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। पुलिस ने बताया कि परिजनों की शिकायत और बयानों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

भामाशाह ने विद्यालय के छात्रों को स्काउट ड्रेस वितरण की विद्यालय परिवार ने भामाशाह का स्वागत किया

जयपुर टाइम्स

थोई(निसं.) प्रीतमपुरी विद्यालय में भामाशाह ने विद्यालय के स्काउट के छात्रा को स्काउट ड्रेस वितरित की विद्यालय परिवार ने भामाशाह का स्वागत किया तथा आगे भी विद्यालय में इसी तरह से योगा करने की अपील की। विद्यालय के व्याख्याता नागार्जुन सामोता ने बताया कि सेठ श्री रामेश्वर लाल अग्रवाल राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रीतमपुरी में स्थानीय भामाशाह डॉ. नरेन्द्रपाल लाम्बा पुत्र बालचंद्र लाम्बा ने कक्षा 1 से 10 के स्काउट छात्रों को स्काउट ड्रेस वितरित की। कार्यक्रम के दौरान प्रधानाचार्य रामप्रसाद चावला. रामनिवास सुरेला, व्याख्याता नागार्जुन, शिवकुमार शर्मा, राकेश मीणा सहित विद्यालय के छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

महाकवि कन्हैयालाल सेठिया की जयंती पर आयोजित होगा समारोह

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। स्थानीय मरूदेश संस्थान द्वारा राजस्थान रत्न और पद्मश्री सम्मान से विभूषित महाकवि कन्हैयालाल सेठिया की 106ठी जयंती समारोह पूर्वक मनाई जाएगी। मरूदेश संस्थान के अध्यक्ष डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा ने बताया कि गुरूवार को प्रातः दस बजे से सेठिया हवेली में कन्हैयालाल सेठिया राजस्थानी भाषा उत्सव में उनके लोकप्रिय गीतों की सांगीतिक प्रस्तुतियां दी जायेगी। कलाकार अशोक आर्य, दिनेश दर्जी और मनीष रक्षक आदि अपनी प्रस्तुतियां देंगे। इस अवसर पर सुदीर्घ समय से राजस्थानी भाषा के प्रचार प्रसार में सक्रिय योगदान देने और महाकवि कन्हैयालाल सेठिया की परम्परा के सतत् प्रवाहमान रखने के प्रशंसनीय कार्य पर उनके पुत्र जयप्रकाश सेठिया, कोलकाता का सम्मान भी किया जाएगा। उत्सव में कन्हैयालाल सेठिया के व्यक्तित्व और कृतित्व पर भी परिचर्चा होगी। जिसमें कन्हैयालाल सेठिया के अवदान से भावी पीढ़ी को परिचित करवाया जाएगा। आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व वरिष्ठ न्यायाधीश और राजस्थान सरकार के पूर्व विशेष विधि सचिव अशोक कुमार व्यास, जैसलमेर करेंगे और मुख्य अतिथि पदम श्री से अलंकृत देश के प्रसिद्ध पर्यावरणविद् हिम्मताराम भामू नागौर होंगे। आयोजन की तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

प्रयोगशाला व शिक्षक है फिर भी बच्चों को प्रैक्टिकल क्यों नहीं करा रहे - एसडीएम

नाथूसर के एमजी स्कूल में प्रयोगशाला में अव्यवस्थित सामान देख प्रधानाचार्य से सवाल पूछे

जयपुर टाइम्स

मूंडरू(निसं.)। कस्बे के गांव नाथूसर स्थित राजकीय महात्मा गांधी स्कूल व आंगनबाड़ी केंद्रों का मंगलवार को श्रीमाधोपुर एसडीएम अनिल कुमार ने औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान स्कूल व केंद्रों में कई प्रकार की अनियमितताएं देख एसडीएम अनिल कुमार ने नाराजगी जाहिर की। एसडीएम ने विद्यालय में मिड डे मील, रसोई, प्रयोगशाला, शौचालय, साफ सफाई आदि का निरीक्षण किया। प्रयोगशाला के निरीक्षण के दौरान प्रयोगशाला का सामान अव्यवस्थित पाया गया। काफी समय से विद्यार्थियों को प्रैक्टिकल नहीं कराया जाना पाया गया। जिस पर उपखंड अधिकारी ने प्रधानाचार्य कैलाश चंद्र से सवाल पूछे। एसडीएम ने कहा कि विद्यालय में प्रयोगशाला शिक्षक की नियुक्ति है। प्रयोगशाला बनी हुई है। इसके बावजूद बच्चों को प्रैक्टिकल क्यों नहीं करा रहे। उन्होंने प्रधानाचार्य एवं संबंधित को प्रयोगशाला को तुरंत व्यवस्थित किया जाकर कक्षा 11 व 12 के विज्ञान विषय के छात्र-छात्राओं को विज्ञान के प्रेक्टिकल करवाए जाने के लिए निर्देशित किया गया । उन्होंने पोषाहार एवं रसोई की साफ सफाई का विशेष ध्यान रखने तथा खाना चेक रजिस्टर में भोजन चखने तथा चखकर टिप्पणी व सुझाव भी पंजिका में लिखने के लिए निर्देशित किया। शौचालय की व्यवस्था एवं साफ सफाई ठीक पाई गई। प्रधानाचार्य को निर्देशों की पालना 7 दिवस में करने के लिए निर्देशित किया गया । आंगनबाड़ी केंद्र नाथूसर में निरीक्षण के दौरान कार्यकर्ता एवं सहायिका दोनों मौके पर उपस्थित पाई गई। लेकिन आंगनबाड़ी में 3 से 6 वर्ष के मात्र 6 बच्चों का ही पंजीयन होना पाया गया जो काफी कम था । जिसे बढ़ाने के लिए निर्देशित किया गया । रिकॉर्ड संधारण कमजोर पाया गया जिसे सुधारने व अद्यतन करने के लिए निर्देशित किया गया। कार्यकर्ता द्वारा मोबाइल ऑनलाइन संधारित पोषण ट्रैक्टर में धात्री एवं गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी सूचनाओं संधारित नहीं पाई गई। वही उपलब्ध निरीक्षण पंजिका के अनुसार सुपरवाइजर द्वारा किए गए निरीक्षण में उपलब्ध खाद्यान्न आदि का भौतिक सत्यापन किया जाना नहीं पाया गया । जबकि सीडीपीओ या अन्य विभागीय उच्चाधिकारियों द्वारा जनवरी 2025 के बाद निरीक्षण किया जाना नहीं पाया गया । जिसके लिए सुपरवाइजर एवं सीडीपीओ को समय-समय पर केंद्रों का निरीक्षण कर बच्चों का नामांकन बढ़ाने तथा गुणात्मक परिणाम के दृष्टिकोण से निरीक्षण करने हेतु एवं दिए गए निर्देशों की पालना 7 दिवस में की जाकर पालना भिजवाने बाबत निर्देशित किया गया

"कुमास प्रीमियर लीग क्रिकेट टूर्नामेंट सीजन 01"

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निसं.)। कुमास में चल रही दस दिवसीय क्रिकेट प्रतियोगिता के आज मंगलवार को 05 टीमों ने भाग लिया पूर्व सरपंच हरिराम कुमास ने बताया कि इस 10 दिवसीय टूर्नामेंट में कुल 64 टीम भाग ले रही है तीसरे दिन कुल 05 टीमों ने भाग लिया जिसमें पहला मैच देवगांव व डिगाल के मध्य खेला गया जिसमें देवगांव 7 विकेट से विजय रहा इस मै मैन ऑफ द मैच एसपी सिंह रहे जो 41 रन बनाकर टीम को अच्छा योगदान दिया इसमें अंपायर विनय व समीर खान रहे दूसरा मैच लाडसर व भीचरी के मध्य खेला गया इसमें इसमें लाडसर छह विकेट से विजय रहा इस मैच के अंपायर सोनू व समीर खान रहे तीसरा मैच 36ए आर ग्रुप शेखसर व फतेसरा के मध्य खेला गया जिसमें फतेसरा 9 विकेट से विजय रहा इस मैच में अंपायर अमित वह विनु कुमार रहे 2 राउंड में देवगांव व फतेसरा के मध्य खेला गया जिसमें फतेसरा एक विकेट से विजय रहा मैन ऑफ द मैच अंकित रहा 24 रन बनाकर टीम को अच्छा योगदान किया फिर सेकंड राउंड में इंडाली व सितसर के मध्य खेला गया जिसमें इंडाली 24 रन से विजय रही इसमें मैन ऑफ द मैच अमित रहे जिसने 62 रन बनाकर अपनी टीम को अच्छा योगदान किया दस दिन में आने वाली टीमों की व्यवस्था बनाए रखने के लिए वीनू स्वामी विनोद पूनिया अंकित सेन समीर खान अजय बुडानिया समय-समय टीमों की देखरेख करने में व व्यवस्था बनाए रखने में मौजूद रहेंगे।

सुजानगढ़ को चुना गया है मॉडर्न सर्कल- एसपी जय यादव

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। जिला पुलिस अधीक्षक जय यादव ने कोतवाली थाने का औपचारिक निरीक्षण करते हुए मीडिया से बातचीत के दौरान कहा कि सुजानगढ़ को आदर्श सर्किल चुना गया है, जिसके तहत सभी काम तय समय सीमाओं में करने के निर्देश स्थानीय पुलिस अधिकारियों को दिए गए हैं। एसपी जय यादव ने बताया कि मॉर्डन सर्किल में नए कानून को लेकर जो सबसे अच्छा काम करके दिखायेंगे, इस हेतु सुजानगढ़ का चयन किया गया है। जिसके तहत बीएनएस के प्रावधानों का पूर्णतः पालन करने के लिए निर्देशित किया गया है। एसपी ने कहा कि जिला पुलिस अधीक्षक कार्यालय में सुजानगढ़ से काफी फरियादी पहुंच रहे हैं, जिसके बारे में भी स्थानीय अधिकारियों को पाबंद किया गया है कि परिवादियों को स्थानीय स्तर पर पूरा सुन समझकर कानूनी कार्यवाही की जावे, ताकि लोग जिला मुख्यालय नहीं पहुंचे। उन्होंने कहा कि स्थानीय स्तर पर समुचित सुनवाई के लिए कहा गया है। यादव ने कहा कि ट्रेफिक एक्सीडेंट काफी ज्यादा होते हैं, उसको लेकर पोर्टल डव्लप किया गया है और दिशा निर्देश दिए गए हैं। इसी प्रकार नई बीएनएस की धारा के तहत अपराध से अर्जित की गई सम्पतियों के खिलाफ भी पुलिस इस्तगासे पेश कर रही है और कुर्की, निलामी आदि की कार्यवाहियां भी की जाएगी। एसपी ने हाल ही में बीदासर में सांसद हनुमान बेनीवाल द्वारा पुलिस को लेकर दिए गए बयान का खंडन करते हुए कहा कि सांसद को बिना सत्य का पता लगाए इस प्रकार के गैर जिम्मेदार बयान नहीं देने चाहिए। क्योंकि कोई भी पुलिसकर्मी ड्यूटी के वक्त नशे में नहीं था। इस दौरान एएसपी दिनेश कुमार, डीएसपी दरजाराम, सीआई बैगाराम मीणा आदि भी मौजूद रहे।

अवैध डोडा पोस्त तस्कर आरोपी को 10 वर्ष के कठोर कारावास की सजा

तारानगर (निसं.)। अवैध डोडा पोस्त तस्करी के मामले में तारानगर के अपर जिला एवं सेशन न्यायधीश संतोष कुमार मीणा ने हनुमानगढ़ जिले के नोहर थाना क्षेत्र के दौलतसिंह पुत्र गौरीशंकर को अपराध अंतर्गत धारा 8/15, 8/25 एनडीपीएस में दोषसिद्ध कर 10 वर्ष के कठोर कारावास व 1 एक लाख 50 हजार रूपए के अर्थ दंड से दंडित किया एवं अर्थ दंड जमा नहीं करवाने पर अतिरिक्त 2 वर्ष का साधारण कारावास भुगतना होगा अभियोजन की ओर से पैरवी अपर लोक अभियोजक पंकज कुमार स्वामी द्वारा की गई।

गोल्ड मेडल लाने पर बेटी गुनगुन को दी शुभकामनाएं

जयपुर टाइम्स

खाटूश्यामजी(निसं.)। दिल्ली मे संपन्न हुए संस्कृत TLM में बाय की बेटी गुनगुन कुमावत पुत्री बनवारी लाल ने पूरी दिल्ली में गोल्ड मेडल जीतकर विद्यालय का नहीं अपितु राजस्थान का नाम रोशन किया है। गुनगुन कुमावत की उपलब्धि पर गोल्ड मेडल लाने पर परिवारजन, क्षेत्रवासियों और विभिन्न संस्थाओं ने शुभकामनाएं दी।

पलसाना सरस डेयरी में गंगाजल छिड़कने पर चेयरमैन का विरोध

प्रदर्शनकारी बोले- यह छुआछूत और भेदभाव की मिसाल, चेयरमैन ने कहा- सभी आरोप गलत

जयपुर टाइम्स

पलसाना, सीकर (निसं.)।पलसाना सरस डेयरी ऑफिस में गंगाजल छिड़कने के मामले में सीकर-झुंझुनूं जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ (पलसाना) में चेयरमैन जीतराम मील का विरोध बढ़ता जा रहा है। मीणा समाज और डेयरी से जुड़े लोगों ने सोमवार को डेयरी के बाहर अनिश्चितकालीन धरना शुरू किया था। जो मंगलवार को भी जारी है। दरअसल, सरस डेयरी (पलसाना) के एमडी कमलेश मीणा के तबादले के बाद चेयरमैन जीतराम मील ने एकादशी पर ऑफिस में गंगाजल का छिड़काव किया था। इसका वीडियो सामने आया था। वीडियो में चेयरमैन एमडी की कुर्सी और कार्यालय में गंगाजल छिड़क रहे थे।

प्रदर्शनकारी बोले- यह छुआछूत और भेदभाव की मिसाल...

इस घटना के बाद से मीणा समाज के लोगों में आक्रोश फैल गया गया। इसके चलते डेयरी से जुड़े दुग्ध उत्पादक, किसान और समाज के लोग धरने पर बैठ गए। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि यह छुआछूत और भेदभाव की मिसाल है। जो डेयरी जैसे सहकारी संस्थान में बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

चेयरमैन ने कहा- पूजन के बाद किया छिड़काव, माफी मांगी...

वहीं, इस मामले में डेयरी चेयरमैन जीतराम मील ने कहा- डेयरी के अंदर एक मंदिर बना हुआ है, जहां पूजा-अर्चना की जाती है। हमने सावन के आखिरी सोमवार को यहां हवन किया था, जिसमें एमडी कमलेश मीणा भी शामिल हुए थे। उस कार्यक्रम की फोटो भी है। इसके बाद डेयरी में गणेश चतुर्थी पर भी पूजन हुआ। इसके बाद एकादशी को धार्मिक अनुष्ठान हुआ। इस दौरान पूजा-करने के बाद पूरी डेयरी में गंगाजल का छिड़काव किया गया था ताकि डेयरी अच्छे से चले। क्योकिं डेयरी में अभी दूध कम आता है। एमडी कमलेश मीणा के जाने के बाद कार्यलय में गंगाजल छिड़काव कर शुद्ध करने का मेरा कोई उद्देश्य नहीं था। डेयरी में सभी जाति-धर्मों के 200 कर्मचारी काम करते हैं। मैंने सिर्फ पूजा-अर्चना के बाद गंगाजल का छिड़काव किया गया था। इससे पहले में खाटूश्यामजी दर्शन करके आया था। इसके बावजूद भी अगर मीणा समाज को इससे ठेस पहुंची है तो मैं माफी मांगता हूं। लेकिन मैं इस मामले में गलत नहीं हूं। चेयरमैन ने कहा - मेरे खिलाफ जानबूझकर माहौल बनाया जा रहा है, मैं खुद किसान परिवार से हूं। डेयरी के बाहर जो लोग मेरे खिलाफ धरने पर बैठे हैं, उनकी करोड़ो की रिकवरी है। मैं धरने पर बैठे लोगों से कहना चाहता हूं, अगर मेरे खिलाफ आरोप लगाने ही थे तो भ्रष्टाचार के आरोप लगाते, ये क्या मुद्दा चुना है। मैं बताना चाहता हूं कि डेयरी में इससे पहले भी दो मीणा समाज के एमडी रहकर गए हैं। गंगाजल छिड़काव करने वाली कोई बात नहीं है, सभी आरोप निराधार हैं।

ज़विधायक बोले- विधानसभा में उठाएंगे मुद्दा...

वहीं, सोमवार शाम को धरनास्थल पर पहुंचे दांतारामगढ़ विधायक वीरेंद्र सिंह ने प्रदर्शनकारियों से बातचीत की। विधायक ने कहा- यदि समय रहते आरोपियों पर कार्रवाई नहीं हुई तो वे इस मुद्दे को विधानसभा में उठाएंगे। विधायक ने कहा- डेयरी में न छुआछूत चलेगी, न मिलावट और न ही भ्रष्टाचार। यदि उत्पादों में मिलावट पाई गई तो हम सड़कों पर उतरेंगे और खुद जांच करेंगे। जिम्मेदारों को अपनी गलतियां सुधार लेनी चाहिए।

भ्रष्टाचार और मिलावट की शिकायतें आ रहीं...

वीरेंद्र सिंह ने कहा कि यह डेयरी उनके पिता चौधरी नारायण सिंह की मेहनत और प्रयासों से स्थापित हुई थी। लेकिन पिछले दो-तीन सालों से डेयरी में भ्रष्टाचार और मिलावट की शिकायतें लगातार आ रही हैं। इसके कारण डेयरी विवादों में बनी हुई है। इतना ही नहीं, वे खुद अब सरस के उत्पादों के बजाय निजी डेयरियों का दूध-दही इस्तेमाल कर रहे हैं। विधायक ने एमडी कमलेश कुमार मीणा के तबादले के बाद हुई इस घटना को शर्मनाक बताते हुए कहा कि सरकारी कर्मचारियों की ऐसी हरकतें असहनीय है।

जिला परिषद सदस्य जयंत निठरवाल ने कहा...

डेयरी प्रबंधन से अपील है कि ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए सख्त कदम उठाए जाएं। वरना आंदोलन और तेज होगा। वहीं, प्रदर्शनकारियों का कहना है कि जब तक आरोपी चेयरमैन समेत सभी जिम्मेदारों के खिलाफ विभागीय जांच और कार्रवाई नहीं होती, धरना जारी रहेगा। बता दें कि अगर यह मामला लंबा चला तो डेयरी के संचालन पर भी असर पड़ सकता है।

सेवादल की नवनियुक्त कार्यकारिणी की बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निसं.) तारानगर विधायक नरेन्द्र बुड़ानिया के निर्देशन में तारानगर के सैनी संस्था में जिला अध्यक्ष संजय दीक्षित की अध्यक्षता में बुधवार को कांग्रेस कमेटी सेवादल की नवनियुक्त कार्यकारिणी की बैठक हुई जिसमें आगामी 16, 17 एवं 18 सितंबर को आयोजित संगठन सर्जन प्रशिक्षण शिविर हेतु जिम्मेदारी देने व ज्यादा से ज्यादा संख्या में कार्यकर्ता पहुंचने और पदाधिकारीयो को निर्देश दिया। इस मोके पर जिसमें शहर अध्यक्ष भागीरथ भामी, जगदीश धनावंशी, दिनेश खंडेलवाल, अर्जुन फौजी, सुरजीत वर्मा, कुंदन सैनी, मानसिंह सैनी, योगेश वर्मा, जयनारायण, बूंदे खाँ, विनोद व्यास, साजिद खान, महेंद्र बुंदेला, दिनेश सैनी, सुनील सैनी, बीरबल स्वामी, महेंद्र जाखड़ सहित पार्टी के पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

अजीतगढ़ नवयुवक रामलीला नाट्य कला मंडल इस बार मनाएगा स्वर्ण जयंती महोत्सव

जयपुर टाइम्स

अजीतगढ़(निसं.) कस्बे के मुख्य चौपड़ स्थित कचहरी गणेश मंदिर में नवयुवक रामलीला नाट्य कला मंडल की अहम बैठक सोमवार की देर शाम आयोजित की गई। बैठक में दशहरे पर्व पर रंगमंचीय लीला के सफल संचालन हेतु कार्यकारिणी का गठन किया गया जिसमें विमल जोशी को अध्यक्ष, जुगल किशोर जोशी को समन्वयक,दिनेश गोविंद शर्मा को निर्देशक,कमल फलोंड को कोषाध्यक्ष, एडवोकेट विक्रम बांकावत और चेतन मीणा को प्रवक्ता, सुंदर माछुपुरिया को सामान प्रभारी, भोलूराम बडसीवाल को श्रृंगार सज्जा प्रभारी तथा वैभव जोशी,सत्यनारायण जोशी,सुंदर माछुपुरिया को वित्त कलेक्शन समिति का सदस्य बनाया गया है। शहर में वर्ष 1976 से सार्वजनिक रामलीला का आयोजन प्रारंभ हुआ था जो इस बार 50 वें वर्ष की लीला का मंचन स्वर्ण जयंती महोत्सव के तहत होगा । इस वर्ष मुख्य चौपड़ में 20 सितंबर से 2 अक्टूबर तक गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित मानस और राधेश्याम कथावाचक की रामायण पर आधारित लीला का मंचन किया जाएगा। मंगलवार रात आठ बजे से प्रतिदिन पूर्वाभ्यास करवाया जाएगा। नए कलाकारों को आह्वान भी किया गया है। इस अवसर पर नवरतन शर्मा,मुरारी मिश्रा,मोनू सोनी,रामरतन कुमावत सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे।

पत्रकार पर दर्ज मुकदमे की जांच की मांग, मुख्यमंत्री के नाम सौंपा गया ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

नवलगढ़/नवलगढ़(निसं.)। नगरपालिका अधिशाषी अधिकारी द्वारा पत्रकार रविंद्र पारीक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराने का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। पत्रकार संगठनों का आरोप है कि अधिकारी ने गौवंश ठेके की नाकामी छुपाने और विरोध की कवरेज रोकने के लिए पत्रकार को असामाजिक तत्व बताकर एफआईआर दर्ज कराई है। यह लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को दबाने का प्रयास है। पत्रकार रविंद्र पारीक का कहना है कि उन्होंने केवल कवरेज किया, न तो गेट खोला और न ही लोगों को उकसाया। बल्कि मौके पर उन्होंने लोगों को शांत करने का कार्य किया। एफआईआर में सीसीटीवी कैमरे तोड़ने का आरोप लगाया गया है, जबकि कैमरे नगरपालिका ने खुद हटवाए थे, जिसका वीडियो सबूत के तौर पर मौजूद है। पत्रकार संगठनों ने मामले की निष्पक्ष जांच कर नगरपालिका अधिकारी पर कार्रवाई की मांग की है। साथ ही चेतावनी दी कि यदि शीघ्र कार्रवाई नहीं हुई तो बड़ा आंदोलन किया जाएगा। इस संबंध में मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया है, जिसकी प्रतियां कलेक्टर, डीजीपी, डीएलबी और नगरीय विकास मंत्री को भी भेजी गई हैं।

परिजन बोले- रात को फोन पर बात करते हुए निकला था; हत्या का अंदेशा

जयपुर टाइम्स

झुंझुनू(निसं.)। झुंझुनूं जिले के पचेरीकलां थाना क्षेत्र के लांबी अहिर गांव में मंगलवार सुबह सरकारी स्कूल के पास एक युवक का शव मिला। मृतक की पहचान महेंद्र पुत्र यादराम के रूप में हुई। शव पर चोटों के निशान पाए जाने के बाद पूरे गांव में दहशत का माहौल फैल गया। परिजन और ग्रामीण बड़ी संख्या में घटनास्थल पर जुट गए। पुलिस के अनुसार, मृतक महेंद्र के शरीर पर कई जगह चोटों के निशान मिले हैं। ऐसे में प्रथम दृष्टया मामला हत्या का लग रहा है। हालांकि पुलिस ने अभी तक इस पर स्पष्ट रूप से कुछ कहने से इनकार किया है और पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने का इंतजार है। थानाधिकारी राजपाल यादव मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का निरीक्षण किया। शव को कब्जे में लेकर बुहाना अस्पताल की मॉर्च्यूरी में रखवाया गया।

अजीतगढ़ उपजिला अस्पताल में मंगलवार को 1300 से ऊपर ओपीडी, 4 डॉक्टरों के रही भरोसे

अस्पताल में एक मात्र एमडी फिजिशियन संभाल रहे है अधिकांश मरीजों को

काफी चिकित्सकों के पद रिक्त होने के कारण मरीजो को उपचार में हो रही है भारी परेशानी

जयपुर टाइम्स

अजीतगढ़(निसं.) कस्बे के बाबा नारायणदास राजकीय उपजिला अस्पताल में चिकित्सकों की भारी कमी के कारण मरीज को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है जिस कारण मंगलवार को अस्पताल की ओपीडी 1300 के पार पहुंच गई लेकिन मंगलवार को अस्पताल में केवल चार चिकित्सक ही ड्यूटी पर होने के कारण चिकित्सकों के चैंबरों के सामने मरीजों की भारी भीड़ व लंबी लाइन देखी गई जिस कारण मरीज को उपचार करने में भारी परेशानी हुई। जानकारी के अनुसार कस्बे का उप जिला अस्पताल क्षेत्र का सबसे बड़ा अस्पताल होने के कारण इस अस्पताल में रोजाना लगभग 4 से 5 दर्जन गांवो व ढाणीयो के मरीज उपचार कराने आते हैं लेकिन इस समय अस्पताल में चिकित्सकों की भारी कमी के कारण मरीजो को समुचित उपचार कराने में भारी परेशानी हो रही है। जानकारी के अनुसार मंगलवार को अस्पताल में मरीजो का उपचार करने वाले मात्र चार चिकित्सक ही ड्यूटी पर उपस्थित थे जिस कारण इन चिकित्सकों के चैंबरो के बाहर मरीजों की भारी भीड़ एवं लंबी लाइन देखने को मिली जिस कारण मरीजों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। जानकारी के अनुसार मंगलवार को वरिष्ठ फिजिशियन एमडी डॉक्टर मनफुल सैनी, बेहोशी चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर नितिन अग्रवाल, श्वास रोग चिकित्सक डॉक्टर राजेश बाजिया, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉक्टर विजय सैनी, आईचिकित्सक डॉ राजू बेनीवाल, दंत चिकित्सक डॉक्टर विजय चौधरी, डॉक्टर सीता गठाला एवं यूनानी रोग चिकित्सक उपस्थित थे लेकिन इस समय मौसम परिवर्तन होने के कारण मौसमी बीमारियों की बढ़ोतरी होने के कारण मंगलवार को अस्पताल की ओपीडी 1300 से पार चली जाने के कारण मेडिसिन चिकित्सक विशेषज्ञ ही ऐसी बीमारियों का उपचार कर सकते हैं जिस कारण फिजिशियन एमडी विशेषज्ञ डॉक्टर मनफुल सैनी के चेंबर के बाहर मरीजों की भारी भीड़ व लंबी लाइन लगी हुई थी बाकी अन्य तीन चिकित्सकों के चैंबरों के बाहर भी भीड़ देखी गई लेकिन अस्पताल में चिकित्सकों के अभाव के कारण मरीजों को उपचार कराने में भारी परेशानी हो रही है लोगों का कहना है कि थोड़े दिन पहले अस्पताल के पूर्व पीएमओ एवं फिजिशियन एमडी विशेषज्ञ डॉक्टर अशोक कुमावत का स्थानांतरण होने एवं हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉक्टर महेंद्र स्वामी का प्रोफेसर के पद पर प्रमोशन होने के कारण ये दोनों चिकित्सक यहां से रिलीव हो गए जिस कारण पीएमओ के पद पर शिशु रोग विशेषज्ञ डॉक्टर मनीष जांगिड़ को लगा दिया गया है जबकि दंत रोग, नेत्र रोग , स्त्री रोग एवं यूनानी रोग चिकित्सक अन्य बीमारियों के मरीजों का उपचार नहीं कर सकते वे केवल अपने रोग का उपचार ही कर सकते हैं।

अस्पताल में 22 चिकित्सकों के पद है स्वीकृत इस समय अस्पताल में है मात्र 13 चिकित्सक

इस अस्पताल में सरकार की तरफ से 22 पद चिकित्सकों के स्वीकृत है लेकिन इस समय अस्पताल में एक-एक चिकित्सक शिशु रोग विशेषज्ञ, वरिष्ठ फिजिशियन एमडी,बेहोशी चिकित्सक, आई चिकित्सक, नाक कान गला चिकित्सक, 2दंत रोग चिकित्सक, तीन चिकित्सा अधिकारी, एक यूनानी रोग चिकित्सक, दो स्त्री रोग विशेषज्ञ, एक श्वास रोग चिकित्सक कार्यरत है लेकिन अधिकतर मरीज फिजिशियन एमडी एवं शिशु रोग विशेषज्ञ के पास ही आ रहे हैं साथ ही मजबूरी में अगर चिकित्सकों के पद रिक्त है तो अन्य चिकित्सकों के पास भी उपचार करा रहे हैं इनमें से मंगलवार को तीन चिकित्सकों की ड्यूटी मॉर्निंग, इवनिंग व नाइट में थी एवं एक दो चिकित्सकों के साप्ताहिक अवकाश भी रहता है जबकि एक स्त्री रोग विशेषज्ञ लंबे समय से नेटरलीटी अवकाश पर है साथ ही अस्पताल के पीएमओ मंगलवार को सीकर मीटिंग में गए हुए थे जिस कारण इस समय अस्पताल में नौ प्रमुख चिकित्सकों के पड़े खाली चल रहे हैं , इस संबंध में लोगों ने यूडीएच मंत्री एवं स्थानीय विधायक झाबर सिंह खर्रा से मांग की है कि रिक्त पड़े चिकित्सकों के पद भरे जाएं ताकी मरीजों को समुचित उपचार मिल सके। इस संबंध में अस्पताल के पीएमओ डॉक्टर मनीष जांगिड़ का कहना है कि मंगलवार को सीकर मीटिंग होने के कारण वह मीटिंग में गई हुई थे। उनका कहना है कि उनको पीएमओ बनने के बाद उन्होंने रिक्त पड़े चिकित्सकों के पद भरवाने को लेकर चिकित्सा विभाग के निदेशक समेत मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को लिखित में अवगत कराया साथ ही जल्दी ही वे स्थानीय विधायक एवं यूडीएच मंत्री को इस संबंध में अवगत कराएंगे क्योंकि अजीतगढ़ अस्पताल की ओपीडी 1500 के करीब आ रही है जल्दी ही समस्या समाधान कराने के प्रयास किए जाएंगे साथ ही मंगलवार को मीटिंग के दौरान मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को एक दो चिकित्सा अधिकारी लगाने की मांग भी की है।

प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व सचिव शेखावात के जन्म दिन पर कार्यकर्ताओं ने की गौशाला में गो सवामणी

अस्पताल में मरीजों को वितरित किए फल फ्रूट

जयपुर टाइम्स

अजीतगढ़(निसं.) कस्बे समेत अजीतगढ़ ब्लॉक के सैकड़ो की संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मंगलवार को प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व सचिव बालेदू सिंह शेखावत के जन्मदिन के उपलक्ष में अजीतगढ़ की श्री कृष्ण गौशाला में गोवंश को हरा चारा, गुड, दलिया खिला कर गौ सवामणी की एवं गौशाला में श्रमदान कर साफ सफाई भी की इसके बाद कार्यकर्ता अजीतगढ़ के उप जिला अस्पताल में भर्ती मरीजों व अन्य मरीजों को फल फ्रूट वितरित किए। इस अवसर पर गौशाला समिति ने इन कार्यकर्ताओं का दुपट्टा पहनाकर सम्मान किया इस अवसर पर कांग्रेसी नेता गणेश बडसीवाल, जिला परिषद सदस्य दशरथ सिंह पारोड़ा, सीकर जिला कांग्रेस कमेटी के पूर्व सचिव लाखन पारीक, एन एएसयूआई के प्रदेश सचिव ओमप्रकाश भडाणा, कांग्रेसी नेता सीताराम गुर्जर,पार्षद ओमप्रकाश कुमावत, युवा कांग्रेसी नेता सुनील वर्मा, विनोद यादव, युवा अल्पसंख्यक नेता एजाज भाटी, विनोद लूनाका, सिद्धार्थ, कांग्रेसी नेता विक्रम सिंह बाकावत, ओम बडसीवाल, बाबू मिश्रा, हरि पूजारी समेत सैकड़ो की संख्या में कांग्रेस के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

श्री बालाजी सेवा संघ प्रीतमपुरी थोई के कार्यकताओं को सम्मानित किया गया

जयपुर टाइम्स

थोई(निसं.) श्री बालाजी सेवा संघ प्रीतमपुरी थोई का बालाजी के मंदिर में मीटिंग आयोजन हुआ जिसमें 6 सितंबर को एक दिवसीय हुए आयोजन को लेकर चर्चा की गई तथा आयोजन में सेवाएं देने वालों को सम्मानित किया गया। बालाजी मंदिर के पुजारी मुलचंद स्वामी ने बताया कि श्री बालाजी सेवा संघ प्रीतमपुरी थोई की कार्यकारिणी की मीटिंग का आयोजन हुआ जिसमें कार्यकारिणी के अध्यक्ष लोहरवाड़ा सरपंच प्रतिनिधि ग्यारसी लाल मीणा ने सभी कार्यकर्ताओं को सराहनीय कार्य करने के लिए बधाई दी। कोषाध्यक्ष एडवोकेट श्रवण यादव ने एक दिवसीय आयोजन में हुए कार्यक्रम की विस्तार से जानकारी दी। कार्यकारिणी के मंत्री एडवोकेट जसवंत मीणा ने कार्यकारिणी के सदस्यों से कहा कि बालाजी के मंदिर में पहाड़ी के उपर भव्य आयोजन पहली बार देखा है इसमें कार्यकताओं के साथ साथ सबसे ज्यादा शारीरिक योगदान सुरेश यादव, पिंटू यादव, दीनदयाल सेन, तेजपाल बल्ड़वाल, सोनू पाराशर,का रहा।मीटिंग में कार्यकारणी के रामवतार यादव ने कहा की इस एक दिवसीय धार्मिक आयोजन में महिलाओं ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस अवसर पर श्री बजरंग सेवा समिति प्रीतमपुरी थोई के सभी कार्यकर्ताओं को बालाजी के मंदिर प्रांगण में सम्मानित किया गया। इस दौरान के के पारीक,शिवराम यादव, श्रीकिशन लील, ख्याली राम यादव, जयराम यादव, बाबूलाल यादव, मोनु शर्मा, प्रकाश सामोता,नरेश स्वामी,हरि यादव, सहित सीमित के सभी सदस्य उपस्थित थे।

शहर चलो अभियानः 15 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक आयोजित होगा

अधिशाषी अधिकारी ने अभियान को लेकर अपनी टीम को किया अलर्ट

जयपुर टाइम्स

लोसल(निसं.)। राजस्थान की भजनलाल सरकार ने जनता की समस्याओं को लेकर जल्द शुरू होगा महत्वपूर्ण अभियान 15 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक अभियान का आयोजन किया जाएगा। जिसमे जनता की समस्याओं का होगा समाधान । इस अभियान को सफल बनाने को लेकर नगर पालिका कार्यालय के सभागार में सोमवार को नगर पालिका अधिशाषी अधिकारी ममता चौधरी, पालिका के कनिष्ठ अभियंता चंद्रशेखर जाटव की मौजूदगी में राजस्थान सरकार द्वारा चलाये जाने वाले शहर चलो अभियान व सेवा सप्ताह पखवाड़ा को लेकर एक साधारण बैठक हुई जिसमें शहर के जनप्रतिनिधियों सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहे । नगर पालिका अधिशाषी ममता चौधरी ने बताया कि स्वायत्त शासन विभाग व राजस्थान सरकार द्वारा 15 सितंबर से 2 अक्टूबर तक एक विशेष अभियान चला रही है जिसका नाम है शहर चलो व पखवाड़ा अभियान जिसमे पट्टे, जन्म मृत्यु, रौशनी,150 बिजली यूनिट फ्री ,शहर को स्वच्छ सौंदर्यकरण सहित अन्य समस्याओं का समाधान अभियान के माध्यम से किया जाएगा और जो भी नगर पालिका से सम्बंधित समस्या अपनी पालिका कार्यालय में दर्ज करवा सकते हैं जिसका समाधान जल्द किया जाएगा। बैठक में वार्ड नं 25 के पार्षदपति राजकुमार शर्मा अपने वार्ड साबू टँकी के पास में खाली पड़ी पालिका की भूमि पर एक छोटा पार्क बनाने व विवेकानंद चौक का सौंदर्य के करण करवाने की मांग रखी । बैठक में पालिका उपाध्यक्ष रामनिवास बाजिया, नेताप्रतिपक्ष बीआर हरिपुरा, जमील बहलिम, राजकुमार शर्मा, बिलाल सौलंकी, इमरान लीलगर, उस्मान रंगरेज, रामेश्वरलाल बाजिया, जुगलकिशोर कुमावत, राजेश सैनी, बंशीधर शर्मा , सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहे।

लक्ष्मणगढ़ में दिव्यांग उपकरण चिन्हीकरण शिविर आज

लक्ष्मणगढ़(निसं.)। लक्ष्मणगढ़ उपखंड प्रशासन, पंचायती राज, चिकित्सा एवं सामाजिक न्याय विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 10 सितम्बर को पंचायत समिति सभागार में विशेष योग्यजन अंग उपकरण चिन्हीकरण शिविर आयोजित किया जाएगा। शिविर का समय सुबह 10 बजे से सायं 5 बजे तक रहेगा । आयोजित शिविर में लक्ष्मणगढ़ ब्लॉक के दिव्यांगजनों को ट्राई साइकिल, व्हीलचेयर, बैसाखी, सुनने की मशीन आदि 20 हजार तक के उपकरणों के लिए आवेदन करने का अवसर मिलेगा। साथ ही पालनहार, पेंशन, स्वरोजगार ऋण जैसी जनकल्याणकारी योजनाओं में भी आवेदन किए जा सकेंगे।शिविर में भाग लेने वाले दिव्यांगजन यूडीआइडी कार्ड/डिजिटल मेडिकल सर्टिफिकेट, आधार कार्ड की प्रति और पासपोर्ट साइज फोटो साथ लाएं। वही मोटराइज्ड ट्राइसाइकिल के लिए अतिरिक्त दस्तावेजों में 50 प्रतिशत से अधिक निशक्तता का प्रमाण, 2.5 लाख से कम आय का प्रमाणपत्र, ड्राइविंग लाइसेंस, रोजगार/शिक्षा प्रमाण और आयु 18 वर्ष से अधिक होना जरूरी है।

एक समुदाय विशेष के धार्मिक स्थल के सामने किया जा रहा था निर्माण

दूसरे समुदाय के संगठनों ने किया विरोध, पुलिस पहुंची मौके पर निर्माण कार्य को कराया बंद

जो निर्माण कार्य किया जा चुका था उसको निर्माण करने वाले एक समुदाय के लोगों से हटवाया

जयपुर टाइम्स

अजीतगढ़(निसं.) कस्बे के चोमू सड़क मार्ग पर स्थित सीनियर सेकेंडरी स्कूल के पास एक समुदाय विशेष के धार्मिक स्थल के सामने कर रहे निर्माण कार्य को पूर्व में हुए दोनों समुदायों के समझौता के अनुसार बंद कर दिया गया एवं जो निर्माण कार्य किया जा चुका था उसको हटाया गया। जानकारी के अनुसार कस्बे के चोमू सड़क मार्ग पर स्थित सीनियर स्कूल के पास एक समुदाय विशेष के धार्मिक स्थल के सामने खाली पड़ी जमीन पर दोनों समुदायों के 2002 में समझौता हुआ था कि इस खाली पड़ी जमीन पर कच्चा पक्का निर्माण कार्य नहीं करेगा यह जगह सार्वजनिक चौक रहेगा लेकिन मंगलवार की दोपहर इस खाली पड़ी जमीन पर एक समुदाय विशेष के लोगों द्वारा निर्माण कार्य शुरू किया गया जिसकी सूचना दूसरे समुदाय विशेष के संगठनों को मिली तो देखते-देखते दूसरे समुदाय के संगठनों के पदाधिकारी व लोग वहां पहुंच गए एवं निर्माण कार्य का विरोध किया सूचना पर अजीतगढ़ थाने के सहायक थाना अधिकारी रघुवीर प्रसाद पुलिस जाप्ते के साथ पहुंचे एवं लोगों से इस संबंध में पूरी जानकारी ली जिस पर दूसरे समुदाय के लोगों ने बताया कि 2002 में दोनों समुदायों के समझौता हुआ था कि जो इस धार्मिक स्थल के सामने खाली जमीन पड़ी है उस पर कोई भी पक्का व कच्चा निर्माण नहीं करेगा लेकिन इसके बाद भी इस पर पक्का निर्माण कार्य किया जा रहा है जिसे हटाया जाए जिस कारण सहायक थाना अधिकारी ने जो समुदाय निर्माण कर रहा था उसको समझौता अनुसार कार्य करने की बात कही उसके बाद जो निर्माण कार्य कर लिया गया था उसको निर्माण करने वालों ने ही हटा दिया एवं भविष्य में नहीं करने की बात कही इस पर सहायक थाना अधिकारी ने दोनों समुदाय के लोगों से शांति बनाने की अपील की एवं कहा कि दोनों समुदाय आपसी भाईचारा से रहे उसके बाद दोनों समुदाय मान गए एवं किसी प्रकार की अशांति नहीं करने की बात कही। इस संबंध में सहायक थाना अधिकारी रघुवीर प्रसाद का कहना है की सूचना पर वे पहुंचे तो दूसरे समुदाय ने उनसे कहा कि जो इस धार्मिक स्थल के सामने जो खाली जमीन पड़ी है उस पर 2002 में दोनों समुदायों के समझौता हुआ था कि इस पर पक्का कच्चा निर्माण नहीं करेगा जिसकी लिखित की प्रति दिखाई गई तो जो निर्माण कार्य कर रहे थे उन्होंने निर्माण कार्य बंद कर दिया एवं जो निर्माण कार्य किया था उसको वहां से हटा दिया दोनों समुदायों को शांति रखने की अपील की गई है।